जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

जालोर

Rashtradoot

फोनः- 226422, 226423 फैक्सः- 02973-226424 वर्षः 19 संख्याः 114 प्रभात जालोर, मंगलवार 30 जुलाई, 2024 पो. रजि. /RJ/SRO/9640/2022-24 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

'हालांकि, भाजपा की सरकार है, हम जातिगत जनगणना का विधेयक पास करायेंगे?'

राहुल गांधी ने लोकसभा में यह उद्घोष करके चुनौती दी सरकार को

- राहुल का तर्क था कि जनसंख्या के एक बड़े हिस्से, 73 प्रतिशत को शिकायत है कि, दलित, बैकवर्ड, अल्पसंख्यक, आदिवासी, निर्धन से सरकार को कोई सहानुभूति नहीं है।
- अतः 73 प्रतिशत जनसंख्या यह जानना चाहती है कि उनकी सत्ता में कितनी भागीदारी है और वो कैसे लाभान्वितों की श्रेणी में आ सकते हैं और सिस्टम का हिस्सा बन सकते हैं।
- राहुल गांधी ने यह कटाक्ष भी किया कि वो बीस अफसर, जिन्होंने बजट तैयार किया है, उस उपेक्षित 73 प्रतिशत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व नहीं करते।
- इन अफसरों ने बजट के पहले हलवा बनाने की प्रक्रिया तो पूरी की, पर, वह हलवा वंचित जनसंख्या में नहीं बांटा।
- राहुल ने स्पीकर से यह भी कहा कि पत्रकारों को उस शीशे के पिंजरे से आज़ाद करें, क्योंकि वे अब सांसदों, मंत्रियों से लोकसभा के प्रवेश द्वार पर ''बाइट'' नहीं ले सकते, क्योंकि, वो केवल वही रिपोर्ट कर सकते है, जो पिंजरे से दिखता है।

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 जुलाई। राहुल गांधी उस समय पूरे जोश-खरोश में दिखाई दिये, जब वे लोकसभा में बजट पर बोलने खड़े हुये। उन्होंने भाजपा को आड़े हाथों लिया, बजट की आलोचना की तथा भाजपा को चुनौती देते हुये कहा कि देश में भले ही भाजपा की सरकार हो, लेकिन जातिगत सर्वे कराने वाला विधेयक तो पारित होगा।

भाजपा को बिल्कुल स्तब्ध करते हुये, राहुल ने दो टूक शब्दों में कह दिया कि सत्तारूढ़ दल को देश की करीब 73 प्रतिशत जनता की कोई चिन्ता नहीं है। इस 73 प्रतिशत हिस्से में दलित, पिछड़े, अल्पसंख्यक, आदिवासी, गरीब तथा गरीबों में पद-दलित वर्ग के लोग आते हैं।

उन्होंने कहा कि ये 73 प्रतिशत लोग यह जानना चाहते हैं कि देश की सत्ता में उनका क्या हिस्सा है तथा वे इस सत्ता-तन्त्र के लाभार्थी तथा हिस्सा कैसे हो सकते हैं। उन्होंने साफ-साफ कहा कि इस बजट को बनाने वाले 20 अफसरों में इन सभी जातियों और वर्गों का प्रतिनिधित्व नहीं था। उनके द्वारा बजट-पूर्व तैयार किये हलवे को इस आबादी के साथ साझा नहीं किया गया था। उन्होंने हलवा-सैरमनी के दौरान अफसरों के साथ वित्तमंत्री का फोटोग्राफ भी दिखाया।

लोकसभा अध्यक्ष ने इसकी अनुमति नहीं दी।

राहुल ने अंबानी तथा अडाणी परिवार के अपने प्रिय विषय को एक बार फिर हथियार बनाते हुये कहा कि जिस चक्रव्यूह में अभिमन्यु घेर लिया गया है, उसका नियन्त्रण छः लोग कर रहे हैं।

जब लोकसभा अध्यक्ष ने अडाणी तथा अम्बानी के नाम लेने पर आपत्ति जताई, तो उन्होंने कहा, ठीक है, अब वे

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'ऑफ ड्यूटी काम में करंट लगने पर क्लेम नहीं मिलेगा'

जयपुर, 29 जुलाई (का.सं.)। जिले की स्थाई लोक अदालत ने ऑफ ड्यूटी में अवैध तरीके से बिजली लाइन का काम करने के दौरान करंट लगने वाले संविदाकर्मी को राहत देने से इनकार करते हुए उसका 90.50 लाख रुपए का क्लेम खारिज कर दिया है। लोक अदालत ने फैसले में कहा कि परिवादी ने बिजली लाइन का काम बिना किसी आदेश व ड्यूटी के अपनी मर्जी से किया है और उसे बिजली लाइन का शट डाउन प्राप्त करने का कोई भी अधिकार नहीं था। उसे केवल जी.एस.एस. परिसर में ही काम करने के लिए संविदा पर रखा था, लेकिन उसने अपने कार्य क्षेत्र के बाहर जाकर अवैध तौर पर बिजली लाइन का काम किया और उस समय ही उसे करंट लगा। ऐसे में हादसा उसकी लापरवाही से हुआ

- जिले की स्थाई लोक अदालत ने बिजली विभाग के संविदा-कर्मी का 90.50 लाख रूपए का क्लेम खारिज कर दिया और कहा कि वह कार्य क्षेत्र से बाहर बिजली का काम कर रहा था, यह हादसा उसकी लापरवाही से हुआ है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को सुप्रीम कोर्ट से मिली बड़ी राहत

सुप्रीम कोर्ट ने हेमंत सोरेन को जमानत देने का झारखण्ड हाई कोर्ट के आदेश बरकरार रखा तथा ई.डी. की याचिका खारिज कर दी

- सुप्रीम कोर्ट ने ई.डी. पर तीखी टिप्पणी की, हम कुछ कहना नहीं चाहते अगर हमने आगे कुछ कहा तो आप मुश्किल में आ जाएंगे।
- ज्ञातव्य है कि जमीन के सौदे में मनी लॉण्डरिंग के आरोप में ई.डी. ने 31 जनवरी को हेमन्त सोरेन को गिरफ्तार किया था। सोरेन ने गिरफ्तारी से पूर्व मुख्यमंत्री पद छोड़ दिया तथा जमानत पर रिहा होने के बाद 4 जुलाई को वे पुनः झारखंड के मुख्यमंत्री बन गए हैं।

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 जुलाई। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को बड़ी राहत प्रदान की और झारखंड उच्च न्यायालय से सोरेन को जमीन के सौदे में मनीलॉण्ड्रिंग के मामले में जमानत देने के फैसले को बरकरार रखा। सुप्रीम कोर्ट ने जमानत के खिलाफ दायर एनफोर्समैंट डायरैक्टोरेट (ई.डी.) की याचिका खारिज कर दी।

जस्टिस बी.आर.गवई और जस्टिस के.वी.विश्वनाथन की बैंच ने एडिशनल सॉलिसिटर जनरल एस.वी. राजू जो की ई.डी. का प्रतिनिधित्व कर रहे थे,ये कहा कि हम इस आदेश में दखल देने के इच्छुक नहीं हैं।

उन्होंने कहा कि, हम यह स्पष्ट कर दें कि हाईकोर्ट के जज ने तर्कसंगत फैसला सुनाया तथा हाईकोर्ट की टिप्पणियों का ट्रायल या अन्य कार्यवाही पर असर नहीं होगा। ''बैंच की टिप्पणी से ई.डी. को भारी झटका लगा है।

राजू ने यह बताने का प्रयास किया कि ई.डी. द्वारा प्रिवैन्शन ऑफ मनी लॉडरिंग एक्ट के सैक्शन 50 के तहत रिकॉर्ड किए गए गवाहों के बयानों पर यकीन ही कर रहे हैं जो गलत है, तो सुप्रीम कोर्ट की बैंच ने तीखी टिप्पणी भी कि, ''हम और कुछ नहीं कहना चाहते। अगर हमने कुछ कहा तो आप मुश्किल में पड़ जाएंगे।''

सुप्रीम कोर्ट द्वारा ई.डी. की याचिका खारिज कर देने से झारखंड मुक्ति मोर्चा के कार्यकारी अध्यक्ष को भारी राहत मिली है जिन्होंने 31 जनवरी को ई.डी. द्वारा गिरफ्तारी से पूर्व मुख्यमंत्री के पद से इस्तीफा दे दिया था। इस रेस में जमानत मिलने के बाद जेल से बाहर आने पर 04 जुलाई को सोरेन ने पुनः मुख्यमंत्री पद की शपथ ली।

ई.डी. के वकील ने हाईकोर्ट में कहा था कि अगर सोरेन को जमानत दी गई तो वे ऐसा ही अपराध पुनः करेंगे उन्होंने ई.डी. के खिलाफ एस.सी./

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'देश में भय का माहौल है, पर, हम भाजपा के इस चक्रव्यूह को ध्वस्त करेंगे'

राहुल गांधी ने लोकसभा में यह भी कहा कि चक्रव्यूह को नष्ट करने के प्रयास में अभिमन्यु मारा गया था, हम अभिमन्यु नहीं, अर्जुन हैं, जो अपने प्रयास में पूर्णतया सफल होगा

- राहुल गांधी ने इस कथन को आगे ले जाते हुए यह भी कहा कि, मैंने चक्रव्यूह के बारे में काफी रिसर्च की है और यह पाया है कि उस महाभारत के चक्रव्यूह का नाम ''पद्म व्यूह'' भी है, जिसका मतलब, इसका स्वरूप कमल जैसा है।
- ''आज इक्कीसवीं सदी का चक्रव्यूह भी कमल के आकार का है, जिसे प्र.मंत्री ने अपनी छाती पर धारण किया हुआ है।''
- तथा, जिन छः कौरव महारथियों ने अभिमन्यु को घेर कर मार दिया था, वही आज भाजपा के महारथी नरेन्द्र मोदी, अमित शाह, मोहन भागवत, अजीत डोभाल, अंबानी व अडानी, भारत की 73 प्रतिशत दलित जनता के साथ करना चाहते हैं।

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 जुलाई। विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने लोकसभा में मोदी सरकार की नीतियों पर प्रहार करने के लिए महाभारत की लोकप्रिय कहानी का हवाला देकर कहा कि केन्द्र सरकार किसानों, विद्यार्थियों, मध्यम व लघु व्यवसाइयों, तथा मध्यम वर्ग की जनता की तकलीफों के लिए जिम्मेदार है।

गांधी ने हिंदी जो भारत के एक बड़े तबके की भाषा है, में बोलते हुए कहा, ''परंतु ये लोग अभिमन्यु की तरह नहीं है, ये तो अर्जुन हैं और ये लोग चक्रव्यूह को तोड़ देंगे''।

बजट सत्र के दौरान लोकसभा में बोलते हुए गांधी ने भारत में विभिन्न क्षेत्रों के कष्टों की तुलना प्राचीन भारत के ''चक्रव्यूह'' की संरचना से की।'' महाभारत के अर्जुन का पुत्र चक्रव्यूह के जाल में फंस जाता है और अंत में मारा जाता है।

गांधी ने कहा कि ''हजारों वर्ष पूर्व कुरुक्षेत्र के युद्ध में छः लोगों ने अभिमन्यु को ''चक्रव्यूह'' के जाल में फंसाया था और उसको जान से मार दिया था। राहुल ने कहा कि उन्होंने इस विषय पर शोध कर यह निष्कर्ष निकाला कि ''चक्रव्यूह'' को ''पद्म व्यूह'' नाम से भी जाना जाता है, जिसका मतलब है ''कमल स्वरुप।'' ''चक्रव्यूह'' कमल की आकृति में बनाया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'निर्देशों का पालन भर्ती एजेंसी और परीक्षार्थी का दायित्व'

जयपुर, 29 जुलाई (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने न्यायिक सेवा भर्ती-2024 से जुड़े मामले में कहा है कि प्रतियोगी परीक्षा के निर्देशों की पालना करना भर्ती एजेंसी व परीक्षार्थी दोनों का ही दायित्व है। भर्ती परीक्षा की ओ.एम.आर. शीट को जांचने का काम मशीन करती है और इसमें अधूरे छोड़े गए गोलों को मशीन नहीं पढ़ सकती है। इसके अलावा सुप्रीम कोर्ट भी यह व्यवस्था दे चुका कि हाईकोर्ट भर्ती

- हाई कोर्ट ने यह टिप्पणी करते हुए आर.जे.एस. परीक्षा के अभ्यर्थी पायल व अन्य की याचिका खारिज कर दी। इन अभ्यर्थियों ने ओ.एम. आर. शीट में अधूरे भरे गोलों को पूरा भरने की अनुमति मांगने के लिए याचिका दायर की थी।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कर्नाटक सरकार और वित्तमंत्री निर्मला सीतारमन के बीच जुबानी जंग और तेज हुई

कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने राज्य के साथ पक्षपात का और केन्द्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमन ने राज्य सरकार पर ''मिसमैनेजमैंट'' का आरोप लगाया

- कर्नाटक के मुख्यमंत्री ने कहा, वित्त मंत्री राज्यसभा में कर्नाटक का प्रतिनिधित्व करती हैं, वे जब भी आती हैं, झूठ बोलती हैं और बजट आवंटन पर भी झूठ बोल रही हैं। बजट से पहले जो वायदे किए गए थे, उनका कहीं भी उल्लेख नहीं है।
- इसके जवाब में केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतामरन ने राज्य सरकार पर भ्रष्टाचार व आर्थिक कुप्रबंधन का आरोप लगाया और कहा, यू.पी.ए. के दस साल के राज में कर्नाटक को मात्र 60,779 करोड़ रुपए मिले, जबकि एन.डी.ए. सरकार ने गत वर्ष तक राज्य को 2.36 लाख करोड़ दिए थे।

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 जुलाई। इन दिनों कर्नाटक सरकार और केन्द्रीय वित्त मंत्री के बीच जुबानी जंग छिड़ी हुई है। राज्य के मुख्यमंत्री ने केन्द्रीय मंत्री पर राज्य को किए गए बजट आवंटन पर झूठ बोलने का आरोप लगाया है।

केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन, जो कर्नाटक से राज्यसभा सदस्य हैं, ने कांग्रेस नीत कर्नाटक सरकार पर भारी भ्रष्टाचार और राज्य की अर्थव्यवस्था को बरबाद करने का आरोप लगाया है। उन्होंने राज्य सरकार की खराब नीतियों से अर्थव्यवस्था बदहाल हो गई है। सरकार एक तरफ तो खुले हाथ से मुफ्त सुविधाएं दे रही है दूसरी तरफ उनके लिए पैसा जुटाने हेतु आवश्यक वस्तुओं के दाम बढ़ा रही है। केन्द्रीय वित्त मंत्री पर करारा पलटवार करते हुए राज्य के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने कहा कि वे बजट आवंटन पर झूठ बोल रही हैं। केन्द्र सरकार वित्तीय मुद्दों पर लगातार प्रदेश सरकार के साथ अन्याय कर रही है। भाजपा, कर्नाटक को भ्रष्ट राज्य के रूप में प्रस्तुत करना चाहती है जबकि वास्तविकता एकदम अलग है। उन्होंने वित्तीय भेदभाव के खिलाफ विशाल विरोध प्रदर्शन के लिए कांग्रेस का आव्हान किया। उन्होंने सीतारमन से पूछा इस अन्याय का उनके पास क्या जवाब है। उन्होंने कहा कि निर्मला सीतारमन जब भी कर्नाटक आती हैं, तब झूठ बोलती हैं वो पहले भी झूठ बोली थीं और अभी भी बोल रही हैं।

सिद्धारमैया ने बजट से पूर्व केन्द्र सरकार द्वारा 5,300 करोड़ रूपए दिए जाने के वादे की याद दिलाई और कहा कि विभिन्न इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं के लिए फंड नहीं है जैसे अपर भद्रा प्रोजैक्ट।

मुख्यमंत्री ने पूछा, ''पंद्रहवे वित्त आयोग ने विशेष अनुदान के रूप में 5,495 करोड़ रूपए देने की सिफारिश की थी। क्या बजट में यह राशि है? कहा गया था कि बैंगलुरू में रिंग रोड के लिए 3,000 करोड़ रूपए दिए जाएंगे। जलाशयों के लिए 3,000 करोड़ रूपए देने की बात थी, क्या यह सब है बजट में।''

आंध्र प्रदेश और बिहार पर की गई विशेष मेहरबानियों का हवाला देते हुए सिद्धारमैया ने हैरानी जताई की कर्नाटक पर इतनी कृपा क्यों नहीं की गई। मुख्यमंत्री ने पत्रकारों से कहा कि क्या आप जानते हैं कि पंद्रहवे वित्त आयोग में सबसे ज्यादा अन्याय कर्नाटक के साथ हुआ जबकि खुद वित्त मंत्री राज्यसभा में कर्नाटक का प्रतिनिधित्व

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कर चोरी के आरोपी को मिली जमानत रद्द

जयपुर, 29 जुलाई (का.सं.)। राजस्थान हाईकोर्ट ने कर चोरी के मामले में आरोपी गौतम गर्ग को मिली जमानत को रद्द कर दिया है। इसके साथ ही अदालत ने आरोपी को कहा है कि वह तीस दिन में निचली अदालत में सरेंडर करे। जस्टिस प्रवीर भटनागर की एकलपीठ ने ये आदेश केन्द्र सरकार की ओर से दायर जमानत रद्द करने के लिए पेश की गई याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

- राजस्थान हाई कोर्ट ने कर चोरी के आरोपी गौतम गर्ग की जमानत रद्द करने के साथ उसे तीस दिन में सरैंडर करने के आदेश दिए हैं।

याचिका में जीएसटी के वरिष्ठ अधिवक्ता किंशुक जैन ने अदालत को

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मुकेश अंबानी विश्व के सबसे बड़े आम निर्यातक बने

पैट्रोलियम, दूर संचार और खुदरा क्षेत्र के अलावा कृषि क्षेत्र में भी रिलायंस का भारी दखल

- रिलायंस के कृषि क्षेत्र में उतरने की शुरुआत हुई 1997 से, जब प्रदूषण के कारण जाम नगर रिफाइनरी के लिए चुनौती खड़ी हो गई थी।
- प्रदूषण से निजात पाने के लिए रिलायंस इण्डस्ट्रीज़ के रिफाइनरी के आस-पास की जमीन को आम के विशाल बाग में बदल दिया गया, जिसका नाम धीरूभाई के नाम पर रखा गया।
- इस बाग में आम की 200 किस्मों के 1.30 लाख वृक्ष हैं, जिनमें भारत की लोकप्रिय किस्मों के अलावा विदेशी किस्में भी शामिल हैं।

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 जुलाई। मुकेश अंबानी, जो पेट्रोलियम, टेलीकम्यूनिकेशान तथा रिटेल के क्षेत्र में बहुत बड़े व्यवसायी के रूप में प्रसिद्ध हैं, अब अप्रत्याशित रूप से कृषि क्षेत्र की ओर मुड़ गये हैं। रिलायंस इन्डस्ट्रीज लिमिटेड, उनके प्रबंधक-कौशल के फलस्वरूप विश्व में आमों के सबसे बड़े निर्यातक का रूप ले चुकी है। उद्योग क्षेत्र, जो उनके व्यवसाय का मूल था, से उल्लेखनीय रूप से हटते हुये, वे कृषि क्षेत्र में विशिष्टता अर्जित करने की दिशा में बढ़ चुके हैं।

1997 में गुजरात की अपनी जामनगर रिफाइनरी में उल्लेखनीय प्रदूषण-परिवर्तनों का सामना करते हुये, रिलायंस इन्डस्ट्रीज ने एक अभिनव प्रतिक्रिया दी थी। पर्यावरण संबंधी प्रभावों को संबोधितत करते हुये तथा पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड के नियमों-विनियमों का पालन करते हुये, कंपनी ने एक सर्वथा नया प्रोजैक्ट हाथ में लिया था, जिसके तहत रिफायनरी के आस-पास की बंजर जमीन को आमों के एक अति विशाल बगीचे का रूप देना था। इस अभिनव पहल का उद्देश्य न केवल प्रदूषण से लड़ना था, बल्कि उस औद्योगिक कॉम्पलेक्स के चारों तरफ एक दीर्घकालीन एवं स्थायी हरियाली-बहुल क्षेत्र विकसित करना था।

600 एकड़ में फैले हुये इस विशाल बाग, जिसका नाम रिलांयस के संस्थापक धीरुभाई अंबानी के नाम पर रखा गया है, में 200 से अधिक किस्मों के 1,30,000 से ज्यादा आम के वृक्ष हैं। मुगल बादशाह अकबर द्वारा स्थापित ऐतिहासिक ''लाखीबाग'' बगीचे के प्रति सम्मान है तथा भारत के सम्पन्न अतीत तथा आधुनिक पर्यावरणीय जिम्मेदारी के बीच एक रिश्ता दर्शाता प्रतीत होता है।

इस क्षेत्र की अत्यधिक खारे पानी तथा शुष्क परिस्थितियों में फलने-फूलने के लिये, रिलायंस ने कटिंग ऐज टेक्नॉलॉजी काम में ली गई है, जिसमें मीठे पानी के लिये डीसेलिनेशन प्लांट भी शामिल है। इसके अलावा, उन्नत कृषि तकनीकें, जैसे वॉटर हार्वेस्टिंग, ड्रिप सिंचाई तथा पर्याप्त उर्वरक आदि काम में लिये गये।

बगीचे में आमों की विविध एवं नाना प्रकार की किस्में हैं। पुरानी एवं प्रसिद्ध भारतीय किस्मों जैसे केसर, अलफाँसो तथा नीलम से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय किस्मों, जैसे फ्लोरिडा के टॉमी अटकिन्स तथा इज़राइल के लिली तक। प्रतिवर्ष लगभग 600 टन बहुत ही बढ़िया आमों का उत्पादन करते हुये, रिलायंस एशिया की अग्रणी आम-निर्यातक कम्पनी के रूप में उभरी है तथा देश-विदेश के बाजारों की माँग पूरी कर रही है।

यहाँ यह बताना उल्लेखनीय होगा कि 'फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गनाइज़ेशन (एफ.ए.ओ.) के अनुसार, आमों की माँग हर वर्ष 3.3 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है। एफ.ए.ओ. के एक अनुमान के अनुसार, 2030 तक दुनिया में आम का कुल उत्पादन बढ़कर 840 लाख मीट्रिक टन तक पहुँच जायेगा। इसमें से आधा उत्पादन भारत में होगा। थाइलैंड तथा इन्डोनेशिया भी प्रमुख दक्षिण एशियाई आम निर्यातक के रूप प्रतिष्ठित हो चुके हैं। अन्य किसी देश की तुलना में, भारत में आमों की खपत ज्यादा होगी - भारत में प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष आम का उपभोग 28.4 किग्रा. होगा।

आम के उत्पादन के अतिरिक्त, रिलायंस कम्पनी स्थाई एवं सामुदायिक विकास के उन्नयन में भी सक्रिय योगदान देती है। कम्पनी प्रतिवर्ष आम की 1,00,000 पौध स्थानीय किसानों को वितरित करती है, कृषि के नये-नये तरीकों एवं पद्धतियों पर प्रशिक्षण सत्र आयोजित करती हैं तथा कृषक समुदाय में पर्यावरणीय-प्रबंधन को प्रोत्साहित करती है। कम्पनी की यह पहल कृषि के उन्नत एवं नये-नये तरीकों की रिलायंस की व्यापक भूमिका को रेखांकित करती है।

आम की खेती क्षेत्र में मुकेश अंबानी का प्रवेश यह सविस्तार बताता है कि बड़े-बड़े कॉर्पोरेट आर्थिक ग्रोथ को पोषित करते हुये पर्यावरण सम्बन्धी चुनौतियों के समाधान के मामले में अपने संसाधनों का उपयोग किस प्रकार कर सकते हैं।

धीरु भाई अंबानी लाखीबाग भावना को मूर्त रूप देती है, बल्कि कृषि-निर्यात के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व तथा स्थाई महत्व के प्रति उसकी भावना की एक बार फिर से पुष्टि करती है।

बारामूला में विस्फोट, चार लोगों की मौत

श्रीनगर, 29 जुलाई। जम्मू कश्मीर के बारामूला जिले में विस्फोट की घटना सामने आई है। आधिकारिक सूत्रों का कहना है कि बारामूला के सोपोर इलाके में अचानक हुए विस्फोट में चार लोगों की जान चली गई। इस घटना के बाद इलाके में हड़कंप मच गया है। सेना और पुलिस की टीम मौके पर पहुंच गई है और इलाके की छानबीन की जा रही है। अभी धमाके के पीछे की वजह सामने नहीं आई है।

- इस घटना के पीछे आतंकियों का हाथ होने के संदेह के कारण मौका स्थल पर सेना और पुलिस ने मोर्चा संभाल लिया है। विस्फोट के कारणों का पता नहीं चल पाया है।

जानकारी के अनुसार, विस्फोट

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

धीरज सारे आनंदों और शक्तियों का मूल है। –फ्रैंकलिन

प्रसारण सेवा विनियम विधेयक- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर नियंत्रण की तैयारी

लोकसभा चुनाव 2014 एवं विशेष कर 2019 में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी ने सोशल मीडिया का बहुत प्रभावित प्रयोग किया। लगभग प्रतिदिन मतदाताओं को भाजपा की विचारधारा के समर्थन में सोशल मीडिया में एक प्रकार से वैचारिक बमबारी देखने को मिली। इसके कारण, मतदाताओं की सोच पूरी तरह प्रभावित हुई। सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों जैसे व्हाट्सएप, यूट्यूब, इंस्टाग्राम आदि पर भाजपा ने न केवल अपने नेताओं के पक्ष में प्रभावी संदेश मतदाताओं तक पहुंचाया अपितु उसने स्वतंत्रता संठाम के अनेक सेनानियों जैसे महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू से संबंधित कई व्यक्तिगत आक्षेप वाले वीडियो भी जारी किए और उन्हें बड़ी संख्या में लोगों तक पहुंचाया।

इसी का परिणाम था कि 2019 में प्रधानमंत्री मोदी को अद्वितीय सफलता प्राप्त हुई एवं भारी बहुमत वाली सरकार बनी। 2019 के बाद भी सोशल मीडिया के प्रभावी उपयोग के कारण प्रधानमंत्री मोदी की छवि एक अपराजेय नेता के रूप में बना दी गई। न केवल यह, उन्हें विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय नेताओं में से एक घोषित कर दिया ।

2019 के पश्चात, विशेष कर कोरोना के दौरान, सरकार की असफलताओं के बहुत सारे उदाहरण कुछ प्रबुद्ध पत्रकारों एवं युटयुबर्स द्वारा जनता के सामने लाए गए।कई निष्पक्ष और स्वतंत्र पत्रकारों जैसे अभिसार शर्मा, अजीत अंजुम, रवीश कुमार ने प्रमुख राष्ट्रीय समाचार चैनलों को छोड़कर अपने यूट्यूब चैनल बना लिए। इनके अतिरिक्त ध्रुव राठी जैसे व्यक्ति जो पहले से ही अपने शैक्षणिक एवं यात्रा वीडियो के कारण बहुत लोकप्रिय थे उन्होंने भी समसामयिक विषयों पर अपने वीडियो बनाकर पोस्ट करने शुरू कर दिए। इन्होंने कई ऐसे तथ्य की जनता के सामने रखने प्रारंभ किए जिससे सरकार की छवि पर विपरीत प्रभाव पड़ा। इन लोगों ने शोध करके प्रधानमंत्री मोदी के 2014 और 2019 के चुनाव प्रचार के दौरान दिए गए भाषणों की क्लिपिंग एकत्र की और उनकी तुलना वास्तविक धरातल की स्थिति से की और यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि सरकार के अधिकांश वादे पूरे नहीं हुए हैं। कई कमियां जो पहले सामने नहीं आ पाती थीं, वे अब सामने आने लगीं ।

विपक्षी दलों, विशेषकर कांग्रेस ने अपने सोशल मीडिया प्रकोष्ठ का प्रभावी प्रयोग करना प्रारंभ कर दिया। विपक्षी दलों द्वारा सोशल मीडिया के प्रभावी प्रयोग का ही परिणाम था कि लोकसभा चुनाव 2024 के परिणाम अलग तरह के रहे। मोदी जहां अति आत्मविश्वास में लोकसभा में '400 पार' का नारा दे रहे थे, वहीं जब 2024 के परिणाम आए तो भारतीय जनता पार्टी को 400 तो दूर की बात है अपने स्वयं के स्तर पर बहुमत के आंकड़े अर्थात 272 से भी 30 सीटें कब मिलीं ।

सरकार की आलोचना के लिए सोशल मीडिया का उपयोग इतना अधिक होने लगा कि नवंबर 2023 में सरकार ने केवल एवं टीवी नेटवर्क कानून 1995 के स्थान पर प्रसारण सेवाएं विनियमन 2023 का प्रारूप जनता के सामने प्रस्तुत किया। यह बात लोकसभा चुनाव से ठीक पहले की थी। अत: इसे विधेयक के रूप में लोकसभा में प्रस्तुत नहीं किया गया एवं अब चुनाव पूरा होने के पश्चात अप्रैल 2024 में इसी विधेयक का संशोधित प्रारूप तैयार किया गया है। इसे कैबिनेट के समक्ष शीघ्र रखा जाकर पारित कराया जाएगा एवं उसके पश्चात इसे संसद में अनुमोदन हेतु प्रस्तुत किया जाएगा।

यदि संसद में भी यह पारित हो गया तो फिर यह प्रसार सेवा विनियम कानून का रूप ले लेगा और पूरे देश में लागू हो जाएगा। इस कानून की पृष्ठभूमि ही यह है कि सरकार ने यह अनुभव किया कि सरकार की कड़ी आलोचना का मुख्य माध्यम अब राष्ट्रीय चैनल नहीं रहकर यूट्यूब, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप आदि बन गए हैं, अत: इन पर नकेल कसे बिना काम चलने वाला नहीं है।

यह दिलचस्प है के प्रसारण सेवाएं विनियमन विधेयक का प्रारूप अभी तक सार्वजनिक नहीं किया गया है। कहा जा रहा है कि इसका प्रारूप कुछ ओटीपी प्लेटफार्म के मालिकों, राष्ट्रीय चैनलों के मालिकों एवं अन्य संबंधित व्यक्तियों के साथ साझा किया गया एवं उसी के आधार पर नया संशोधित प्रारूप बनाया गया है। अधिकांश यूट्यूब कंटेंट क्रिएटर का कहना है कि उनसे किसी प्रकार की कोई राय नहीं ली गई। जो व्यक्ति, इस प्रस्तावित कानून से सबसे अधिक प्रभावित होंगे, उनकी कोई भूमिका इस कानून के बनाने में नहीं होगी। यह वैसी ही स्थिति होगी जैसी किसानों के संबंध में तीन कानून बनाते समय हुई थी। उस समय भी किसानों से राय नहीं ली गई थी। संसद में भी उस पर बहस नहीं हो पाई थी और अपने भारी बहुमत के आधार पर शोर शराबे में पारित करा लिया गया था । अंतत:, किसानों के कड़े विरोध और 700 किसानों की आंदोलन में हुई मृत्यु के पश्चात, सरकार को वे तीनों कानून वापस लेने पड़े। जिस प्रकार से प्रसारण सेवाओं को नियंत्रित करने का यह कानून बनाया जा रहा है उससे आशंका यही उत्पन्न होती है कि कहीं इनका भी वही हश्र नहीं हो जो किसानों के कानून का हुआ था।

सरकार की आलोचना के लिए सोशल मीडिया का उपयोग इतना अधिक होने लगा कि नवंबर 2023 में सरकार ने केवल एवं टीवी नेटवर्क कानून 1995 के स्थान पर प्रसारण सेवाएं विनियमन 2023 का प्रारूप जनता के सामने प्रस्तुत किया। यह बात लोकसभा चुनाव से ठीक पहले की थी।

आई अब हम इस कानून के प्रमुख प्रावधान एवं उसके प्रभाव का उल्लेखकर लें ।

यह कानून सभी ब्रॉडकास्टर्स पर लागू होगा। ब्रॉडकास्टर की परिभाषा बड़ी विस्तृत एवं वृहद रखी गई है । जहां एक और ओटीटी प्लेटफॉर्म एवं यूट्यूब चैनल इसमें सम्मिलित होंगे ही, वहीं कोई नागरिक भी यदि किसी समाचार या किसी रिपोर्ट पर अपने टिप्पणी दे देता है और उसका प्रसार एक निश्चित संख्या से अधिक हो जाता है, तो वह भी ब्रॉडकास्टर की श्रेणी में लाया जा सकता है। एक बार कोई भी व्यक्ति या संस्था ब्रॉडकास्टर की श्रेणी में आ गई तो उस पर इस कानून के सभी प्रावधान लागू हो जाएंगे। उसे एक समिति बनानी होगी जो प्रसारित होने वाले विषय वस्तु का मूल्यांकन करेगी, एक ग्रीवेंस रिड्रेसल अधिकारी बनाना होगा जो विषय वस्तु से संबंधित प्राप्त शिकायत का निराकरण करेगी । कल्पना कीजिए, कोई साधारण व्यक्ति यदि कथित सरकार विरोधी टिप्पणी कर देता है तो वह भी इस कानून के अंतर्गत कार्रवाई का भागीदार हो जाएगा। इस कानून के अंतर्गत, यदि सरकार द्वारा कोई भी विषय वस्तु किसी की भावना को ठेस पहुंचाने वाली अथवा देश हित के विरुद्ध मानी गई तो उसे हटाने का निर्णय सरकार ले सकेगी। इस अधिनियम की पालना न करने पर संबंधित व्यक्ति के विरुद्ध कार्रवाई की जाकर उसे 2 साल की सजा और उस पर 10 लाख तक का जुर्माना लगाया जा सकेगा । न्यायालय के आदेश के बिना, सरकार को यदि लगता है की कोई विषय वस्तु आपत्तिजनक है तो उसे हटाने का आदेश दिया जा सकेगा एवं उसे संदेश को रोका भी जा सकेगा। विषय वस्तु से संबंधित किसी भी शिकायत के बारे में अंतिम निर्णय ब्रॉडकास्ट अपील अधिकरण के द्वारा लिया जाएगा । इस ब्रॉडकास्ट अपील अधिकरण का गठन भी सरकार ही करेगी, जिसमें स्वाभाविक है सरकार की मनपसंद के लोग होंगे ।

कुल मिलाकर इस कानून के आने के बाद आशंका यही है कि हम एक प्रकार के 'डिजिटल तानाशाही' के युग में प्रवेश कर जाएंगे जहां न तो नागरिकों की कोई निजता बचेगी एवं न ही कोई यूट्यूब पर या पोस्ट द्वारा सरकार की नीतियों की आलोचना कर पाएगा। सरकार यदि चाहे तो ऐसे ब्रॉडकास्टर के द्वारा उपयोग में लिए जा रहे सभी डिजिटल उपकरण जैसे मोबाइल फोन, लैपटॉप, कंप्यूटर, पेन ड्राइव, हार्ड डिस्क आदि जप्त कर सकेगी। इसके लिए किसी भी प्रकार के न्यायिक आदेश की आवश्यकता नहीं होगी । कल्पना कीजिए, एक साधारण नागरिक द्वारा यूट्यूब पर डाले गए किसी वीडियो से नाराज होकर यदि उसके उपकरण जप्त कर लिए गए तो उसके लिए यह वित्तीय हानि इतनी अधिक होगी कि वह इस काम को करने की दोबारा सोचेगा भी नहीं। कोई वीडियो राजनीतिक प्रवृत्ति का नहीं भी है किंतु यदि उसमें परोक्ष रूप से भी महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार जैसे शब्दों का प्रयोग कर किया गया तो उसे सरकार – विरोधी मानकर, उसे भी इस कानून के अंतर्गत दोषी माना जा सकेगा।

संभवतया, सरकार इस कानून के अंतर्गत किसी के विरुद्ध औपचारिक कार्रवाई न भी करे, किंतु सरकार का उद्देश्य पूरा हो जाएगा यदि डर के मारे कोई भी व्यक्ति या संस्था सरकार के विरुद्ध किसी प्रकार का कोई भी विषय वस्तु अपने माध्यम से प्रचारित प्रसारित नहीं करेगा। कानून में यह भी स्पष्ट नहीं है कि इसमें शिकायत कैसे होगी और इस कानून के अंतर्गत प्रावधानों की पालना किस प्रकार कराई जाएगी? किसी भी परिभाषा को अस्पष्ट रखने का उद्देश्य ही यह होता है कि सरकारी अधिकारी मनमाने तौर पर उसकी परिभाषा बना सकें और जिसके विरुद्ध चाहे, उसके विरुद्ध कानून कारवाई कर सकें ।

हालांकि अभी तक इस प्रस्तावित कानून का कोई प्रारूप सामने नहीं आया है किंतु जो बातें समाचार पत्रों और अन्य माध्यमों से सामने आई है उसके आधार पर यह आलेख लिखा गया है। सरकार को यह चाहिए कि तत्काल विधेयक के प्रारूप को सार्वजनिक करे एवं नागरिकों से इस पर अपने सुझाव आमंत्रित करे। इसके बाद, इसे संसद में रखकर गहन चर्चा के बाद सर्वसम्मति से पारित करने की कार्यवाही करे। यदि सरकार ने इसे बिना किसी चर्चा के, केवल अपनी आलोचना से बचने की आड़ में, बहुमत के आधार पर संसद से पारित करा भी लिया तो न्यायालय में इसका टिकना कठिन है, किंतु कुछ समय भी यदि यह कानून अस्तित्व में रहा, तो संभव है, सरकार कई प्रतिष्ठित, निष्पक्ष, स्वतंत्र और साहसी पत्रकारों को जेल में डाल देगी, ऐसी आशंका करना गलत नहीं होगा।

फिलहाल तो हम यही प्रार्थना कर सकते हैं कि सरकार को सद्बुद्धि आए और इस प्रकार के किसी भी दमनकारी कानून से बचे ताकि संविधान प्रदत्त नागरिकों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर किसी प्रकार की आंच ना आए। आगे आगे देखिए, होता है क्या?

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

जैविक पशुपालन शोध और उद्यमिता विकास पर जोर दें विश्वविद्यालय : राज्यपाल मिश्र

बीकानेर के पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह आयोजित

बीकानेर, (निसं)। राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहा कि पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय द्वारा जैविक पशुपालन, शोध और अनुसंधान के साथ प्रसंस्करण व उद्यमिता में कौशल विकास से जुड़े कार्य प्रारम्भ किए जाएं। राज्यपाल मिश्र सोमवार को बीकानेर के पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित विश्वविद्यालय के सातवें दीक्षांत समारोह को संबोधित कर रहे थे।

बीकानेर के वेटनरी विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में राज्यपाल कलराज मिश्र ने स्वर्ण पदक व उपाधियां प्रदान की।

- समारोह में 665 उपाधियों और 29 पदकों से विद्यार्थियों को अलंकृत किया

राज्यपाल ने कहा कि बढ़ती जनसंख्या घटती कृषि जोत पानी तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों की कमी मनुष्य के लिए एक बड़ी चुनौती है। ऐसे में पशुधन और पशु उत्पाद ही पोषण सुरक्षा की दृष्टि से वरदान साबित हो सकते हैं। इसके लिए खाद्य और दुग्ध उद्योग में छोटे और मध्यम उद्यमों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। राज्यपाल मिश्र ने कहा कि राजुवास तीन संघटक पशु चिकित्सा विज्ञान महाविद्यालयों एक डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय आठ सम्बद्ध महाविद्यालयों तथा 101 डिप्लोमा संस्थानों के माध्यम से प्रदेश में पशु चिकित्सा शिक्षा अनुसंधान एवं प्रसार के क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रहा है। ऐसे में विश्वविद्यालय प्रसार शिक्षण के तहत पशुधन संरक्षण प्रसंस्करण की आधुनिक तकनीक के बारे में पशुपालकों से जानकारियां साझा करें। मिश्र ने कहा कि कृषि एवं पशुपालन की हमारी संस्कृति रही है। खेती-बाड़ी आय अर्जन के साथ पोषण सुरक्षा का भी माध्यम है। मिश्र ने आव्हान किया कि नवीन प्रौद्योगिकी के माध्यम से पशु सम्पदा रोग निदान और उपचार के साथ-साथ उनकी उत्पादक क्षमता बढ़ाने के प्रयास करने होंगे। राज्यपाल मिश्र ने पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को दीक्षांत समारोह की बधाई दी।

राज्यपाल मिश्र ने एक पेड़ मां के नाम अभियान के अन्तर्गत एक विद्यार्थी-एक पेड़ की संकल्पना में हर विद्यार्थी को भागीदारी का आव्हान किया। कुलपति प्रो. सतीश गर्ग ने स्वागत उद्बोधन दिया और विश्वविद्यालय का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र और शेर ए कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नज़ीर अहमद गनई ने दीक्षांत भाषण दिया।

समारोह में बीकानेर पूर्व विधानसभा विधायक सिद्धी कुमारी, स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अरूण कुमार, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मनोज दीक्षित, राज्यपाल के विशेषाधिकारी गोविंद जायसवाल, जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि, पुलिस अधीक्षक तेजस्विनी गौतम आदि मौजूद रहे। कुलसचिव बिन्दु खत्री ने आभार जताया। राज्यपाल ने समारोह के दौरान 538 छात्र-छात्राओं को स्नातक 106 को स्नातकोत्तर एवं 21 को विद्यावाचस्पति की उपाधियां प्रदान की। इस दौरान राज्यपाल ने विश्वविद्यालय के विभिन्न प्रकाशनों का विमोचन किया।

संस्कृति संध्या मल्हार-2024 में नृत्य नाटिकाओं द्वारा ऋतुओं को जीवंत किया

भीलवाड़ा, (निसं)। स्थानीय रमा कत्थक संस्थान एवं एल.एन.जे. समूह के सहयोग से वर्षा एवं सुख स्मृद्धि की कामना के लिए शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय नृत्यों की संस्कृति संध्या मल्हार-2024 का आयोजन स्थानीय महाराणा प्रताप सभागार (टाउन हॉल) में किया गया।

जानकारी देते हुए संस्थान के अध्यक्ष कैलाश पालिया ने बताया कि चार से छह वर्ष आयु के बच्चों के नीनाद समूह ने "राधे कृष्ण" की ज्योति अलौकिक एवं "ऊंची ऊंची ढोरियों से बांधू मैं गगर को" कृष्ण वन्दना प्रस्तुत कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। नुपूर समूह ने गरबा नृत्य "कान्हा रे थोड़ा सा प्यार दे" स्वरा समूह ने "मेघ मल्हार" पर आधारित "गरज-गरज आज मेघ घनन घनन छायोरी", की प्रस्तुति से सम्पूर्ण वातावरण को सावन महिने के एहसास से भर दिया। श्रुति समूह ने "आ जा रे मोरे रसिया ये मौसम मिलने का है" रागिनि समूह ने "बूंदन-बूंदन बरसे मेघा" एवं सकल बन फूल रही सरसों की प्रस्तुति से कार्यक्रम की ऊंचाईयां प्रस्तुत की। महाराज बिन्दादीन की प्राचीन अष्ठपदी निरतन ढंग से किरत किरत समूह ने भगवान नटवर के रूपों के साथ कत्थक के तकनीकी पक्ष तोड़े, टुकड़े, गत, फरद आदि की सुन्दर व्याख्या की। मनसवी पचिसियां एवं हर्षिता पुरोहित के युगल नृत्य "इठलाती बलखाती चमकत है, दामिनीयां" जो कि स्वर्गीय पंडित बिरजू महाराज के मन भीतर के अन्तर्गत था की मन मोहक प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया।

महाराणा प्रताप सभागार (टाउन हॉल) में संस्कृति संध्या मल्हार-2024 में कलाकारों ने कार्यक्रम पेश किये।

कार्यक्रम में किंकणी समूह के द्वारा रामायण पर आधारित नृत्य नाटिका का प्रस्तुतिकरण बहुत ही सुन्दर रूप से किया गया। पल्लवी समूह पिया बावरी पर सुन्दर प्रस्तुतिकरण दिया। बाल कलाकार ओनिक जैन ने भी वर्षा ऋतु पर गायन की सुन्दर प्रस्तुति दी। अंकिता राणावत एवं कविता ओझा को कत्थक के क्षेत्र में एवं औनिक जैन को गायन में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु सम्मानित किया गया। खचाखच भरे टाउनहॉल में दर्शकों ने भरपूर आनंद लिया। संस्थान के सचिव रमा पचिसिया के अनुसार कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पद्मश्री जानकीलाल भांड, रजनीश वर्मा, आरसीएम समूह के टीसी छाबड़ा, ओस्तवाल समूह की नीतू ओस्तवाल, समाजसेवी पूजा गलुन्दिया, संगीत गुरू विद्याशंकर किन्नरीया ने कत्थक नृत्य के प्रति बच्चों का इतना सम्पर्ण देखकर संस्थान के उद्देश्यों एवं गुरूजनों को शुभकामनाएं दी। कत्थक गुरू रमा पचिसिया के मार्ग निर्देशन में मनसवी, हर्षिता, प्रेरणा, स्तुति, अदिति, युक्ति ने नृत्य निर्देशन किया। कार्यक्रम में शहर के वरिष्ठ कलाकार संगीतज्ञ एवं 500 से ज्यादा कला प्रेमियों की उपस्थिति रही।

सावन के दूसरे सोमवार को शिव मंदिरों में उमड़ा आस्था का सैलाब

मंदिरों में सहस्त्रधारा, रुद्राभिषेक व जलाभिषेक के कार्यक्रम हुये

अजमेर, (कासं)। सनातन संस्कृति में श्रावण मास में भगवान भोले नाथ की अराधना के रूप में मनाया जाता है। सावन माह के दूसरे सोमवार को शहर सहित जिलेभर के मंदिरों में आस्था का सैलाब उमड़ रहा है। कांवड़िए पुष्कर सरोवर से जल भरकर अपने गंतव्य मंदिरों तक जा रहे हैं तो वहीं मंदिरों में सहस्त्रधारा, रुद्राभिषेक व जलाभिषेक सहित धार्मिक आयोजन हो रहे हैं और बम-बम भोले के जयघोष गुंजायमान हो गए। श्रद्धालु अपने आस्था के अनुरूप भगवान भालेनाथ के गर्भग्रह में शिवलिंग पर जल, बिल्वपत्र, घी, शहद आदि से अभिषेक कर रहे हैं।

वैशाली नगर सागर विहार कॉलोनी स्थित बड़कालेश्वर मंदिर में सहस्त्रधारा का आयोजन हुआ। संयोजक डॉ.बीना चौधरी ने बताया कि पांच पंडित द्वारा रुद्रपाठ किया गया। सात जोड़ों द्वारा विधिवत पूजा अर्चना कराई गई। शिव परिवार सहित श्रीकृष्ण राधा, राम दरबार, दुर्गा मां की प्रतिमाओं का नयनाभिराम श्रृंगार किया। मंदिर की भी विशेष सजावट गई। आरती के पश्चात श्रद्धालुओं को प्रसाद का वितरण किया गया। अखिल भारतीय प्रजापति युवा संगठन की ओर से कुम्हार मोहल्ला आर्य नगर स्थित कुम्हारेश्वर महादेव मंदिर में विधि-विधान से शिव परिवार की प्राण प्रतिष्ठा हुई। शिव शक्ति नगर से शोभायात्रा निकाली गई। पंडित पीयूष दाधीच ने विधि-विधान से भगवान शिव परिवार की प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा संपन्न कराई। इस अवसर पर हवन यज्ञ हुआ। वहीं शहर सहित ग्रामीण क्षेत्रों से बड़ी संख्या में कांवड़िए पुष्कर सरोवर से जल लेने पहुंच रहे हैं। श्रद्धालु पुष्कर सहित आसपास के पवित्र सरोवर से जल लेकर अपने-अपने क्षेत्रों में स्थित मंदिरों पर पहुंच रहे हैं, इसके साथ रुद्रीपाठ के बीच सहस्त्रधाराएं हो रही है। ब्रह्माकुमारीज द्वारा शिव दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी:- प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय शास्त्री नगर की ओर से पलटन बाजार विजयवर्गीय धर्मशाला में आयोजित शिव दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी को देखने के लिए श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। श्रद्धालुओं ने शिवलिंग के दर्शन कर पूजा-अर्चना की

अजमेर में सावन के दूसरे सोमवार को महिलाओं ने मंदिरों में शिवजी की पूजा-अर्चना की।

ब्रह्माकुमारी आशा बहन ने कहा कि सर्व आत्माओं के पिता परमात्मा शिव ज्योति बिंदु स्वरूप हैं। ज्ञान के सागर हैं। गुणों के भंडार हैं। आनंद के सागर हैं। कार्यक्रम में कीर्ति बहन, भाई ओमप्रकाश, हरिराम आदि मौजूद रहे। श्री पर्वतेश्वर महादेव मंदिर पर मंगलवार को सहस्त्रधारा का आयोजन होगा। सुबह नौ बजे पंडितों द्वारा विधि-विधान से शिव पूजन, दोपहर एक बजे मंत्रोच्चारण के साथ भगवान शिव का जलाभिषेक (सहस्त्र धारा) पांच बजे तक तत्पश्चात भगवान शिव का विशेष श्रृंगार, महाआरती व प्रसाद का वितरण होगा।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 30 जुलाई, 2024

सावन मास, कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, कृत्तिका नक्षत्र दिन 10:23 तक, वृद्धि योग दिन 3:56 तक, विष्टि करण सायं 4:45 तक, चन्द्रमा आज वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-वृष, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 10:23 तक है। कुमार योग दिन 10:23 से आरम्भ होगा। भद्रा सायं 4:45 तक रहेगी। आज मंगला गौरी पूजा है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:14 से 10:53 तक, लाभ-अमृत 10:53 से 2:13 तक, शुभ 3:53 से 5:32 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:54, सूर्यास्त 7:12

मेष
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मिथुन
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

कर्क
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

कन्या
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।

वृश्चिक
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

धनु
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मकर
व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कुंभ
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

टैंकर से गैस रिसाव, चालक की सुझबूझ ने हादसा टाला

रेवदर-मंडार से होकर गुजर रहे दिल्ली कांडला नेशनल हाईवे पर गैस की टंकी भरे टैंकर में अचानक हुए गैस रिसाव पर कड़ी मशक्कत क काबू पाया गया। फोटो-राष्ट्रदूत

रेवदर, (निसं)। रेवदर मंडार से होकर गुजर रहे दिल्ली कांडला नेशनल हाईवे पर सोमवार सुबह करीब 11.00 बजे रेवदर की ओर जा रहे गैस की टंकी भरे टैंकर में अचानक गैस रिसाव होना शुरू हो गया। जिस पर टैंकर चालक ने सूझबूझ दिखाते हुए टैंकर को टोल टैक्स के आगे आबादी से दूर जाकर एक जगह पर खडा कर दिया एवं इसकी सूचना तुरंत पुलिस को दी। जिस पर मंडार थाना अधिकारी रविंद्रपाल सिंह मय जाब्ता मौके पर पहुंचे एवं स्थिति को देखते हुए रेवदर डिप्टी रूपसिंह इंदा को अवगत करवाया।

मौके पर डिप्टी तथा उपखंड अधिकारी सुबोध सिंह चारण एवं तहसीलदार मौके पर पहुंचे उन्होंने स्थिति का जायजा लेकर सिरोही, आबूरोड, पिंडवाडा की फायर ब्रिगेड की टीम एवं गेल इंडिया तथा ओएनजीसी के अधिकारियों को मौके पर बुलवाकर पानी का छिड़काव करना शुरू कर दिया। जिससे रिसाव थोड़ा कम हुआ तब जाकर अधिकारियों ने लीकेज वाले स्थान को सही किया एवं तब जाकर प्रशासन एवं ग्रामीणों ने राहत की सांस ली। टैंकर में अचानक गैस रिसाव होने के कारण अगर टैंकर आबादी क्षेत्र में ही रुक जाता तो बड़ा हादसा हो सकता था। आबादी क्षेत्र में गैस रिसाव रोकने में दिक्कत हो सकती थी, लेकिन ड्राइवर की सूझबूझ से बडा हादसा टल गया।

गैस लीकेज होने की सूचना मिलने पर प्रशासन तुरंत मौके पर पहुंचा एवं मंडार थाना अधिकारी रविंद्रपाल सिंह भी गैस टैंकर से हो रहे गैस रिसाव वाले स्थान पर पहुंचे एवं सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने काफी मशक्कत के बाद गैस रिसाव पर काबू पाया।

टैंकर से गैस रिसाव होने के चलते आवागमन को भी रोका गया, मंडार तीन बत्ती से लेकर गुंदरी चेक पोस्ट तक भारी वाहनों की आवाजाही पर रोक लगी रही एवं दूसरी तरफ दीपक ढाबा से लेकर सोनेला तक आवागमन रोका गया।

उत्कर्ष : पौधारोपण व सम्मान समारोह आयोजित

उत्कर्ष क्लासेस के सह संस्थापक तरुण गहलोत एवं नर्सिंग अधिकारी देवराज चौहान के जन्मदिन पर मथुरादास माथुर अस्पताल में 501 वृक्षारोपण मुहिम का अगला चरण एवं सम्मान समारोह किया।

जोधपुर, (का.सं.)। उत्कर्ष क्लासेस के सह संस्थापक तरुण गहलोत एवं एमडीएम नर्सिंग अधिकारी देवराज चौहान के जन्मदिन के उपलक्ष्य में मथुरादास माथुर अस्पताल परिसर में 501 वृक्षारोपण मुहिम का अगला चरण एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

ध्यातव्य है कि इस मुहिम का शुभारंभ नर्सिंग अधिकारी भवानी शंकर नायक एवं देवराज चौहान द्वारा गत 5 जून को किया गया था। मुहिम के इस चरण में वृक्षारोपण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्कर्ष क्लासेस के चेयरमैन एवं पर्यावरण ब्रांड एम्बेसडर (राजस्थान सरकार) डॉ. निर्मल गहलोत तथा जॉन चेयरमैन, लॉयंस क्लब एडवोकेट अशोक पटेल के हाथों किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि रूप में तरुण गहलोत, उम्मेद अस्पताल के पूर्व अधीक्षक डॉ. बी. एस. जोधा, एमडीएम कार्डिक विभाग के हेड डॉ. सुभाष बलारा, लूणी अजा/जजा विकास परिषद् के अध्यक्ष कालुराम भील, समाजसेवी प्रमोद धाणदिया, अशोक चौहान, रोटरी राउंड टाउन के अध्यक्ष मनीष सालेचा, एमडीएम नर्सिंग अधीक्षक श्रीमती कंचन रावल तथा रतन सिंह राजपुरोहित मौजूद रहे। सम्मान समारोह की अध्यक्षता एमडीएम अधीक्षक डॉ. नवीन किशोरिया ने की। मथुरादास माथुर अस्पताल परिसर में नर्सिंग अधिकारी भवानी शंकर नायक एवं देवराज चौहान की टीम द्वारा गत माह से वृक्षारोपण कर 501 (बड़े पेड़) पौधे लगाने की मुहिम शुरू की गई थी। इस सम्मान समारोह में मुहिम के सदस्य रविन्द्र गुप्ता, गोपाल व्यास, गणेश आचार्य, अजय जोशी, प्रदीप गौतम, रमेश जाँगिड़, गुलाब खान, रोहित पँवार, आतिश आसोपा, सुनील तालणीया, नाज़नीन शेख, राहुल राजपुरोहित, दिनेश जीनगर, मदन मेघवाल, अंजू, दीपक सोनगरा, घनश्याम बंशीवाल नितिन शर्मा, दिलिप डांगी, नारायण सुन्देश, सुरेश तांडी, ललिता इनकीया, विजय लक्ष्मी, बलदेव मेघवाल, चैनाराम राठौड़ भील, सोनराम भील, मनोज दैया, हमीर कड़ेला तथा लीना चौहान को सम्मानित किया गया।

स्वास्थ्य केंद्रों का निरीक्षण करें : शक्ति सिंह राठौड़

सांचोर, (कासं)। जिला कलेक्टर शक्ति सिंह राठौड़ की अध्यक्षता में सोमवार को पंचायत समिति सभागार में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक संपन्न हुई।

- **पंचायत समिति सभागार में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक संपन्न**

बैठक के दौरान जिला कलेक्टर ने चिकित्सा विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे जिले के स्वास्थ्य केंद्रों का नियमित रूप से निरीक्षण करें तथा आमजन के लिए बेहतर चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करें। बैठक के दौरान जिला सीएमएचओ डॉ. बी.एल. विश्नोई ने क्षेत्र में मौसमी बीमारियों को रोकने के लिए विभाग की द्वारा संचालित एंटी लारवा एक्टिविटी, स्टॉप डायरिया प्रोग्राम, राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम, जननी सुरक्षा योजना, राजश्री योजना, मुख्यमंत्री निशुल्क दवा योजना, मुख्यमंत्री नि:शुल्क जांच योजना, मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना, पीएमजेवाई कार्ड, एनीमिया मुक्त राजस्थान कार्यक्रम के बारे में आंकडोंवार जानकारी दी। विभाग के समस्त ब्लाक चिकित्सा अधिकारियों को सुदृढ चिकित्सा व्यवस्था प्रबंधन सुनिश्चित करने की बात कही। बैठक के दौरान आई-पी.ए.एस कार्यक्रम की को-ऑर्डिनेटर आराधना सिंह ने क्षेत्र में चलाए जा रहे परिवार नियोजन कार्यक्रम की भी जानकारी दी। इस अवसर पर अतिरिक्त जिला कलेक्टर चंद्रशेखर भंडारी, एडिशनल सीएमएचओ डॉ वीरेंद्र हेमथानी, डिप्टी सीएमएचओ डॉ कमलेश, पीएमओ डॉ मनोज बिश्नोई, बीसीएमओ डॉ ओमप्रकाश सुथार सहित कई जने उपस्थित रहे।

कार ने बाइक सवारों को चपेट में लिया, एक जने की मौत

जोधपुर, (कासं)। शहर के दल्ले खां चक्की पेट्रोल पंप के सामने रविवार की देर रात एक कार चालक ने बाइक सवार दो युवकों को पीछे से टक्कर मार कर उछाल दिया। हादसे में एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई जबकि उसका साथी घायल हो गया। घटना के बाद परिजन रात देवनगर थाने गए और मगर पुलिस द्वारा कोई तवज्जों नहीं दिए जाने को लेकर रोष जाहिर किया। इधर आज सुबह परिजन मथुरादास माथुर अस्पताल की मोर्चरी पर जमा होकर पुलिस पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए हंगामा किया। पुलिस कर्मियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग करने के साथ मुजावजा भी मांगा। पुलिस ने कार चालक को हिरासत में लिया है। बताया जाता है कि घटना के बाद कार चालक को पुलिस ने रवाना कर दिया था, जिस कारण परिजन आक्रोशित हो गए है। घायल युवक का एमडीएम अस्पताल में उपचार चल रहा है। आरोप है कि कार का चालक नशे में था।

व्यापारियों का मोहल्ला सूरसागर के रहने वाले बिलाल अहमद की तरफ से देवनगर थाने में रिपोर्ट दी गई है। इसमें बताया कि उसका रिश्तेदार भाई व्यापारियों का मोहल्ला निवासी उज्जैर अहमद पुत्र अब्दुल हमीद और उसका साथी मरूधर नगर पाल लिंक रोड निवासी अमान अंसारी पुत्र असलम अंसारी दोनों रविवार की रात में बाइक पर 12 वीं रोड से होते हुए दल्ले खां चक्की पेट्रोल पंप के सामने से निकल रहे थे। पीछे से आई एक सफेद रंग की कार के चालक ने उन्हें जोरदार टक्कर मार कर उछाल दिया। जिससे अमान अंसारी की मौके पर ही मौत हो गई।

इधर दुर्घटना की जानकारी पर देवनगर पुलिस वहां पहुंची और दुर्घटनाकारित करने वाले चालक को वहां से रवाना कर दिया गया, पुलिस ने पीड़ित परिवार को कोई तवज्जों नहीं दी। साथ ही थाने में जाने पर भी लापरवाही सामने आई। घायल उज्जैर अहमद को देर रात एमडीएम अस्पताल में भर्ती करवाया गया है।

मोर्चरी पर प्रदर्शन

इधर अमान अंसारी की मौत को लेकर मृतक के परिजन सहित रिश्तेदारों ने सुबह एमडीएम अस्पताल की मोर्चरी पर प्रदर्शन करते हुए देवनगर पुलिस के खिलाफ नारेबाजी की, साथ ही दोषी पुलिस कर्मियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग करते हुए आरोपी कार चालक रिवेश को गिरफ्तार करने की मांग रखी। सूचना पर एसीपी प्रतापनगर अनिल कुमार, शास्त्रीनगर थानाधिकारी देवेंद्र सिंह देवड़ा आदि वहां पहुंचे। उन्होंने प्रदर्शन कर रहे मृतक के परिजन से बात की और समझाइश की। परिजन एक करोड़ मुआवजें की मांग के साथ मृतक के एकमात्र भाई को सरकारी नौकरी की मांग रखे हुए है। दोपहर तक इस बारे में कोई निर्णय नहीं लिया जा सका।

सांसद एवं विधायक मद से स्वीकृत कार्यों को तत्काल पूर्ण करें : चौहान

बालोतरा (निसं)। ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग की समीक्षा बैठक में अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला बालोतरा भुवनेश्वर सिंह चौहान ने सांसद एवं विधायक मद में स्वीकृत सभी कार्यो को तत्काल पूर्ण करने के निर्देश दिए विकास अधिकारी कल्याणपुर चंपालाल ने बताया कि पूर्व निर्धारित मासिक कार्यक्रम के अंतर्गत अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला बालोतरा भुवनेश्वर सिंह चौहान ने ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग की समस्त योजनाओं की विस्तृत समीक्षा की जिसके तहत राज्य सरकार द्वारा दिए गए। निर्देशों की पालना में प्रत्येक ग्राम विकास अधिकारी को सुबह 10:00 बजे से 12:00 बजे तक आवश्यक रूप से ग्राम पंचायत में ठहराव हेतु पाबंद किया। निर्देशों की पालना में 7 अगस्त को आयोजित होने वाले हरियालो राजस्थान कार्यक्रम के तहत तैयारी की समीक्षा की तथा राज्य सरकार द्वारा प्रदान किए गए लक्ष्य के अनुसार शत प्रतिशत वृक्षारोपण करने के निर्देश प्रदान किये व वृक्षारोपण अधिक से अधिक करने के लिए महिलाएं लहरिया ओढ कर हरियाला राजस्थान कार्यक्रम में भाग लेना सुनिश्चित करें इस हेतु प्रेरित करें प्रोत्साहन के लिए प्रतिस्पर्धा विकसित करें स्वामित्व योजना के तहत जिन ग्राम पंचायत में मैप 2 प्राप्त हो गए है उन सभी ग्राम पंचायत में प्रॉपर्टी कार्ड का वितरण तत्काल प्रारंभ किया जाए।

प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत जिन ग्राम पंचायत में पिछली बैठक से अब तक प्रगति रही है उन ग्राम विकास अधिकारियों को विशेष निर्देश प्रदान करके शेष बचे बहुत कम आवास को तत्काल पूर्ण करने के निर्देश प्रदान किये स्वच्छ भारत मिशन योजना के अंतर्गत सामुदायिक शौचालयों का निर्माण 31 अगस्त से पहले पहले आवश्यक रूप से पूर्ण करने के निर्देश प्रदान किए कनिष्ठ तकनीकी सहायकों को नियमित रूप से नरेगा के अधूरे पडे कार्यो को एक सप्ताह के भीतर भीतर ऑनलाइन पूर्ण करने हेतु प्रभावी क्रियान्वित्ती करने के बारे में विस्तृत जानकारी दी मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान 2.० के तहत स्वीकृत किए गए सभी कार्यो को यथाशीघ्र पूर्ण करके जिला कलेक्टर बालोतरा द्वारा दिए गए। वार्षिक पेंशन सत्यापन में बचे हुए बहुत कम व्यक्तियों का सत्यापन बुधवार तक 100 प्रतिशत करने के निर्देश कडाई से पालन करने हेतु आग्रह किया बैठक से पूर्व पंचायत समिति के प्रधान उम्मेद सिंह अराबा, सरपंच मानाराम पालिवाल ग्राम पंचायत कुंडी, प्रेमी देवी विश्नोई, ग्राम पंचायत पटाउ, सरपंच प्रतिनिधि करनाराम पटेल, ग्राम पंचायत धडोई चारणान एवं अन्य सरपंच गण तथा जनप्रतिनिधियों ने पंचायत समिति कल्याणपुर में किए जा रहे कार्यों तथा परिस्थितियों के बारे में विस्तृत रूप से अवगत करवाया।

सार-समाचार

विद्यार्थियों को विधिक जानकारी दी

पाली, (नि.सं.)। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर के तत्वाधान में अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (जिला एवं सेशन न्यायाधीश) पाली के निर्देशानुसार सोमवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (अपर जिला न्यायाधीश), सचिव विक्रम सिंह भाटी द्वारा विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन सूरज शिक्षण संस्थान उच्च माध्यमिक विद्यालय, इंद्र विहार पाली में किया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार भाटी ने विद्यार्थियों को विधिक सेवा प्राधिकरण के आयामों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि न्यायपालिका इस बात के लिए प्रतिबद्ध है कि कोई भी नागरिक गरीबी या पिछड़ेपन के कारण न्याय से वंचित नहीं रहे। इसी उद्देश्य से जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा पात्र नागरिकों को नि:शुल्क विधिक सहायता प्रदान की जाती है, जिसके तहत नागरिकों को सिविल, राजस्व या आपराधिक न्यायालय में पैरवी हेतु नि:शुल्क विधिक सेवाएं उपलब्ध करवाई जाती है। जिससे कि नागरिक अपना पक्ष न्यायालय के समक्ष रख सके। इसके साथ ही सचिव भाटी द्वारा कार्यस्थल पर महिलाओं को यौन उत्पीड़न से संरक्षण प्रदान कर महिलाओं को सुरक्षित, गरिमापूर्ण एवं अनुकूल कार्य वातावरण प्रदान करने के लिए बनाये गये "महिलाओं पर कार्य स्थल पर लैंगिक उत्पीड़न (निवारण, प्रतिषेध और प्रतितोष) अधिनियम, 2013" तथा वरिष्ठ नागरिकों को शीघ्रताशीघ्र न्याय प्रदान करने के लिए माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण तथा कल्याण अधिनियम, 2007, नि:शुल्क विधिक सहायता, राष्ट्रीय लोक अदालत, पीड़ित प्रतिकर स्कीम, बाल-विवाह निषेध अधिनियम, नशे के दुष्प्रभाव आदि के बारे में भी जानकारी दी गई। वहीं पीएलवी श संतोष रावल ने पर्यावरण न्याय:हरित राजस्थान की परिकल्पना विशेष अभियान में जल का बचाव के बारे में विद्यार्थियों को जागरूक किया तथा बालिका शिक्षा, साइबर अपराध, रैंगिंग की जानकारी दी। इस दौरान स्कूल के निदेशक नारायण सिंह, संस्था प्रधान आरिफ खान, समस्त अध्यापकगण सहित कई जने उपस्थित रहें।

लोग पेयजल को तरसने लगे

जोधपुर, (कासं)। सूर्यनगरी जोधपुर के कई इलाकों में जलदाय विभाग के अफसरों की अनदेखी जनता पर भारी पड़ रही है। पेयजल संकट को दूर करने में विभाग के इंजीनियरों की लापरवाही भजनलाल सरकार की जनकल्याण के दावों पर पानी फेर रही है। जोधपुर में पेयजल संकट को लेकर जनता परेशान है और कंटीजेंसी प्लान पर जलदाय विभाग के इंजीनियर मौज कर रहे हैं। विभाग को कंटीजेंसी प्लान में लाखों रुपए मिलने के बाद भी बनाड़, रमजानजी का हत्था, एकता नगर, नांदडी समेत कई इलाकों में पेयजल संकट को दूर नहीं किया गया। इन इलाकों में हजारों लोग पिछले दो साल से पीने के पानी के लिए तरस रहे हैं। लोगों का कहना है कि केंद्रीय पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत और पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के गृह जिले जोधपुर के इन इलाकों में एक-एक माह के अंतराल पर पेयजल की सप्लाई हो रही है। लोगों को महंगी दरों पर टैंकर मंगाकर पानी का इंतजाम करना पड़ रहा है। बड़ी बात यह है कि इस क्षेत्र में पेयजल सप्लाई को दुरुस्त करने के लिए चीफ इंजीनियर जगदीश व्यास, एक्सईएन मनोज सोनी और एईएन भरत सिंह राजपुरोहित को स्थानीय निवासियों की ओर से कई बार शिकायत भी दी गई। लेकिन, पेयजल आपूर्ति में सुधार नहीं हुआ। यहां तक कि जनता की शिकायत के बाद जनप्रतिनिधियों की ओर से इन अफसरों को दी गई हिदायत पर भी वे केवल आश्वासन देकर उन्हें भी गुमराह कर रहे है। स्थानीय लोगों में विभाग के इन अधिकारियों के रवैये को लेकर जबरदस्त आक्रोश है।

500 पौधे लगाने का संकल्प लिया

पाली, (नि.सं.)। महिला जन सहयोग वेलफेयर सोसायटी द्वारा खोडिया बालाजी स्थित राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। सोसायटी की जिला उपाध्यक्ष प्रियंका व्यास ने बताया की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के अभियान "एक पेड़ माँ के नाम" से प्रेरित होकर संगठन द्वारा विद्यालय मे 20 से अधिक छायादार, फलदार पौधे लगाए गए। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए सोसायटी की जिलाध्यक्ष अंकिता बोहरा ने विद्यार्थियों को विद्यालय परिसर को हरा भरा बनाने हेतु तथा हमेशा इन पौधों को पानी पिलाने तथा देखभाल करने का संकल्प दिलवाया। और पर्यावरण में पेड़ो की उपयोगिता और आने वाले समय में इनकी ! के बारे मे विस्तार से बताया गया व समय समय पर खुद आकर देखभाल करने का भी संकल्प लिया। सचिव आनंद सोलंकी ने बताया की समिति द्वारा विभिन्न स्थानों पर इस वर्ष 500 से अधिक पौधे नए लगाए जाएंगे तथा वितरित किए जाएंगे। इस अवसर पर संगठन के संस्थापक ब्रजेश बोहरा, पी.डब्ल्यू.डी. के दिलीप परिहार, वरिष्ठ उद्योगपति गोपाल बग, सचिव आनंद सोलंकी, कोषाध्यक्ष चंद्रिका शर्मा, उपाध्यक्ष नरेन्द्र तिवाड़ी, कविता पुरोहित, राजश्री वैष्णव, जयंता, कपिल व्यास, विद्यालय के प्रधानाचार्य कैलाश उपाध्याय, अध्यापक हीरालाल पटेल, अमृतलाल सांखला, रेखा कुमारी सहित कई जने उपस्थित रहे।

'आयुष्मान में पंजीकरण 31 तक करवाएं'

जोधपुर, (कासं)। राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना का अगस्त माह से लाभ लेने के लिए पंजीयन करवाने के लिए अब अंतिम दो दिन शेष है। इस माह 31 जुलाई तक पंजीकरण नहीं करवाने वाले परिवारों को योजना का लाभ लेने के लिए तीन माह का इंतजार करना पड़ेगा। योजना में जिले के सभी वंचित परिवार स्वयं की एसएसओ आईडी या ई-मित्र के माध्यम से अपना पंजीकरण करवा सकते हैं, ताकि एक अगस्त 2024 से योजना का लाभ मिल सके। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जोधपुर ग्रामीण डॉ. प्रताप सिंह राठौड़ ने बताया सरकार की उद्देश्य है प्रदेश के प्रत्येक परिवार को इस योजना में पंजीयन करवा कर आगामी दिनों में इलाज के भारी-भरकम खर्च और चिंताओं से मुक्त हो सके। पंजीयन करवाने के बाद उन्हें व परिवारजनों को 25 लाख रूपए तक का निशुल्क इलाज मिल सकेगा। साथ ही 10 लाख रूपए तक का दुर्घटना बीमा भी निशुल्क मिलेगा। योजना डीपीसी डॉ. अलका राजपुरोहित ने बताया कि योजना में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा, सामाजिक आर्थिक जाति जनगणना-2011, लघु एवं सीमांत किसान, संविदा कर्मियों तथा कोविड-19 अनुग्रह राशि प्राप्त करने वाले निराश्रित एवं असहाय परिवारों के लिए बीमा का प्रीमियम सरकार वहन कर रही है। इसके अलावा आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों (वार्षिक आय 8 लाख से कम) के लिए बीमा का प्रीमियम भी सरकार द्वारा वहन किया जा रहा है। अलका राजपुरोहित ने बताया कि ऐसे सभी परिवारों का पंजीकरण स्वत: ही हो रहा है। इसके अतिरिक्त अन्य सभी परिवार मात्र 850 रुपए प्रीमियम जमा करवाकर इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

आपसी विवाद में परिवार पर हमला

जोधपुर, (कासं)। शहर के पांच बत्ती सर्किल पोलो ग्राउण्ड के पास में आपसी विवाद के चलते परिवार के कुछ लोगों पर जानलेवा हमला किया गया। लाठी, डंडों और चाकू से किए गए हमले में तीन चार लोग चोटिल हो गए। इस बारे में पीड़ित की तरफ से एयरपोर्ट थाने में नामजद लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कराया गया है एयरपोर्ट थाने में दी रिपोर्ट में बोम्बे मोटर्स हाजी बिल्डिंग के पास सरगरा कॉलोनी निवासी हुकम सिंह ने पुलिस को बताया कि पोलो ग्राउण्ड के पास वन एन एयरपोर्ट रेस्टोरेंट सामने रविवार की शाम के समय राहुल नायक, अविनाश उर्फ धन्ना, पन्ना उर्फ रोहन, रवि और उसे साथियों ने उसकी माता इन्द्रा देवी, मामा मनीष कुमार, मामा के लडक़े विकास, मामी विद्या देवी के साथ लाठी सरियों और चाकू से जानलेवा हमला कर घायल कर दिया। जिससे यह लोग चोटिल हो गए। हमले का कारण इनके बीच आपसी विवाद होना बताया गया है। एयरपोर्ट थाना पुलिस इसमें जांच कर रही है। इसी तरह मथानिया थाने में दी रिपोर्ट में उम्मेदनगर निवासी जोगाराम पुत्र शिवराम देवासी ने पुलिस को बताया कि रविवार को मुकेश, धन्नाराम, भोमाराम और भैराराम ने मिलकर मारपीट की, जिससे वह जख्मी हो गया।

भीतरी शहर में पुलिस का रूट मार्च

जोधपुर, (कासं)। आगामी दिनों में शहर में पर्व और त्योहारों को देखते हुए पुलिस ने अभी से सुरक्षा की दृष्टि से नजर रखनी शुरू कर दी है। सोमवार की सुबह भीतरी शहर के कई इलाकों में पुलिस ने रूट मार्च किया। एसीपी केंद्रीय मंगलेश चूंडावत ने बताया कि सुबह सात बजे यह रूट मार्च नई सडक़ से आरंभ किया गया जोकि घंटाघर घुमटी होते हुए कपड़ा बाजार, कंदोई बाजार, सर्राफा बाजार, लाडजी का कुआं चौकी, बालवाड़ी स्कूल रोड से होते हुए जालोरी गेट चल चला। इस दौरान एडीसीपी पूर्व वीरेंद्र सिंह के साथ स्वयं एसीपी केंदीय मंगलेश चूंडावत भी थी। साथ ही पुलिस के काफी जवान इस रूटमार्च में शामिल रहे। यह रूटमार्च आगामी पर्वों एवं त्योहारों के मद्देनजर निकाला गया है साथ ही रूटिन प्रक्रिया में इसे निकाला गया।

सार-समाचार

बुनियादी साक्षरता कार्यक्रम शिविर

रेवदर, (निसं)। ब्लॉक स्तरीय त्रिदिवसीय बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ एल एन)आधारित शिक्षक प्रशिक्षण का शुभारंभ आज राजकीय छात्रावास महात्मा गांधी अंग्रेजी विद्यालय, रेवदर में किया गया। अन्नाराम मोबारसा मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी रेवदर ने उपस्थित शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रशिक्षण शिविर में सीखी हुई नई तकनीकी व ज्ञान को विद्यालय में पढने वाले बच्चों तक अवश्य पहुंचाएं। शिक्षक का पेशा एक पवित्र पैसा है,जिसमें काम के साथ पुण्य भी प्राप्त होता है। छगनलाल रावल आरपी ने मां सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्वलित कर प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ किया संभागियों को एफएलएन प्रशिक्षण के उद्देश्यों को बताते हुए इन 3 दिनों के दौरान यहां की व्यवस्थाओं व सुविधाओं आदि के बारे में विस्तार से बताया। प्रशिक्षण में एनईपी2020 व शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 आदि की जानकारी दी गई। शिक्षकों को प्रशिक्षण के दौरान केआरपी मांगीलाल डाक, जीवाराम खाण, सुबेसिंह बुटडी, अनोपसिंह निम्बज के द्वारा शिक्षण कार्य में नई तकनीकी जानकारी दी गई। घनश्याम सिंह आढा एसीबीओ ने भी शिक्षकों को संबोधित किया। एफएलएन प्रशिक्षण पांच चरणों में आयोजित होगा, जिसमें ब्लॉक के कुल 500 शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे 7 प्रत्येक चरण 3 दिन का होगा 7आज प्रशिक्षण में आमंत्रित 100 में से 88 शिक्षक उपस्थित होकर प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है। प्रशिक्षण के दौरान एपीएफ के अलीखान व मुकेश शर्मा भी प्रोजेक्टर के माध्यम से जानकारी दे रहे है। व्यवस्थापक के रूप में अरविंद कुमार वाडका व राजेश गुरु मालपुरा अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

रसद कार्यालय का निरीक्षण

बाड़मेर, (निसं)। जिला कलैक्टर निशान्त जैन ने सोमवार को जिला रसद कार्यालय का निरीक्षण किया। उन्होंने अनुपस्थित मिले कार्मिकों को नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। जिला कलैक्टर निशान्त जैन ने सोमवार प्रात: 10 बजे जिला रसद कार्यालय का निरीक्षण कर खाद्य सुरक्षा योजना में नाम जोड़ने एवं राशन कार्ड से आधार लिंक करने की प्रक्रिया के बारे में जानकारी ली। जिला कलैक्टर ने निरीक्षण के दौरान जिला रसद अधिकारी समेत अन्य कार्मिकों की कार्यालय में अनुपस्थिति को गंभीरता से लेते हुए कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। इस दौरान उन्होंने कहा कि रसद कार्यालय में आने वाले परिवादियों की परिवेदनाओं को प्राथमिकता से निस्तारण करने के साथ उनके लिए बैठने तथा पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। जिला कलक्टर ने रसद कार्यालय में सफाई व्यवस्था को लेकर नाराजगी जाहिर करते हुए इसमें सुधार लाने के निर्देश दिए। उन्होंने विभागीय कार्मिकों से उनकी ओर से संपादित किए जा रहे कार्यों की जानकारी लेते हुए रिकार्ड संधारण के संबंध में आवश्यक निर्देश दिए।

सावन महोत्सव 4 अगस्त को

पाली, (नि.सं.)। युवकसंघ अध्यक्ष दीपक शर्मा ने कहा कि श्री गुर्जरगौड़ ब्राह्मण समाज पाली का सावन महोत्सव 2024 4 अगस्त 2024 रविवार को एक निजी होटल में आयोजित किया जाएगा। महिला सभा अध्यक्ष श्रीमती ज्योति प्रमोद त्रिवेदी ने जानकारी देते हुए बताया कि पिछले दो वर्षो की भांति इस वर्ष भी सावन महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाएगा। इस महोत्सव में समाज की माताएं एवं बहनों द्वारा कई कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। कार्यक्रम संयोजक सुनील जोशी एवं गोविंद उपाध्याय ने कहा कि सावन महोत्सव 2024 के अंतर्गत बच्चे महिला एवं पुरुष वर्ग सभी के लिए विभिन्न तरह की प्रतियोगिता नृत्य सहित कई आकर्षक कार्यक्रम तय किए गए हैं। कार्यक्रम को लेकर जिला सभा अध्यक्ष सत्यनारायण जोशी, पारसमल शर्मा, दिनेश जोशी, मुकेश जोशी, प्रमोद त्रिवेदी, मनोहर पंचारिया, राकेश जोशी, अशोक पंचारिया, मुकेश नाबरिया, दीपक तिवारी बुलेट, संजय पंचारिया, अमित शर्मा, नरेंद्र नाबरिया, भवानी शंकर शर्मा सहित कई जने तैयारी में जुटे हुए हैं।

मंदिरों में गूंजे भोलेनाथ के जयकारे

पाली, (नि.सं.)। सावन मास के दूसरे सोमवार के अवसर पर शहर के शिव मंदिरों में शिव भक्तों ने उपवास रखकर शिवलिंग पर जल, दूध, दही, बेलपत्र, पुष्प चढ़ा कर भगवान शिव से अपनी मनोकामना पूर्ण की। पाली शहर के हृदय स्थल प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर में सुबह 5: बजे से शिव भक्तों ने मंदिर में पहुंच ओम नम: शिवाय बम बम भोले के जयकार लगे। यहां पर 101 किलो पुष्प से भगवान की विशेष झांकी सजाई गई। पुजारी शुभम रावल ने बताया कि इस अवसर पर भगवान की चार पहर आरती और दो बार फूलों से श्रृंगार किया गया। शहर के विभिन्न मंदिर लखोटिया महादेव, रत्नेश्वर महादेव, गीता भवन स्थित महादेव, गोपीनाथ जी स्थित 12 ज्योतिर्लिंग तारकेश्वर, भूतेश्वर, पंचमुखी महादेव, अमलेश्वर महादेव नहर पुलिया अटल महादेव, प्रशासन पछाड़ महादेव सहित शहर के कई मंदिरों में शिव भक्तों की दर्शन के लिए भीड़ रही।

आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं होने से रोष

बालोतरा (निसं)। बालोतरा के निकट 23जुलाई को बुढीवाडा बिजलीघर में कर्मचारी के साथ मारपीट लूट व राजकार्य बाधा के आरोपियों को सात वे दिन तक भी गिरफ्तार नहीं किया गया है। जिसके चलते कर्मचारियों में रोष व्याप्त है।इसके उपलक्ष में आज सोमवार को सभी कर्मचारी संगठनो ने एक होकर कलेक्टर को ज्ञापन दिया जिस पर कलेक्टर साहब ने तुरंत कार्यवाही की बात कीइससे पहले 25जुलाई को पुलिस अधीक्षक को भी ज्ञापन दिया गया था मगर अब तक कोई कार्यवाही नही हुई है और कलेक्टर को दिए ज्ञापन में कर्मचारियों ने बताया 2दिन में कार्यवाही नहीं हुई तो 1 अगस्त से सभी कर्मचारी अधीक्षण अभियंता जोधपुर डिस्कॉम के आगे अनिश्चितकालीन धरना देंगे जिससे जनता को होने वाली असुविधा के माननीय कलेक्टर ,पुलिस अधीक्षक जिम्मेदार होंगे, इसके उपलक्ष में सभी संगठनों के कर्मचारी बालोतरा शहर से उमाराम पटेल, पवन कुमार माली, गणपत प्रजापत, मीठालाल, पचपदरा से पवन परिहार, ग्रामीण से कमल मीणा, चंपालाल, फूलसिंह ,पारस प्रजापत व अन्य काफी संख्या में कर्मचारी मौजूद रहे ।

सिद्धेश्वर महादेव में रुद्राभिषेक

पाली, (नि.सं.)। आज द्वितीय सोमवार को सिद्धेश्वर महादेव पीपली चोक जवाहर नगर में शंकर भगवान का रुद्राभिषेक किया गया। मंत्रोचारण से जवाहर नगर में भक्ति मय माहौल हुआ। रुद्राभिषेक रामावतार जी दायमा,शिव जी दायमा परिवार की ओर से करवाया गया। आचार्य नारायण दवे व कपिल दवे द्वारा करवाया गया। खिमाराम हलवाई, शांतिलाल चोपड़ा,कैलाश पूरी,राजू तिवारी, महेंद्र सिंह एडवोकेट, डूंगर सिंह राजपुरोहित व महिला मंडल ने भजनों की प्रस्तुति दी व महाआरती हुई।

राजस्थान स्टेट माईन्स एण्ड मिनरल्स लिमिटेड
(राजस्थान सरकार का उपक्रम) एसबीयू एण्ड पीसी-लाईमस्टोन, 8, वेस्ट पटेल नगर, सर्किट हाउस रोड, जोधपुर- 342001 (राज.)
फोन नम्बर: (0291) 2511031/2516199 फेक्स: (0291)2511029, Email-jodhpur.rsmml@rajasthan.gov.in

दिनांक :- 29/07/2024

संशोधित निविदा सूचना - 01

निविदा संख्या एवं दिनांक	कार्य का विवरण
आर.एस.एम.एम./ एसबीयू एण्ड पीसी-एल.एस/ जीजीएम-एलएस/ संविदा- 05/2024-25 दिनांक :- 05.07.2024 UBN No. MML2425GSOB00053	आरएसएमएमएल में एलएसयू जैसलमेर (3 नंबर) और एलएसयू गोटन (2 नंबर) में अगले एक साल के लिए पांच (05) वेट ब्रिज के वार्षिक रखरखाव सेवा अनुबंध के लिए। अनुमानित मूल्य (रू.) 3.00 लाख, धरोहर राशि (रू.) - 6000/-, निविदा राशि - 236/- निविदा प्रस्तुत करने की संशोधित तिथि 12.08.2024 को सांय 3.00 बजे तक, निविदा के तकनिकी प्रस्ताव खुलने की संशोधित तिथि 12.08.2024 को सांय 3.30 बजे।

उपरोक्त निविदा की विस्तृत जानकारी के लिए हमारी वेबसाईट www.rsmm.com अथवा www.sppp.rajasthan.gov.in अथवा प्रबन्धक (एमएम) से उपरोक्त पतें पर सम्पर्क करें।
राज.संवाद/सी/24/2932 उप महाप्रबन्धक (का.एवं प्रशा.)

रेल विद्युतीकरण, जयपुर
REJU/EL/MBGA&RNV/CTPT/01(b) Dated-27.07.2024
उप मुख्य बिजली इंजीनियर रेल्वे विद्युतिकरण जालोर, भारत संघ के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से निम्नलिखित कार्य के लिए खुली ईनिविदा आमंत्रित करते है।

निविदा संख्या	जेयुआरई/ईएल/सीटीपीटी / एमबीजीए - आरएनवी/01
कार्य का नाम	रेलवे टीएसएस की मीटरिंग व्यवस्था के लिए 132 केवी जीएसएस बागरा और रानीवाड़ा पर अतिरिक्त मीटरिंग सीटी और पीटी का प्रावधान
अनुमानित लागत	निविदा लागत-₹12,79,976.78/- ई.एम.डी.-₹25,600.00/-
कार्यअवधि	45 दिन, निविदा शुल्क:-निल, वैद्यता:-45 दिन

निविदा प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि व समय 22.08.2024 को 15:00 बजे तक www.ireps.gov.in पर। निविदा कर्ता अपनी मूल/संसोधित बोलियों का ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि प्रस्तुत कर सकते है। मैन्युअल प्रस्ताव इस निविदा के लिए स्वीकार नहीं किए जाएँगे एव मैन्युअल प्रस्ताव तुरन्त रद्दकर दिए जाएँगे। इस टेंडर में पीवीसी क्लॉज, जेवी, कंसोर्टियम, एमओयू की अनुमति नहीं है। उपरोक्त ईनिविदा का पूर्ण विवरण एवं निविदा प्रपत्र वेबसाइट www.ireps gov.in पर उपलब्ध है। उप मुख्य बिजली इंजीनियर रेलवे विद्युतीकरण, जालोर, भारत के राष्ट्रपति की ओर से
पीआर/46/2024 (V) "ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ" www.ireps.gov.in

विवाहिता ने दो बच्चों के साथ कुएं में कूदकर आत्महत्या की

सालरा गांव में पति से पारिवारिक कलह के चलते विवाहिता ने आत्महत्या का कदम उठाया

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के सुभाष नगर थाना क्षेत्र के सालरा गांव में पति से पारिवारिक कलह के चलते विवाहिता ने नौ माह के नवजात बेटे और सात साल की मासूम बेटी के साथ कुएं में कूदकर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने अथक प्रयास के बाद ग्रामीणों के सहयोग से मां-बेटे के शवों को कुएं से निकलवा लिया।

- **महिला ने 7 साल की बेटी कविता व नौ माह के बेटे को लेकर कुएं में छलांग लगा दी**

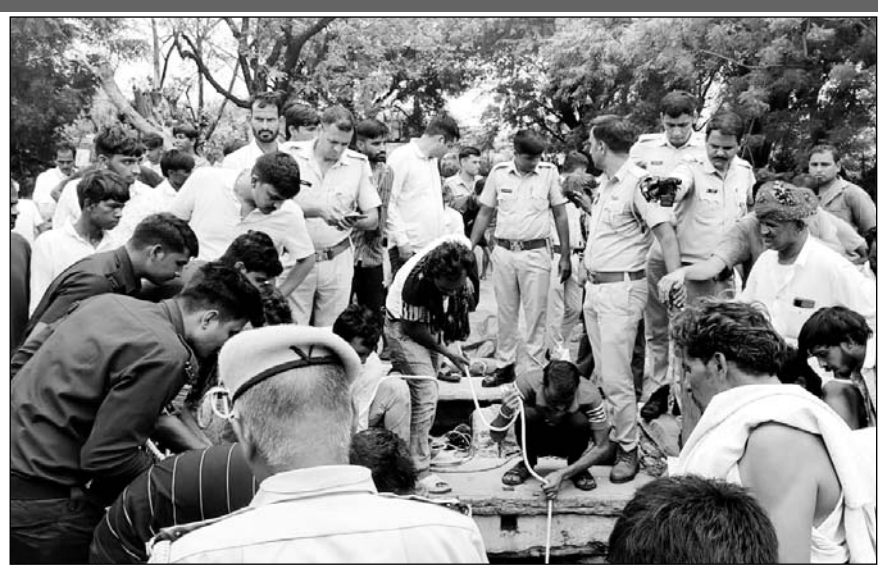

सुभाषनगर थाना प्रभारी शिवराज गुर्जर ने बताया कि सालरा निवासी राजू देवी गाडरी (30) व उसके पति उदयलाल गाडरी के बीच पारिवारिक कलह चल रहा था। इसी के चलते सोमवार सुबह करीब पांच बजे राजू देवी, अपनी सात साल की बेटी कविता व नौ माह के बेटे हनुमंत को लेकर घर से निकल गई। राजू देवी, अपने घर से करीब आधा किलोमीटर दूर स्थित अपने ही कुएं पर पहुंची और बेटे-बेटी सहित कुएं में छलांग लगा दी।

उधर, राजू देवी के घर से निकलने के बाद परिजन उसकी तलाश में निकले तब इस घटना का पता चला। इसकी सूचना पुलिस को दी गई। सुभाषनगर थाना प्रभारी गुर्जर मय जाप्ता मौके पर पहुंचे और ग्रामीणों की मदद से कुएं में गिरी महिला व उसके बेटे-बेटी की तलाश शुरु की। अथक प्रयास के बाद मां-बेटे के शवों को कुएं से निकाल लिया गया। कड़ी मशक्कत के बाद बच्ची का शव भी कुए से बाहर निकाल लिया गया।

पुलिस ने ग्रामीणों के सहयोग से तीनों के शवों को कुएं से निकलवाया।

राज्य में स्कूलों के लिये वार्षिक कैलेंडर जारी

साल के 365 दिनों में स्कूल महज 213 दिन ही संचालित होंगे

बीकानेर, (निसं)। शिक्षा विभाग ने राज्य के सरकारी व प्राइवेट स्कूलों के लिए सेशन 2024-25 के लिए वार्षिक कैलेंडर जारी कर दिया है। साल के 365 दिनों में स्कूल महज 213 दिन ही संचालित होंगे, जबकि 152 दिन स्कूलों में अलग-अलग कारणों से अवकाश रहेगा। इसमें रविवार का अवकाश भी शामिल है।

शिक्षा निदेशक आशीष मोदी की ओर से जारी कैलेंडर के अनुसार इस बार मध्यावधि अवकाश यानी दीपावली के अवकाश 27 अक्टूबर से शुरू होंगे और सात नवम्बर तक रहेंगे। इसी तरह सर्दियों की छुट्टियां हर बार की तरह 25 दिसम्बर से शुरू हो जाएगी और पांच जनवरी तक रहेगी। स्कूलों में प्रथम परख 21 अगस्त से 23 अगस्त तक होंगे। वहीं द्वितीय परख14 अक्टूबर से 16 अक्टूबर तक होंगे। इस बार अर्द्धवार्षिक परीक्षायें 12 दिसम्बर से 24 दिसम्बर तक आयोजित होंगी। वार्षिक परीक्षा 24 अप्रैल से 8 मई तक आयोजित होंगी। परीक्षा परिणाम 16 मई को घोषित होगा।

शिक्षा विभाग ने इस बार भी हर महीने के दूसरे व चौथे शनिवार को "नो बेग डे" घोषित किया है। इस दिन स्कूलों में अलग-अलग गतिविधियां आयोजित होगी, जिसमें बच्चों को स्टेज पर आने का अवसर दिया जाएगा। शिक्षा विभाग से जुड़े सरकारी व प्राइवेट स्कूलों में नया सेशन एक जुलाई 2025 से शुरू होगा। इससे पहले रिजल्ट घोषित होने के साथ ही स्कूलों में छुट्टियां घोषित हो जाएगी। आमतौर पर प्राइवेट स्कूल एक अप्रैल से ही सेशन शुरू कर देते हैं लेकिन सरकारी स्कूल में सेशन एक जुलाई से ही शुरू हो रहा है। इस बार जिला स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन 25 व 26 अक्टूबर को घोषित होगा, वहीं राज्य स्तरीय शैक्षिक सम्मेलन 17 व 18 जनवरी को घोषित होगा। इन चार दिनों में सरकारी स्कूल में अवकाश रहेगा।

- **152 दिन स्कूलों में अलग-अलग कारणों से अवकाश रहेगा इसमें रविवार का अवकाश भी शामिल है**
- **स्कूलों में प्रथम परख 21 अगस्त से 23 अगस्त तक होंगे। वहीं द्वितीय परख14 अक्टूबर से 16 अक्टूबर तक होंगे**

VARDHMAN MAHAVEER OPEN UNIVERSITY, KOTA
(Rawathbhata Road, Kota -324021) (Estate Cell)

NOTICE INVITING E-TENDER (NIB 13/2024-25)

E-Bid is invited for **"ARC for hiring of Computer Machines along with trained personnel"** (UBN: **VMU2425SLRC00012**). Further details may be obtained from **http://www.eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in & www.vmou.ac.in w.e.f. 29/07/2024.**

Raj.Samwad/C/24/2937 OIC Estate

AJMER VIDYUT VITRAN NIGAM LIMITED
Corporate Identification Number (CIN) – U40109RJ2000SGC016482
Registerd Office: VidyutBhawan, Panchsheel Nagar, Makarwali Road, Ajmer-305004
Office of The Superintending Engineer (Civil)
Email-secivilavvnl@gmail.com ; http ://energy.rajasthan.gov.in/avvnl

No. : AVVNL/SE/CIVIL/AJM/FC: D : 807 Date : 26/07/2024

ई-निविदा सूचना संख्या 03 (2024-25)

केन्द्र/राज्य सरकार के विभागों में 'ए' व 'एए' श्रेणी तथा अ.वि.वि.नि.लि. के उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत, अनुभवी तथा माल एवं सेवाकर विभाग से पंजीकृत निविदाकारों से अधिशाषी अभियंता (सिविल/सिविल-QC), अजमेर/उदयपुर/सीकर/चितौडगढ के अधीन सिविल कार्यों के लिए निविदाऐं **UBN No. AVV2425WSOB00146, AVV2425WSOB00147, AVV2425WSOB00149 to AVV2425WSOB00161, AVV2425WSOB00163 to AVV2425WSOB00172, AVV2425WSOB00174 to AVV2425WSOB00194, AVV2425WSOB00196 to AVV2425WSOB00205** आमन्त्रित की जाती है। निविदा सम्बन्धित समस्त विवरण वेबसाईट **http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.rajasthan.gov.in** व **http://energy.rajasthan.gov.in/avvnl** पर उपलब्ध है।

राज.संवाद/सी/24/2929 अधीक्षण अभियन्ता (सिविल)

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता सार्वजनिक निर्माण विभाग विद्युत खण्ड भरतपुर
निविदा सूचना सं. 04/2024-25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्नांकित विद्युत कार्यों के लिए उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं के.लो.नि.वि. डाक, दूरसंचार, रेलवे, से.अ.से., अन्य राज्य सरकारों / केन्द्रीय सरकार के उपक्रमों/ सगठनों के पास सूचीबद्ध ठेकेदार, जो राजस्थान के वर्ग कक और क के समतुल्य है, निर्धारित प्रपत्र में ई-टेन्डरिंग प्रक्रिया द्वारा ऑन लाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विवरण इन्टरनेट साईट www.pwd.rajasthan.gov.in, www.dipr.rajasthan.gov.in पर एवं www.eproc.rajasthan.gov.in पर भी उपलब्ध है।

S.No.	NIB No.	UBN No.
1.	PWD2425A0890	PWD2425WSOB03370
2.	PWD2425A0890	PWD2425WSOB03371
3.	PWD2425A0890	PWD2425WSOB03372
4.	PWD2425A0890	PWD2425WSOB03373
5.	PWD2425A0890	PWD2425WSOB03374

DIPR/C/6664/2024 अधिशाषी अभियंता, सानिवि विद्युत खंड, भरतपुर

कार्यालय नगरपालिका मण्डल, सांभर लेक जिला जयपुर ग्रामीण

क्रमांक:– न.पा.सा./2024/79 दिनांक:– 26.07.2024

ई–निविदा सूचना संख्या 04/2024

नगर पालिका सांभर लेक द्वारा निम्न कार्य कराये जाने हेतु सेवायें में ईच्छुक एंव अनुभवी संवेदकों से निर्धारित प्रपत्र में ई–प्रोक्यूमेन्ट प्रक्रिया हेतु आनलाईन निविदाऐं आमंत्रित की जाती है। निविदा फार्म आनलाईन वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in डाउनलोड एवं अपलोड व http://sppp.rajasthan.gov.in पर डाउनलोड किये जा सकते है:–

S. No.	Particulars	Detail
1	Unique Bid Number	DLB2425SSOB04246, DLB2425SSOB04249, DLB2425SSOB04251, DLB2425SSOB04252, DLB2425SSOB04254
2	Number of Work:-	05
3	Estimate Cost of Tender	80.00 लाख
4	Earnest money (EMD) 2%	1.60 लाख
5	Cost of tender document (non-refundable) In favor of Municipal Corporation Jaipur Heritage Payable at Jaipur.	निविदा में अंकित कार्य के सम्मुख तालिका अनुसार
6	RISL Processing Fees (non-refundable) In favor of MD RISL Payable at Jaipur.	निविदा में अंकित कार्य के सम्मुख तालिका अनुसार
7	Tender Publication on official web site http;//eproc.rajasthan.gov.in	26.07.2024
8	Tender download start date	26.07.2024
9	Bid Submission start date & Time	26.07.2024
10	Bid Submission End date & Time	05.08.2024
11	Technical bid opening date & Time	07.08.2024
12	Financial bid opening date & Time	Will be Intimated latter to the Technically qualified Bidders

अध्यक्ष नगर पालिका मण्डल सांभर लेक — अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका मण्डल सांभर लेक

राज.संवाद/सी/24/2985

'सामाजिक सुरक्षा पेंशन भुगतान की लंबित अवधि एक महीना की'

जयपुर, (वि.सं.)) विधानसभा में प्रश्नकाल के दौरान आज विधायक अमृतलाल मीणा के प्रश्न पर सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत ने सोमवार को विधानसभा में कहा कि राज्य सरकार के प्रयासों से वर्तमान में सामाजिक सुरक्षा पेंशन भुगतान की लंबित अवधि एक महीना कर दी गई है। गहलोत ने कहा कि पूर्ववर्ती सरकार के समय यह अवधि तीन महीने से अधिक थी। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार द्वारा पेंशन राशि में 15 प्रतिशत की वृद्धि कर इसे 1000 रुपये से 1150 रूपये किया गया है। वर्तमान में पेंशनर्स को गत एक अप्रैल से बढ़ी हुई पेंशन राशि का भुगतान किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा 89 लाख पेंशनर्स के खातों में 1037 करोड़ रूपये की राशि का भुगतान डीबीटी के माध्यम से किया गया है।

खेलने गए चार बच्चों की तालाब में डूबने से मौत

सभी बच्चे नहाने के लिए तालाब में उतरे थे, किसी को भी तैरना नहीं आता था

परबतसर, (निसं)। निकटवर्ती ग्राम कैराप में घर से बाहर खेलने गए चार बच्चों की गांव के तालाब में डूबने से दर्दनाक मौत हो गई। सभी नहाने के लिए तालाब में उतरे थे। किसी को भी तैरना नहीं आता था। तलाश कर रहे परिजनों और ग्रामीणों की सूचना पर पुलिस-प्रशासन ने तालाब में सर्च ऑपरेशन चलाया। इसके बाद चारों बच्चों के शव तालाब में गहरे दलदल में फंसे हुए मिले।

मामला डीडवाना-कुचामन जिले के कैराप गांव का है। घटना रविवार शाम पांच बजे हुई। खुनखुना एसएचओ देवीलाल ने बताया कि कैराप गांव के भूपेश (13) पुत्र काशीराम लोहार, साहिल खान (14) पुत्र संजय खान, शिवराज (14) पुत्र गिरधारी लोहार, विशाल ढाका (14) पुत्र बलदेव राम जाट रविवार शाम एक साथ घर से बाहर खेलने के लिए निकले थे। चारों बच्चे देर शाम तक घर नहीं लौटे तो परिजनों को चिंता हुई। आसपास बच्चों की तलाश की गई। जानकारी मिली कि बच्चे तालाब किनारे खेलने गए थे।

इस पर रात को तालाब किनारे पहुंचे तो वहां चारों बच्चों की चप्पलें तालाब के किनारे पड़ी मिली। बच्चे कहीं नजर नहीं आए। दो बच्चों के शव ग्रामीणों ने निकाले। खुनखुना थानाधिकारी देवीलाल बिश्नोई ने बताया कि रात करीब 9.20 बजे ग्रामीणों ने हादसे की सूचना दी थी। इस पर पुलिस जाप्ते के साथ मौके पर पहुंचे। दो बच्चों के शवों को ग्रामीणों ने खुद के स्तर पर दलदल से निकाल लिए थे। अतिरिक्त जिला पुलिस अधीक्षक हिमांशु भी मौके पर पहुंचे। सूचना पर कलेक्टर बालमुकुंद असावा ने एसडीआरएफ की टीम के साथ तहसीलदार और एएसपी हिमांशु शर्मा को रात 10 बजे मौके पर भेजा। चार घंटे के सर्च के बाद एस डी आर एफ की टीम ने रात करीब दो बजे दो अन्य बच्चों के शवों को भी तालाब से बाहर निकाला, जिन्हें डीडवाना के राजकीय बांगड़ जिला अस्पताल लाया गया। शवों का पोस्टमॉर्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिए गए हैं। मामले की जांच की जा रही है। एक साथ चार बच्चों की मौत से गांव में गमगीन माहौल है।

भूपेश लोहार।

साहिल खान।

शिवराज लोहार।

विशाल ढाका।

आकाशीय बिजली गिरने से दो बच्चों की मौत

डूंगरपुर, (निसं)। आकाशीय बिजली गिरने से खेरवाड़ा तहसील के कागदर गांव में दो बच्चों की मौत हो गई। दोनों बच्चे पहाड़ी पर बकरी चराने के लिए गए थे। खेरवाड़ा तहसील के गांव निवासी गोपाल पुत्र सुरेंद्र कलासुआ तथा लक्की पुत्र अनिल कलासुआ दोनों बच्चे गांव में ही बकरी चरा रहे थे। इस दौरान बिजली गिरने से दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए। दोनों बच्चों को पहले खेरवाड़ा फिर डूंगरपुर रेफर किया गया। जहां डॉक्टरों ने जांच के दोनों बच्चों को मृत घोषित कर दिया है।

वहीं डूंगरपुर जिले के पाल देवल गांव में सोफ स्टोन माइंस काम करे मजदूरों भी आकाशीय बिजली गिरने से घायल हो गए। घायलों में अधिकांश महिलाएं शामिल है। सभी लोगों देवल गांव में सॉफ स्टोन की माइंस पर काम करते थे। बिजली गिरने से एक महिला के हाथ पैर झुलस गए। महिला को गंभीर हालात में रैफर कर दिया गया है। जानकारी के अनुसार देवल गांव सोमवार को मजदूर सॉप स्टोन की माइंस पर काम कर रहे थे। तभी बारिश शुरू हो गई बारिश से बचने के लिए सभी मजदूर माइंस पर खड़े डंपर के सहारे छुप गए। इस दौरान आसमान से आकाशीय बिजली गिर गई। जिसे आस पास में अफरा-तफरी मच गई। घटना की सूचना एंबुलेंस की दी। इस पर 108 के पायलट दिनेश रोत और ईएमटी रेखा गायरी मौके पर पहुंचे और घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती करवाया। जहां सभी घायलों का इलाज चल रहा है।

लोहार्गल में कांवड़ियों के बीच घुसे शरारती तत्वों ने सूर्य कुंड पर हंगामा किया

शरारती तत्वों ने धक्का मारकर पुलिसकर्मी को कुंड में गिराया

नवलगढ़, (निसं)। तीर्थराज लोहार्गल धाम के सूर्य कुंड पर रविवार रात्रि को हुई घटना से पुलिस प्रशासन और सूर्य कुंड पर पवित्र स्नान के लिए जाने वाले भक्तों की प्रतिष्ठा पर प्रश्न चिह्न लग गया। रविवार-सोमवार की मध्य रात्रि के बाद सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होने लगा, जिसमें लोहार्गल सूर्य कुंड पर रात्रि करीब 11.15 बजे स्नान कर रहे लोगों को पुलिस जवान डंडे मारकर खदेड़ते नजर आ रहे हैं। वीडियो चारों तरफ आग की तरह फैल गया। लोगों में अनेक प्रकार की चर्चाएं भी शुरू हो गई, लेकिन सूर्य कुंड के चारों ओर लगे सीसीटीवी कैमरों के फुटेज देखने पर पता चला कि घटना का दूसरा पहलू भी है।

- **शरारती तत्वों को काबू करने के लिए पुलिस ने हल्का बल प्रयोग किया**

फुटेज में स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि गौमुख के पास महिलाएं कांवड़ पात्र में पवित्र जल भर रही थी। इस दौरान महिलाओं की तरफ आ रहे शरारती तत्वों को पुलिस जवानों ने टोका और दूसरी तरफ जाने के लिए कहा। कुंड के पास लगे माइक पर भी बार-बार अनाउंसमेंट किया गया। इसके बाद रात्रि 11.15 बजे कांवड़ियों की भीड़ में छिपे असामाजिक तत्व ने एक पुलिस जवान को धक्का मारकर कुंड में गिरा दिया, जिसके बाद पुलिस के जवानों ने कुंड में काफी देर से नहा रहे शरारती लोगों को बाहर निकालने के लिए डंडे फटकारे और 1-2 जने को डंडे भी लगे। इसके बाद 11.20 पर इन शरारती लोगों ने मिलकर पुलिस जवान को जमकर पीटा। कुंड पर हुड़दंग बढ़ता देख कांवड़िए पवित्र जल लेकर अपने-अपने गंतव्य की ओर निकल गए। हुड़दंग करने वाले शरारती लोग भी लाइट नहीं होने की वजह से अंधेरे का फायदा उठाकर मौके से भाग गए। मामले में गोठड़ा थाने में प्रकरण भी दर्ज हुआ है।

घटना की जानकारी लेने व कुंड पर पुलिस की व्यवस्था व अन्य व्यवस्थाओं को लेकर नवलगढ़ पुलिस उप अधीक्षक मनोज कुमार गुप्ता व गोठड़ा थानाधिकारी कमलेश चौधरी सोमवार दोपहर लोहार्गल पहुंचे। डीवाईएसपी मनोज कुमार गुप्ता ने लोहार्गल पंचायत कार्यालय में सरपंच जगमोहनसिंह शेखावत, लोहार्गल सूर्य मंदिर पीठाधीश्वर अवधेशाचार्य महाराज, लोहार्गल के ग्राम विकास अधिकारी अनिल कुमार, सूर्य कुंड के आसपास के दुकानदारों व ग्रामीणों के साथ बैठक की। जिसमें लोगों से भविष्य में इस प्रकार की अप्रिय घटना न हो इसके लिए सुझाव मांगे। सरपंच जगमोहनसिंह, अवधेशाचार्य महाराज ने शनिवार से सोमवार सुबह तक कुंड पर कम से कम 40 पुलिस जवानों की तैनाती करने की मांग की। साथ ही मौजूद लोगों ने सूर्य कुंड पर जाने वाले श्रद्धालुओं का मार्ग दूसरे रास्ते से करने की मांग भी उठी। सरपंच जगमोहनसिंह व महंत अवधेशाचार्य ने सूर्य कुंड पर व्यवस्थाओं के लिए पुलिस टीम के साथ अपने कार्यकर्ता लगाने का भरोसा दिया।

जगदगुरू अवधेशाचार्य महाराज, पीठाधीश्वर सूर्य मंदिर लोहार्गल का कहना है कि धरती के पहले तीर्थ लोहार्गल धाम के सूर्य कुंड पर असामाजिक तत्वों द्वारा की गई घटना निंदनीय हैं। शिवभक्त कांवड़िए सूर्य कुंड पर हुड़दंग नहीं कर सकते। यह लोग तो कांवड़ियों को बदनाम करने व कांवड़ यात्रा को बंद करवाने के षड़यंत्र के तहत कांवड़ियों के बीच भेष बदलकर घुस गए। घटना के समय महिला कांवड़ यात्री गौमुख के पास कांवड़ पात्र में जल भर रही थी। उसी समय सारा घटनाक्रम शुरू हुआ। मौके पर पुलिस जवानों की संख्या बहुत कम थी। इसलिए मैं प्रशासन से मांग करता हूं कि कांवड़ियों के साथ आने वाले डीजे लगे वाहनों को गोल्याणा चौराहे पर ही रोका जाए और दूसरे वाहनों की भी गोल्याणा चौराहे से लोहार्गल कुंड के बीच 3-4 स्थानों पर जांच की जाए, इन वाहनों को भी कुंड से दूर रोका जाए, साथ ही संभव हो सके तो रात के समय शराब व अन्य प्रकार के नशे करके कांवड़ियों के जत्थों में घुसकर कुंड पर आने वाले असामाजिक तत्वों की जांच की जाए। पूरे श्रावण मास में शनिवार से सोमवार तक अतिरिक्त पुलिस बल लगाए जाए।

जगमोहनसिंह शेखावत, सरपंच, लोहार्गल का कहना है कि रविवार-सोमवार की मध्य रात्रि की घटना निंदनीय हैं। कांवड़ियों के भेष में कुछ असामाजिक तत्व सूर्य कुंड पर आ गए और हुड़दंग फैलाया तथा पुलिस के साथ भी इनकी कहासुनी हुई। घटना के समय सूर्य कुंड पर सैंकड़ों की संख्या में कांवड़िए मौजूद थे, लेकिन उन्होंने कुछ नहीं किया। घटना के समय लोहार्गल में बिजली कटौती चल रही थी। यहां पर विद्युत कटौती की बड़ी समस्या है। इसलिए विद्युत निगम के अधिकारियों को रात्रि के समय बिना कटौती बिजली सप्लाई देनी चाहिए और ग्राम पंचायत की ओर से शुक्रवार से रविवार रात्रि तक विशेष पुलिस बल तैनात करने की मांग की गई है।

मनोज कुमार गुप्ता, पुलिस उप अधीक्षक, नवलगढ़ का कहना है कि रात्रि को अचानक भीड़ बढ़ जाने से कुछ देर के लिए अव्यवस्था हुई। कांवड़ियों के साथ आए डीजे लगे वाहनों को लोहार्गल में प्रवेश नहीं दिया जाएगा। साथ ही कांवड़ियों के साथ मोटरसाइकिलों के साइलेंसर हटाकर तेज आवाज करने वाले चालकों व बाइकों को जब्त किया जाएगा। कुंड पर आने वाले श्रद्धालुओं व कांवड़ियों को किसी प्रकार की असुविधा नहीं हो इसके लिए सरपंच, मंदिरों के पुजारियों व ग्रामीणों को साथ लेकर तथा पुलिस जाब्ता बढ़ाकर व्यवस्थाओं को सुगम व सुरक्षित किया जाएगा। जिससे रविवार रात्रि को हुई घटना जैसी पुनरावृत्ति नहीं हो।

तीर्थराज लोहार्गल धाम के सूर्य कुंड पर अव्यवस्थायें फैली हुई हैं।

राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल
2-2,ए झालाना डूंगरी,जयपुर फोन 0141-2711237, 2703657, 2700540 फैक्स : 0141-2710362 email: secretary.rstb@rajasthan.gov.in

खुली बोली प्रतियोगिता से दर अनुबंध
निविदा सूचना संख्या 334

मण्डल कार्यालय में सेवाप्रदाता एजेन्सी के माध्यम से मण्डल कार्यालय उपयोग हेतु कम्प्यूटर, लैपटॉप एवं लेजर प्रिन्टर क्रय हेतु फर्मो से सीलबंद बोलियों दिनांक 06.08.2024 दोपहर 12.00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। बोली की अनुमानित लागत 25.00 लाख रूपये है।

बोली से संबंधित विवरण एवं शर्तें वैबसाईट **http://sppp.rajasthan.gov.in, https://eproc.rajasthan.gov.in** पर देखी एवं डाउन लोड की जा सकती है।

UBN No. : TBB2425GLOB00022

राज.संवाद/सी/24/2981 सचिव

कार्यालय नगर परिषद बून्दी

क्रमांक:– 1773 दिनांक:– 26.07.2024

–:: निविदा सूचना ::–

नगर परिषद बून्दी द्वारा जारी निविदा सं0: निर्माण/2024–25/1767 दिनांक 26/07/2024 की निविदा दिनांक 26/07/2024 से दिनांक 05/08/2024 शाय: 6.00 बजे तक ऑनलाईन विक्रय की जावेगी। निविदा दिनांक 06/08/2024 को 3.00 बजे तक प्राप्त की जावेगी तथा निविदा दिनांक 06/08/2024 को 04.00 बजे ऑनलाईन खोली जावेगी। विस्तृत शर्ते व विवरण निविदा sppp.rajasthan.gov.in/eproc.rajasthan.gov.in पर **DLB2425WSOB04196,** तथा कार्यालय समय मे किसी भी कार्यदिवस को नगर परिषद मे देखा जा सकता है।

आयुक्त नगर परिषद, बून्दी

राज.संवाद/सी/24/2955

कार्यालय कृषि उपज मण्डी समिति नदबई जिला भरतपुर (राज0)
E-mail - Kums.nadbai@rajasthan.gov.in

क्रमांक :– 9298378 दिनांक :– 26.07.2024

बोली आमंत्रण सूचना संख्या–03/2024–25
NIB–DAM 2425A0240

ईच्छुक बोलीदाताओं से लैब ऑपरेटर ठेका, बागवानी व्यवस्था ठेका, प्रकाश व्यवस्था मय मोटर पम्प चालक ठेका, डाटा इन्टरनेट ठेका, प्याऊ पर पानी पिलाने का कार्य हेतु बोली /निविदा दिनांक 06.08.2024 सांय 04:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा के सबंध मे अन्य विवरण राजस्थान राज्य की उपापन पोर्टल https://sppp.rajasthan.gov.in पर और विभागीय वेबसाईट www.agriculture.rajasthan.gov.in/dam पर देखे जा सकते है।

क्रमशः UBN – DAM2425SSOB00551, DAM2425SSOB00552, DAM2425SSOB00553, DAM2425SSOB00554, DAM2425SSOB00555

राज.संवाद/सी/24/3016 प्रशासक सचिव

कार्यालय नगर निगम, अजमेर
पृथ्वीराज मार्ग, अजमेर

क्रमांक :स्टोर (प्रशा.)/17 दिनांक :– 27.07.2024

ई–निविदा सूचना

एक वर्ष के लिए इस कार्यालय में जॉब वर्क आधार पर कम्प्यूटर सिस्टम मय प्रशिक्षित कार्मिक (मशीन विद मैन) दर अनुबंध पर सेवा उपलब्ध करवाने हेतु विनिर्दिष्टत पंजीकृत बोलीदाता/संवेदक जो की राजस्थान अनुबंधित श्रमिक (नियमन एवं उन्मूलन) अधिनियम 1970, कर्मचारी भविष्य निधि अधिनियम 1952, कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम 1948, वस्तु एवं सेवा कर (GST) आय कर (पैन नम्बर) एवं राजस्थान दुकान एवं वाणिज्यिक संस्थान अधिनियम 1958, या इण्डियन पार्टनरषिप एक्ट 1932 के अन्तर्गत या इण्डियन कम्पनीज एक्ट 1956 अन्तर्गत पंजीकृत हो, से निम्नलिखित प्रकार से खुली बोली आमंत्रित की जाती है:–

क्रम	विवरण	कार्य की अनुमानित लागत	बोली प्रतिभूति राशि	बोली प्रपत्र शुल्क/आरआईएसएल प्रोसेसिंग फीस	ऑनलाईन बोली प्रपत्र भरने की अन्तिम तिथि व समय	ऑनलाईन तकनीकी बोली खोलने की तिथि व समय
1.	65 कम्प्यूटर सिस्टम मय प्रशिक्षित कार्मिक(मैन विद मशीन)	91.00 लाख रूपये	1.82 लाख	2000/– 1500/– प्रोसेसिंग फीस	06.08.2024 को मध्यान्ह 12 बजे तक	06.08.2024 को दोपहर 1 बजे

1. खुली बोली आमंत्रण सूचना विस्तृत आमंत्रण सूचना मय बोली दस्तावेज राजस्थान राज्य लोक उपापन पोर्टल http://sppp.rajasthan.gov.in, eproc.rajastan.gov.in पर भी देखा जा सकता है।
2. बोली प्रतिभूति, बोली प्रपत्र शुल्क, प्रोसेसिंग फीस राशि निगम द्वारा उपलब्ध कराई बैंक खातों में जमा करानी होगी।
3. किसी भी बोली को स्वीकार/अस्वीकार करने या किसी बोली को निरस्त करने का उपापन समिति का अधिकार सुरक्षित हैं।

NIB :- ANN2425A0073
UBN:- ANN2425SSLOB00089

उपायुक्त नगर निगम, अजमेर

राज.संवाद/सी/24/3010

राजस्थान सरकार
कार्यालय खनि अभियन्ता, खान एवं भूविज्ञान विभाग, जयपुर
पंचम तल, खनिज भवन, तिलक मार्ग, सी स्कीम जयपुर 302 005
दूरभाष नं. 0141-2227404 Email: me.jaipur@rajasthan.gov.in

क्रमांक: खअ/जय/निविदा-05/2025/853 दिनांक : 24.07.2024

नीलामी सूचना प्रकाशन 05/2024-25

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि जयपुर जिले के विभिन्न राजस्व ग्रामों के खातेदारी/सरकारी खसरों में अवैध खनन/निर्गमन चैकिंग के दौरान एमएमसीआर 2017 के नियम 54 व 60 के तहत जब्तशुदा खनिज चेजा पत्थर/क्वार्टज खनिज जैसी भी, जितनी भी, जहां भी है, उसी स्थिति में नीलामी हेतु दरें सीलबंद लिफाफे में आमंत्रित की जाती है। जिनका विवरण निम्न तालिका व विभागीय बेवसाईट www.mines.rajasthan.gov.in, Portal https://sppp.rajasthan.gov.in एवं कार्यालय नोटिस बोर्ड पर उपलब्ध है। उक्त नीलामी में भाग लेने हेतु नीलामी प्रपत्र 1,000/- रु का डी.डी./बैंकर्स चैक खनि अभियंता जयपुर (MINING ENGINEER JAIPUR) के नाम से जमा कराकर किसी भी कार्यदिवस में दिनांक 13 अगस्त 2024 (दोपहर 3.00 बजे) तक कार्यालय खनि अभियंता, पंचम तल, खनिज भवन, तिलक मार्ग, सी स्कीम जयपुर से प्राप्त किये जा सकते है।

नीलामी हेतु खनिज चेजा पत्थर समूहों का संक्षिप्त विवरण-

क्र. सं.	तहसील, राजस्व ग्राम एवं खसरा नंबर जहाँ खनिज पढ़ा हुआ है	खनिज का नाम	खनिज की अनुमानित मात्रा	बयाना / अमानता राशि	न्यूनतम बोली राशि (रू.)/ (प्रति टन)
1	बस्सी, घाटा खसरा संख्या 216	चेजा पत्थर	1110	9768.00	440.00
2	बस्सी, दयारामपुरा खसरा संख्या 110/1	चेजा पत्थर	1293	11378.00	440.00
3	बस्सी, दयारामपुरा खसरा संख्या 119	चेजा पत्थर	6643.62	5864.00	440.00
4	बस्सी, दयारामपुरा खसरा संख्या 116,120 व 200 / 39	चेजा पत्थर	7800	68640.00	440.00
5	बस्सी, दयारामपुरा खसरा संख्या 103	चेजा पत्थर	960	8448.00	440.00
6	बस्सी, दयारामपुरा खसरा संख्या 10	चेजा पत्थर	450	3960.00	440.00

नीलामी हेतु खनिज क्वार्टज समूहों का संक्षिप्त विवरण-

क्र. सं.	तहसील, राजस्व ग्राम एवं खसरा नंबर जहाँ खनिज पढ़ा हुआ है	खनिज का नाम	खनिज की अनुमानित मात्रा	बयाना / अमानता राशि	न्यूनतम बोली राशि (रू.)/ (प्रति टन)
1	बस्सी, घाटा खसरा संख्या 216	क्वार्टज	150	4050.00	1350.00
2	बस्सी, दयारामपुरा खसरा संख्या 10	क्वार्टज	50	1350.00	1350.00

आठ समूहों (खातेदारी/सरकारी खसरे) में पड़े जब्तशुदा चेजा पत्थर/क्वार्टज की प्रत्येक समूह के लिए अलग-अलग बोली दरें सीलबंद लिफाफे में दिनांक 13 अगस्त 2024 (सायंकाल 5.00 बजे) तक प्राप्त की जायेगी। निर्धारित समय तक प्राप्त सीलबंद लिफाफे कमेटी द्वारा दिनांक 14 अगस्त 2024 को प्रात: 11.00 बजे उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष खोले जायेगे। नीलामी की शर्ते एवं विस्तृत जानकारी विभागीय बेवसाईट www.mines.rajasthan.gov.in एवं पोर्टल http:s://sppp.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध रहेगी व किसी भी कार्यदिवस में कार्यालय समय में नोटिस बोर्ड पर देखी जा सकती है।

UBN - MIN2425GLOB00018

DIPR/C/6603/2024 खनि. अभियंता जयपुर

भजनलाल शर्मा ने प्रदेशवासियों को दी कई सौगातें

भरतपुर व बीकानेर यू.आई.टी. होंगे विकास प्राधिकरण, चतुर्थ श्रेणी के पदों पर होगी भर्ती

- **वित्त एवं विनियोग विधेयक पर चर्चा का जवाब दिया मुख्यमंत्री ने**
- **एन.एफ.एस.ए. के लाभार्थियों को 450 रुपये में गैस सिलेण्डर**
- **1 सितंबर 2024 से लागू होंगी वेतन विसंगति संबंधी सिफारिशें**
- **बार काउंसिल को एक बारीय सहायता के रूप में 7 करोड़ 50 लाख रुपये**
- **द्रव्यवती नदी के विकास के लिए नवीन योजना बनाई जाएगी**

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि 450 रुपये में एलपीजी सिलेण्डर की योजना का दायरा बढ़ाते हुए अब प्रदेश में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के सभी लाभार्थियों को 450 रुपये में एलपीजी सिलेण्डर दिया जाएगा। अब तक प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना एवं बीपीएल श्रेणी के परिवारों को इसका लाभ मिल रहा था।

मुख्यमंत्री ने सोमवार को राजस्थान विनियोग एवं वित्त विधेयक पर चर्चा के प्रत्युत्तर के दौरान गत सरकार में गठित कर्मचारी वेतन विसंगति परीक्षण समिति की सिफारिशों को लागू करने, पुलिस, आरएसी, जेल प्रहरी, वन रक्षक में अग्निवीर युवाओं को नियुक्ति का प्रावधान, भरतपुर एवं बीकानेर में विकास प्राधिकरण सहित कई महत्वपूर्ण घोषणाएं की। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी गरीब, पिछड़ा एवं अंतिम छोर में बैठे व्यक्ति के उत्थान के लिए 24 गुणा 7 कार्य करते हैं। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने भी सर्वजनहिताय की सोच वाला, समाज के सभी वर्गों-युवा, किसान, महिला, मजदूर, गरीब, असहाय, उपेक्षित और अंतिम छोर पर खडे.व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान लाने वाला बजट दिया है। इस बजट के 10 संकल्पों से हम प्रदेशवासियों की खुशहाली के साथ विकसित राजस्थान का निर्माण करेंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 25 जून 1975 भारत के लोकतंत्र में काला दिवस था। उस दिन पूर्व प्रधानमंत्री स्व. इंदिरा गांधी ने अपना पद बचाने के लिए लोकतंत्र की हत्या की। नेताओं को मीसा कानून के तहत जेल में डाला, न्यायालय के अधिकारों पर कुठाराघात किया और मीडिया पर सेंसरशिप लागू की। साथ ही 1953 से 2014 के बीच 50 बार से अधिक राज्यों में चुनी हुई सरकारों को बर्खास्त किया। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार लोकतांत्रिक मूल्यों पर विश्वास करती है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार जनहित का काम करती है, नाम बदलने का राजनीति नहीं। पूर्ववर्ती सरकार ने अटल सेवा केन्द्र का नाम राजीव गांधी सेवा केन्द्र करने एवं अन्नपूर्णा रसोई योजना का नाम बदलकर इंदिरा रसोई योजना करने का कार्य किया गया।

उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ठोस कार्य करने की नीति के साथ आगे बढ़ रही है, वहीं पूर्ववर्ती सरकार के समय में केवल थोथी घोषणाएं हुई। पशुधन बीमा योजना में पशुपालकों का रजिस्ट्रेशन किया लेकिन एक भी पशु का बीमा नहीं किया गया। वहीं प्रतापगढ़, जालौर एवं राजसमंद में मेडिकल कॉलेज खोलने, फिरोजपुर फीडर की मरम्मत के कार्य, जयपुर में विश्वकर्मा एमएसएमई, केन्द्रीय बस स्टैंड-सिंधी कैम्प को मल्टी मॉडल इंटीग्रेटेड आईएसबीटी हब के रूप में विकसित करने सहित कई घोषणाओं की क्रियान्विति नहीं हुई।

उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने अल्प अवधि में 45 हजार से अधिक पदों के लिए भर्तियों के विज्ञापन प्रकाशित किये हैं। लगभग 20 हजार युवाओं को सरकारी नौकरी भी प्राप्त हो चुकी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पूर्ववर्ती सरकार के समय में ईआरसीपी (पूर्वी राजस्थान कैनाल प्रोजेक्ट) के लिए भी कोई एमओयू नहीं किया गया। साथ ही, यमुना जल समझौते के लिए एक मांग पत्र भी नहीं लिखा गया। वहीं हमनें प्रदेशहित में इन योजनाओं पर कार्य प्रारंभ किया।

इस दौरान शर्मा ने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना 4.0 के अंतर्गत प्रदेश की ढाई हजार से अधिक ग्रामीण बसावटों को सड़क से जोड़ने का प्रावधान करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार प्रकट किया। उन्होंने प्रदेश में सड़कों के निर्माण एवं उन्नयन संबंधी कार्यों के लिए 1 हजार 100 करोड़ रुपये के अधिक की राशि के कार्यों की घोषणा की। उन्होंने कहा कि 2 वर्षों में 1 हजार करोड़ रुपये व्यय कर 10 हजार से अधिक आबादी वाले ग्रामीण क्षेत्रों में सीमेंट कंक्रीट के अटल प्रगति पथ निर्मित किए जाएंगे। उन्होंने बड़े शहरों में सार्वजनिक परिवहन के लिए 500 के स्थान पर 1000 ई-बस उपलब्ध करवाये जाने की घोषणा की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि भरतपुर एवं बीकानेर यूआईटी का उन्नयन कर वहां विकास प्राधिकरण का गठन करने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि नगरीय निकायों में जन सुविधा के कार्य समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण सम्पादित करने के उद्देश्य से जिला स्तर पर जिला नगरीय आयुक्त की नियुक्ति की जाएगी। उन्होंने कहा कि द्रव्यवती नदी के विकास के लिए नवीन योजना बनाई जाएगी। उन्होंने 10 हजार से अधिक आबादी वाले कस्बों एवं निकटवर्ती गांवों को शामिल करते हुए 100 कलस्टरों में चरणबद्ध रूप से फेकल स्लज मैनेजमेंट के कार्य एवं दौसा शहर में सीवरेज मास्टर प्लान, सूरजगढ़ (झुंझुनूं), सांगोद (कोटा) में सीवरेज लाईन के कार्य, चेचट एवं खैराबाद कस्बों में क्षतिग्रस्त नालों की सफाई एवं पुनर्निर्माण कार्यों की घोषणा भी की।

शर्मा ने प्रदेश में पेयजल सुविधा हेतु बीसलपुर पेयजल योजना में अजमेर (फेज-3)-जयपुर (फेज-2) के लिए कॉमन इंटेक वैल मय ट्रांसमिशन लाइन के निर्माण सहित पेयजल संबंधी 9 कार्य 540 करोड़ रुपये की लागत से करवाये जाने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि पेयजल की गुणवत्ता एवं स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए वाटर टेस्टिंग लैब्स को राष्ट्रीय स्तर का बनाकर एनएबीएल से मान्यता प्राप्त करने हेतु 15 करोड़ 50 लाख रुपये व्यय किए जाएंगे। साथ ही, वाटर टेस्टिंग सेंपल्स को जीओ टेगिंग कर ऑनलाइन किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश को ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक और कदम बढ़ाते हुए एससीआईएल और गेल से एमओयू करते हुए 4100 मेगावाट क्षमता का सृजन किया जाएगा। उन्होंने किसानों के खेत पर कुसुम परियोजना/हैम मॉडल के माध्यम से 1000 मेगावाट अतिरिक्त ऊर्जा उत्पादन किए जाने की घोषणा की। साथ ही, प्रदेश में हैम मॉडल पर बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली के माध्यम से चरणबद्ध रूप से 2000 मेगावाट विद्युत उत्पादन क्षमता सृजित की जाएगी। उन्होंने ऊर्जा उत्पादन में निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन देने के लिए कैप्टिव पावर उत्पादन की सीमा 100 प्रतिशत से बढ़ाकर 200 प्रतिशत करने एवं विभिन्न क्षमता के 4 जीएसएस स्थापित किए जाने की घोषणा भी की।

शर्मा ने युवा उद्यमिता प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत 6 प्रतिशत ब्याज पुनर्भरण हेतु ऋण की सीमा बढ़ाकर 2 करोड़ रुपये किए जाने, पीएम विश्वकर्मा योजना के अंतर्गत दस्ताकारों को दिये जा रहे 5 प्रतिशत की दर पर ऋण हेतु 2 प्रतिशत अतिरिक्त ब्याज अनुदान दिये जाने, खुशियारा (बारां) एवं पण्डेर (जहाजपुर)-शाहपुरा में औद्योगिक पार्क एवं अजमेर में आईटी पार्क स्थापित किये जाने की घोषणा की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि युवाओं की स्किलिंग एवं अप्रेंटिसशिप के लिए पीएम पेकेज के अंतर्गत प्रदेश के ढाई लाख से अधिक युवाओं को लाभान्वित किया जाएगा। उन्होंने भर्तियों में लगने वाले समय को कम करने के उद्देश्य से दस्तावेज सत्यापन विभागीय स्तर पर कराये जाने एवं विज्ञप्ति उपरांत रिक्तियों की संख्या में 50 प्रतिशत वृद्धि के प्रावधान को बढ़ाकर 100 प्रतिशत किये जाने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि चतुर्थ श्रेणी की भर्ती के नियमों में परिवर्तन किया जाकर इन पदों पर भर्ती की जाएगी। उन्होंने सीईटी के प्रावधानों में बदलाव करते हुए क्वालीफिकेशन हेतु सभी श्रेणियों के लिए न्यूनतम अंक 40 प्रतिशत एवं एससी-एसटी के लिए 35 प्रतिशत अंक किये जाने की घोषणा की। उन्होंने कालवाड़, बनीपार्क (जयपुर) सहित 6 नवीन महाविद्यालयों, 3 नवीन कन्या महाविद्यालयों, बालाहेड़ा (महवा-दौसा) में कृषि महाविद्यालय, 2 पॉलिटेक्निक एवं एक महिला पॉलिटेक्निक सहित शिक्षा के विस्तार की दृष्टि से कई महत्वूपर्ण घोषणाएं भी की।

शर्मा ने कहा कि आरयूएचएस का उन्नयन करते हुए एम्स दिल्ली की तर्ज पर राजस्थान इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की स्थापना की जाएगी। उन्होंने प्रदेश में राजस्थान इलेक्ट्रोपैथी चिकित्सा पद्धति अधिनियम-2018 के अंतर्गत इलेक्ट्रोपैथी बोर्ड का गठन किये जाने की भी घोषणा की। उन्होंने श्रीगंगानगर एवं मेडिकल कॉलेज कोटा में कैंसर मरीजों के लिए लीनियर एक्सलरेटर मशीनें उपलब्ध करवाने सहित विभिन्न चिकित्सा संस्थानों की स्थापना एवं क्रमोन्नयन की घोषणा भी की।

मुख्यमंत्री ने राजस्थानी साहित्य को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष विजयदान देथा साहित्य उत्सव मनाने सहित विभिन्न आस्था केन्द्रों, पेनोरमा एवं बावड़ी संबंधी विकास कार्यों के लिए भी घोषणाएं की। उन्होंने कहा कि जयपुर एवं जोधपुर में राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के नवीन क्षेत्रीय कार्यालय शुरू किए जाएंगे। उन्होंने एक हजार करोड़ रुपये से अधिक की राशि से 2 लाख 50 हजार हैक्टेयर क्षेत्रफल को सिंचित किए जाने के लिए विभिन्न सिंचाई संबंधी कार्यों करवाये जाने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि किसानों को फसल, फसली रोग एवं विपणन संबंधी जानकारी ऑनलाइन उपलब्ध करवाने के लिए 40 करोड़ रुपये का प्रावधान कर राज किसान साथी प्लेटफॉर्म विकसित किया जाएगा। उन्होंने पंजीकृत गौशालाओं को देय अनुदान में 10 प्रतिशत की वृद्धि, 2 हजार दुग्ध संकलन केन्द्र खोलने, पशु चिकित्सा संस्थानों की स्थापना एवं क्रमोन्नयन, परबतसर (डीडवाना-कुचामन), सेड़वा (चौहटन) एवं भाड़ोती (सवाईमाधोपुर) में कृषि मंडी खोलने तथा 150 बीज बैंकों की स्थापना सहित विभिन्न घोषणाएं की।

शर्मा ने केन्द्रीय सशस्त्र बलों की तर्ज पर अग्निवीर युवाओं को पुलिस, आरएसी, जेल प्रहरी, वन रक्षक में नियुक्ति दिए जाने का प्रावधान करने की घोषणा की। उन्होंने प्रदेश में 100 सीटर राज्य स्तरीय अभय कमांड सेंटर की स्थापना करने, तिजारा (खैरथल) में बॉर्डर होमगार्डस की एक कंपनी तैनात किए जाने, अजमेर/जयपुर स्थित राजस्व मंडल एवं कर बोर्ड का एकीकरण किये जाने, डीड राइटर्स की संख्या दोगुनी कर 5 हजार किये जाने, विभिन्न प्रशासनिक, पुलिस इकाईयों एवं न्यायालयों की स्थापना एवं क्रमोन्नयन सहित अन्य महत्वपूर्ण घोषणाएं भी की। उन्होंने बार काउंसिल को एक बारीय सहायता के रूप में 7 करोड़ 50 लाख रुपये प्रदान करने की घोषणा की।

मुख्यमंत्री ने गत सरकार द्वारा गठित कर्मचारी वेतन विसंगति परीक्षण समिति की वेतन सुधार, वेतन विसंगति संबंधी शेष सिफारिशों को 1 सितंबर, 2024 से लागू करने, राजस्थान कॉन्ट्रेक्चुअल हॉयरिंग टू सिविल पोस्ट्स रूल्स-2022 के अंतर्गत सृजित पदों के नियमित पदों में परिवर्तित किये जाने पर नियुक्ति हेतु 5 वर्ष के अनुभव की निर्धारित पात्रता अवधि में वर्ष 2024-25 में 2 वर्ष की छूट प्रदान किये जाने की घोषणा की। उन्होंने पेंशनर्स को राहत प्रदान करते हुए 70 से 75 वर्ष के पेंशनर्स के लिए 5 प्रतिशत अतिरिक्त भत्ता दिए जाने की घोषणा की।

बोनस अंक नहीं देने पर मांगा जवाब

जयपुर। हाईकोर्ट ने फार्मासिस्ट भर्ती-2023 में अभ्यर्थी को बोनस अंक नहीं देने पर प्रमुख चिकित्सा सचिव और स्वास्थ्य निदेशक सहित स्थानीय सीएमएचओ से जवाब तलब किया है। जस्टिस महेन्द्र गोयल की एकलपीठ ने यह आदेश रजनीश भारती की याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता रामप्रताप सैनी ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता ने प्लेसमेंट एजेंसी के जरिए काम किया था। उसके पास करोना काल और उसके बाद का अनुभव प्रमाण पत्र है। इसके बावजूद भी उसे अनुभव के बोनस अंकों का लाभ नहीं दिया गया और दस्तावेज सत्यापन के बाद उसे चयन प्रक्रिया से बाहर कर दिया गया।

पांच जिलों में चांदीपुरा वायरस के लिए अलर्ट

जयपुर । गुजरात से सटे जिलों में इन दिनों चांदीपुरा वायरस का खतरा बढ़ गया है। पिछले कुछ दिनों से डूंगरपुर, उदयपुर के एरिया में पॉजिटिव केस मिलने के बाद स्वास्थ्य विभाग ने 5 जिलों के सीएमएचओ को अलर्ट भेजकर संदिग्ध एरिया में मॉनिटरिंग व सर्वे करवाने के निर्देश दिए हैं।

वहीं, एसएमएस मेडिकल कॉलेज में भी इसकी जांच शुरू हो गई है। जयपुर में अब तक इसके चार संदिग्ध मरीजों की जांच की जा चुकी है, लेकिन अच्छी बात ये है कि इन सभी की रिपोर्ट नेगेटिव आई है। स्वास्थ्य विभाग के निदेशक डॉ. रवि प्रकाश शर्मा ने बताया कि इस महीने चांदीपुरा वायरस के पॉजिटिव केस मिलने के बाद से अब तक 13 संदिग्ध मरीजों के सैंपल सीमावर्ती जिलों से पुणे भिजवाएं है। जिनमें से 1 की रिपोर्ट रविवार को पॉजिटिव आई थी। पॉजिटिव आया 3 साल का ये बच्चा अभी डूंगरपुर मेडिकल कॉलेज के हॉस्पिटल में भर्ती है। उसकी तबीयत अब ठीक है। वहीं, 8 संदिग्धों की रिपोर्ट नेगेटिव आ चुकी है। शेष की रिपोर्ट आना अभी बाकी है। डॉ. शर्मा ने बताया कि डूंगरपुर, बांसवाड़ा, उदयपुर, जालोर, सिरोही जिलों के सीएमएचओ को विशेष रूप से एक्टिव रहने के निर्देश दिए हैं। इन जिलों में ही सबसे ज्यादा इस वायरस के फैलने की आशंका है। जयपुर एसएमएस मेडिकल कॉलेज में पीडियाट्रिक डिपार्टमेंट के एसोसिएट प्रोफेसर डॉक्टर प्रियांशु माथुर ने बताया कि ये वायरस सबसे ज्यादा मच्छर और मच्छी के काटने से फैलता है। अभी इसका खतरा फिलहाल गुजरात से लगते जिलों में है। इस बीमारी में बच्चे के एकदम से तेज बुखार तो आता ही है साथ में उल्टी-दस्त की शिकायत रहती है। इसके अलावा बच्चों में अचानक बेहोश होने और दौरे पड़ने की भी स्थिति आती है। डॉ. माथुर ने बताया कि इस वायरस की मोर्टलिटी रेट भी 20 से 40 फीसदी के बीच है, जो बहुत ज्यादा है। जयपुर में इस तरह के लक्षण वाले बच्चों जो जे.के. लोन हॉस्पिटल में आ रहे है। उनकी डॉक्टर मॉनिटरिंग कर रहे है। ऐसे संदिग्ध मरीजों के सैंपल लेकर उनकी टेस्टिंग भी करवा रहे है। राजधानी जयपुर में इस तरह के चार संदिग्ध मरीजों के सैंपल जांच के लिए एसएमएस मेडिकल कॉलेज आ चुके है। इन सभी की रिपोर्ट नेगेटिव आई है। माइक्रोबायोलॉजी डिपार्टमेंट की सीनियर प्रोफेसर डॉ. भारती मल्होत्रा ने बताया कि ये सैंपल जयपुर के जे. के. लोन से आए थे।

नव नियुक्त राज्यपाल कल शपथ लेंगे

जयपुर। राजस्थान के नव नियुक्त राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागडे 31 जुलाई को राजभवन में आयोजित समारोह में शपथ ग्रहण करेंगे। राज्यपाल बागडे को मुख्य न्यायाधिपति मनिन्द्र मोहन श्रीवास्तव शपथ ग्रहण करवाएंगे। राज्यपाल के सचिव गौरव गोयल ने बताया कि शपथ ग्रहण समारोह राजभवन में सांय 4 बजे आयोजित होगा।

खिलाड़ी लाल बैरवा ने भाजपा की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दिया

जयपुर । लोकसभा चुनाव के दौरान बड़ी संख्या में कांग्रेस नेताओं ने भाजपा का दामन थामा था। हजारों की संख्या में कांग्रेस से भाजपा में शामिल हुए नेता और कार्यकर्ताओं का अब 4 महीने के भीतर ही भाजपा से मोहभंग होने लगा है। कई कार्यकर्ताओं के बाद अब बड़े नेताओं ने भी भाजपा से अपना नाता तोड़ लिया है।

इसी कड़ी में पूर्व सांसद खिलाड़ी लाल बैरवा ने भाजपा की प्राथमिक सदस्य से इस्तीफा दे दिया है। बैरवा ने अपना इस्तीफा नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ के नाम पत्र लिखकर दिया, जिसमें उन्होंने अपने कार्यकर्ताओं के लगातार भाजपा से दूरी का हवाला देते हुए अपना इस्तीफा दिया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की विचारधारा छोड़ भाजपा की विचारधारा से नहीं जुड़ पा रहा हूं। खिलाड़ी लाल बैरवा ने अपने इस्तीफे में भाजपा के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ को संबोधित करते हुए कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री (कांग्रेस) की ओर से अपने चौथी बार मुख्यमंत्री बनने की लालसा में कांग्रेस के दिग्गज नेताओं को कांग्रेस से बाहर करने का विफल प्रयास किया। सचिन पायलट के गुट के लोगों के फोन टेप करवाए, जिसका लोकेश शर्मा (ओ.एस.डी., पूर्व मुख्यमंत्री) सविस्तार बता चुके है। इनमें मेरा भी फोन टेप करवाया गया, जो कि जांच का विषय है। योजनाबद्ध तरीके के साथ मुझे भी पार्टी से निकाला गया, कुछ खास चापलूसों की सिफारिश पर राजस्थान के इतने टुकड़े-टुकड़े कर दिए। बैरवा ने कहा कि पंचायत समिति स्तर के क्षेत्रफल वालों को जिले बना दिए, समाज के टुकड़े कर इतने सामाजिक बोर्ड बना दिए, जिनका स्वयं को भी पता नहीं। 18 फीसदी अनुसूचित जाति के लोगों के लिए आयोग को वैधानिक दर्जे की बात की तो क्या गुनाह कर दिया। पूर्व मुख्यमंत्री के इस तरह के फैसलों की वजह से कांग्रेस छोड़ भाजपा में शामिल हुए, लेकिन काफी प्रयास के बाद भी मैं भाजपा की विचारधारा से खुद को जोड़ नहीं पा रहा। मैंने 33 वर्ष कांग्रेस में सक्रिय राजनीति की है, यह मेरे खून में है।

खुले में मांस बेचने पर 5 दुकान सीज

जयपुर । हैरिटेज निगम की पशु प्रबंधन शाखा ने सोमवार को बिना लाइसेंस व खुले में मीट बेचने वाली दुकानों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए 5 दुकानें सीज की है। हैरिटेज निगम के पशु प्रबंधन शाखा उपायुक्त राकेश कुमार शर्मा ने बताया कि हैरिटेज निगम की ओर से बिना लाइसेंस और खुले में मांस बेचने पर लगातार कार्रवाई की जा रही है। सोमवार को निगम टीम ने गुर्जर की थड़ी, न्यू सांगानेर रोड पर औचक निरीक्षण किया। इस दौरान कई दुकानों पर खुले में मीट बेचा जा रहा था । जिस पर कार्रवाई करते हुए मीट की पांच अवैध दुकानों को सीज किया।

सलूम्बर में दलित शिक्षक और सीकर में दलित छात्र की हत्या का मुद्दा विधानसभा में गूंजा

कांग्रेस विधायकों ने वैल में उतरकर करीब साढ़े 3 घंटे तक हंगामा और नारेबाजी की, हालात इतने बिगड़े कि सदन की कार्यवाही भी 3 बार स्थगित करनी पड़ी

- **विपक्ष का कहना था कि, ''उदयपुर में कन्हैयालाल हत्याकांड के बाद उसके परिजनों को 1 करोड़ रु. मुआवजा और नौकरी दी गई थी, जबकि इस प्रकरण में पीड़ित परिवार को मात्र 21 लाख रु. दिये गए हैं, जो कि भेदभाव है।''**
- **सदन में यह प्रकरण बढ़ता देखकर स्पीकर देवनानी ने व्यवस्था दी कि, ''राज्य सरकार, मंगलवार को इन मुद्दों पर शून्यकाल के बाद जवाब देगी। इसके बाद हंगामा शांत हुआ और सदन की कार्यवाही सुचारु चली।''**

-विधानसभा संवाददाता-

जयपुर । सलूम्बर में दलित शिक्षक और सीकर में दलित छात्र की हत्या का मुद्दा सोमवार को विधानसभा में गूंजा। कांग्रेस विधायकों ने वैल में उतरकर करीब साढ़े 3 घंटे तक हंगामा और नारेबाजी की। हालात इतने बिगड़े की सदन की कार्यवाही 3 बार स्थगित करनी पड़ी। मामला बढ़ता देखकर स्पीकर वासुदेव देवनानी ने व्यवस्था दी कि, ''राज्य सरकार, मंगलवार को इन मुद्दों पर शून्यकाल के बाद जवाब देगी। इसके बाद हंगामा शांत हुआ और सदन की कार्यवाही सुचारु चली।''

दरअसल शून्यकाल में विधायक थावरचंद ने स्थगन प्रस्ताव के तहत, संलबूर में दलित शिक्षक की हत्या का मामला उठाया और कहा कि इस मामले में पीड़ित परिवार को मात्र 21 लाख रुपए का मुआवजा दिया गया हैं, जो कि बहुत कम है। थावरचंद ने कहा कि उदयपुर में कन्हैयालाल हत्याकांड के बाद राज्य सरकार ने उसके परिजनों को एक करोड़ रुपए का मुआवजा एवं एक आश्रित को नौकरी दी थी, जबकि इस मामले में सरकार ने भेदभाव किया है। इस मामले में भी पीड़ित परिवार को 1 करोड़ रुपए का मुआवजा दिया जाये।

इस दौरान नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली सहित विपक्ष के सदस्य भी खड़े हो गए और बोलने लगे, इससे सदन में शोरगुल हुआ। विपक्ष के सदस्य इस मामले को लेकर वेल की तरफ बढने लगे और सदन में हंगामा होने लगा। इस दौरान स्थगन प्रस्ताव के जरिए विधायक पितराम सिंह काला ने सीकर में दलित छात्र की हत्या का मामला उठाया। इसके बाद विपक्ष के सभी सदस्य, दलितों पर अत्याचार के मुद्दे को लेकर सदन की वैल में आ गए और नारेबाजी करने लगे, जिससे सदन में हंगामा बढ़ गया।

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने हंगामा कर रहे सदस्यों को टोका लेकिन विपक्ष के सदस्य नारेबाजी करते रहे। देवनानी ने हंगामा कर रहे विपक्ष के सदस्यों से कहा कि संसदीय कार्यमंत्री जोगाराम पटेल जवाब दे रहे हैं, सभी सदस्य अपनी जगह पर जाये लेकिन विपक्ष के सदस्य वैल में डटे रहे और हंगामा करते रहे। इस पर अध्यक्ष ने कहा कि विपक्ष के सदस्य जवाब सुनना नहीं चाहते हैं, ये सदन में हंगामा मचाना चाहे रहे है।

इस दौरान जोगाराम पटेल जवाब देने के लिए खड़े हुए लेकिन कांग्रेस विधायकों के हंगामे के कारण वापस बैठ गए। हंगामा कम नहीं होता देख जोगाराम पटेल फिर उठे और उन्होंने कहा कि सीकर में छात्र की हत्या के मामले की जांच कराकर 1-2 दिन में इस मामले की पूरी रिपोर्ट सदन को बता दी जायेगी। इसके बाद भी विपक्ष का हंगामा चलता रहा। इसी बीच पर्ची के माध्यम से विधायक गणेशराम बंसल, आदूराम मेघवाल, रामसहाय वर्मा और हरलाल सिंह सहारण ने अपनी बात रखी, लेकिन हंगामे के कारण उनकी कोई भी बात स्पष्ट रुप से सुनाई नहीं दी।

दलित अत्याचार का यह हंगामा बढ़ता देखकर स्पीकर देवनानी ने सदन की कार्यवाही 12:45 बजे (भोजन अवकाश से 15 मिनट पहले) ही 2 बजे तक के लिए स्थगित कर दी। दोपहर 2 बजे जैसे ही सदन की कार्यवाही फिर शुरु होने लगी तो कांग्रेस विधायक वैल में हंगामा करते रहे, इसके चलते सभापति संदीप शर्मा ने 2:06 बजे सदन की कार्यवाही 30 मिनट के लिए स्थगित कर दी। वापस सदन शुरू होने के बाद भी गतिरोध बरकरार रहा तो पुनः 30 मिनट के लिए सदन की कार्यवाही स्थगित कर दी गई।

बाद में दोपहर 3 बजकर 6 मिनट पर सदन की कार्यवाही को शुरू करवाते हुए स्पीकर वासुदेव देवनानी ने व्यवस्था दी कि, राज्य सरकार इस प्रकरण पर मंगलवार को शून्यकाल के बाद जवाब देगी। इसके बाद सदन में हंगामा शांत हुआ और कार्यवाही सुचारु चली।

आई.एन.ए. सोलर का कॉर्पोरेट ऑफिस जयपुर में शुरू हुआ

जयपुर । क्लीन व ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा देने में भारत की प्रतिष्ठित सोलर पैनल मैन्युफैक्चरिंग कंपनी ''इन्सोलेशन एनर्जी लिमिटेड'' (आई.एन.ए. सोलर) ने 28 जुलाई 2024 को न्यू आतिश मार्केट एक्सटेंशन स्थित अपने कॉर्पोरेट ऑफिस ''फ्लुइडकॉन हाउस'' का उद्घाटन किया। दफ्तर का उद्घाटन जयपुर शहर सांसद मंजू शर्मा, पूर्व सांसद रामचरण बोहरा, आई.एन.ए. सोलर के चेयरमैन मनीष गुप्ता व एम.डी. विकास जैन ने किया। कंपनी चेयरमैन मनीष गुप्ता और प्रबंध निदेशक विकास जैन ने बताया कि अब जयपुर स्थित इस कार्यालय पर कंपनी के सभी डिपार्टमेंट के 100 से अधिक कर्मचारी एक साथ बैठ सकेंगे। उन्होंने कहा कि यह नया कार्यालय हमारे व्यापार के विस्तार का हिस्सा है और इसका उद्देश्य हमारे ग्राहकों को उच्च गुणवत्ता की सेवाएं प्रदान करना और हमारे कर्मचारियों को बेहतर सुविधाएं और सेवाएं प्रदान करेगा।

सरकारी योजनाओं व कैशलेस इलाज में फ़र्ज़ीवाड़े का आरोप

जयपुर । चिकित्सक की अनुपस्थिति में चिकित्सक के डॉक्यूमेंट विभाग में लगाकर सरकारी योजनाओं में मरीज़ों के इलाज के नाम पर फर्जीवाड़ा कर खिलवाड़ किया जा रहा है।

प्राईवेट हॉस्पिटल्स एंड नर्सिंग होम्स सोसायटी के प्रेसिडेंट डॉ विजय कपूर ने बताया कि यह अत्यंत गंभीर मामला है। ये कैसे और क्यों हो रहा है और कौन कर रहा है, यह जांच का विषय है। उन्होंने बताया कि ऐसे प्रकरण उनके संज्ञान में लाए गए हैं, जो ज़्यादातर अप्रशिक्षित या झोलाछाप व्यक्तियों द्वारा किए जा रहे हैं। डॉ. कपूर ने कहा कि सरकार की नाक के नीचे खुलेआम धड़ल्ले से सरकारी योजनाओं में ये गोरखधंधा चल रहा है। ऐसे में कैसे कोई नैतिकता से काम करने वाले चिकित्सक, अस्पताल सम्मान जनक और सही तरीक़े से इन योजनाओं में काम कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि सरकारी अधिकारी जानते हुए भी ऐसे प्रकरणों में कार्रवाई क्यों नहीं करते, यह समझ से परे है।

सरकार ने राजस्थान के हक और अधिकार दिल्ली में गिरवी रख दिए : नेता प्रतिपक्ष

जयपुर। विधानसभा में बजट पर चर्चा के दौरान नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि प्रदेश की भाजपा सरकार ने कांग्रेस सरकार के बजट को नया कवर चढ़ाकर पेश किया है। उन्होंने बजट को निराशाजनक बताते हुए कहा कि, सरकार ने राजस्थान के हक और अधिकार दिल्ली में गिरवी रख दिए हैं।

टीकाराम जूली ने कहा कि हमारी सरकार जरूरतमंद परिवारों को 500 रुपए में गैस सिलेंडर दे रही थी। आपने 450 रुपए कर दिए। आपने जनवरी से आज तक इंदिरा रसोई का अनुदान नहीं दिया। हमने बजट में जयपुर मेट्रो फेज-2 की घोषणा की थी। आपने भी वापस यही घोषणा कर दी। ईआरसीपी के लिए हमने 13,500 करोड़ की घोषणा की थी। आपने उसी घोषणा को टुकड़ों में कर दी। नेता प्रतिपक्ष टीमाराम जूली ने कहा कि केंद्रीय बजट से बहुत उम्मीदें थी दो बार राजस्थान ने 25 सांसद भाजपा को दिए इस बार भी 14 सांसद दिए लेकिन केंद्रीय बजट में कुछ नहीं मिला। सरकार बचाने के लिए केंद्र का सारा बजट आंध्र और बिहार ले गए। उन्होंने कहा, डॉक्ट्र किरोडी लाल मीणा ने मंत्री ने इस्तीफा दे दिया, लेकिन वह मंजूर नहीं हुआ। किरोड़ीजी अधिकारी के पास गए। क्या प्रोटोकॉल रहा, सरकार जवाब दे। वहां किरोड़ीलाल मीणा नहीं बल्कि पूरी सरकार गई है। जूली ने कहा कि पीएम ने राजस्थान जैसे शांत प्रदेश की तुलना जलते हुए मध्यप्रदेश से की थी। आज की वित्त मंत्री ने तब दिल्ली में महात्मा गांधी की प्रतिमा के सामने धरना दिया था। आज प्रदेश में महिला अपराध और दलित उत्पीड़न के मामले बढ़े हैं। वित्त मंत्री कब बोलेंगी?

कोचिंग संस्थानों की रिपोर्ट मांगी

जयपुर । जयपुर पुलिस कमिश्नरेट ने सभी थानाधिकारियों को शहर में संचालित सभी कोचिंग संस्थानों की बिल्डिंग व बैसमेंट में जल भराव एवं अग्नि संबंधी आपदा से संबंधित नियमानुसार सुरक्षा प्रमाण पत्र की जांच कर रिपोर्ट सौंपने के निर्देश दिए है। इस संबंध में अतिरिक्त पुलिस आयुक्त, कानून-व्यवस्था कुंवर राष्ट्रदीप ने सभी थानाधिकारियों को निर्देश जारी कर दो दिन में रिपोर्ट सौंपने को कहा है। उन्होंने कहा कि जयपुर में रहने वाल सभी अभिभावक एवं छात्र व छात्राएँ भी अपने कोचिंग संस्थानों में सुरक्षा संबंधित समस्या से जयपुर पुलिस को सूचना देकर अवगत करवा सकते है। इसके लिए पुलिस नियंत्रण कक्ष, जयपुर के टोल फ्री नम्बर 100, 112 पर कॉल कर सकते है।

डॉक्टर्स म्यूजिक प्रीमियम लीग संपन्न

जयपुर (कासं)। राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर जयपुर में 28 जुलाई को डॉक्टर्स की 3 दिवसीय गायन प्रतियोगिता एस.बी.आई. डॉक्टर्स म्यूजिक प्रीमियम लीग सीज़न- 3 ग्रैंड फिनाले के साथ संपन्न हुई। प्रतियोगिता के चैयरमेन डॉ. संजीव गुप्ता ने बताया कि विजेताओं को कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एसबीआई बैंक के डीजीएम व सीडीओ कल्याण गजवेली, गेस्ट ऑफ़ ऑनर एमिटी यूनिवर्सिटी के वीसी डॉ. अमित जैन व बॉलीवुड सिंगर रविंद्र उपाध्याय ने ट्रॉफ़ी प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर दर्शकों की मांग पर उपाध्याय ने अपनी प्रस्तुति दी। लीग के आयोजन सचिव डॉ. अनिल यादव ने बताया कि इस वर्ष प्रतियोगिता में कुल आठ टीमों के 64 गायकों ने 3 दिनों तक प्रतिस्पर्धा करते हुए एक से बढ़कर एक दमदार प्रस्तुतियां दीं। लीग संयोजक डॉ. संदीप निझावन ने बताया कि फाइनल मुकाबले में प्रथम स्थान पाकर टीम आँगन मेडिनोवा ने बाज़ी मारी।

सिलावट समाज की क्रिकेट प्रतियोगिता फाईव स्टार ने जीती

जालोर, (कासं)। जालोर शहर के पानिया नाडा रोड स्थित एमसीसी मैदान में रविवार को सिलावट समाज की ओर से होली डे सिलावट समाज क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। होली डे फाईव स्टार ने होली डे ओल्ड स्टार को हरा कर खिताब जीता।

आयोजन समिति ने बताया कि सिलावट समाज की प्रतिभा तराशने के लिए होली डे क्रिकेट क्लब द्वारा प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता के समापन समारोह के अतिथि शहजाद खां सीनियर नर्सिंग ऑफिसर ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन से प्रतिभाओ को आगे आने का मौका मिलेगा। खिलाड़ी को खेल भावना से खेल खेलना चाहिए। उन्होंने ने समाज की प्रतिभाओं को आगे बढ़कर समाज का नाम देश प्रदेश स्तर पर रोशन करने की बात कही। पूर्व पार्षद व समाज सेवी अयुब खान शेख ने खिलाड़ियों का हौसला अफजाई करते हुए कहा कि समाज की प्रतिभाओं को आगे लाने मे मेरा जो सहयोग होगा। इसके लिए मे हमेशा तत्पर हूँ। इस प्रकार की प्रतियोगिता का आयोजन होना चाहिए। ताकि शिक्षा के साथ खेल में भी आगे बढ़ सके। समाज सेवी रहमान खान ने भी सम्बोधित करते हुए खिलाड़ियों का उत्साह वर्धन किया। प्रतियोगिता में सीनियर वर्ग की तेरह टीमे व जूनियर वर्ग की चार टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के शुभारंभ में अतिथियो ने सभी टीमों के कप्तान से परिचय कर उनका हौसला बढाया। सीनियर वर्ग का फाइनल मैच होली डे फाईव स्टार बनाम होली डे ओल्ड स्टार के बीच खेला गया। जिसमें हॉलीडे ओल्ड स्टार ने पहले बैटिंग करते हुए 5 ओवर में 23 रन का लक्ष्य दिया। इस लक्ष्य का पीछा करते हुए हॉलीडे फाइव स्टार ने दो ओवर में जीत हासिल कर ली। इस तरह हॉलीडे फाइव स्टार ने ओल्ड स्टार को हराकर खिताब पर कब्जा जमाया। होली डे फाईव स्टार के सलीम जावेद मैन ऑफ द मैच का पुरूस्कार प्राप्त किया। वही मैन ऑफ द सीरिज ईमरान खान रहे। वहीं जूनियर वर्ग मे होली डे लिबरेशन आफ टाइगर ने फाईनल मैच जीतकर विजेता बनी। प्रतियोगिता मे विजेता व उपविजेता टीम को अतिथिगण द्वारा नकद पुरूस्कार व ट्राफी प्रदान की गई। प्रतियोगिता में अंपायर की भूमिका सिराजुद्दीन खान,इमरान खान, सलीम जावेद, साबिर खान, हिमायत अली, असलम शेख व स्कोरर की भूमिका असलम खान ने निभाई। वहीं प्रतियोगिता में वसीम अकरम मोनु, अनवर खान ने कमेंट्री का दायित्व निभाया। प्रतियोगिता के सफल आयोजन में सिराजुद्दीन, सलीम जावेद, ईमरान खान, ईरफान खान,एजाज अली की भूमिका महत्वपूर्ण रही। कार्यक्रम के उदघाटन व समापन में गायक कलाकार फारुख शेख दीवाना ने भी रंगा रंग प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर लियाकत अली, हबीब रहमान ,मोहम्मद रफीक शेख, राजू शेख जाकिर खान, रूबाब खान, बरकत खान, जहांगीर खान जानशेर खान, हिदायत खा, अमन, रफीक, वाजिद अली, संजय खान, अब्दुल मुनाफ, मोहसिन खान, शाहनवाज खान, यासर खान, मोहमद अली, अहवान, सीमू, नोहसीन सहित बडी संख्या में खेल प्रेमी मौजूद थे।

जालोर में होली डे सिलावट समाज क्रिकेट प्रतियोगिता में विजेता टीम को अतिथियों ने पुरस्कार दिया। फोटो-राष्ट्रदूत

जोधपुर में बी.आर.टी.एस. बसों के पहिए थमे

जोधपुर, (कासं)। शहर में दौडऩे वाली बीआरटीएस बसों के पहिए सोमवार को थम गए। बसों के संचालन में आ रही बजट की कमी के कारण ये निर्णय लिया गया। सोमवार को इन बसों के चालकों ने चाबियां सौंप दी।

इन बसों का संचालन करने वाली फर्म का कहना है कि नगर निगम उत्तर के निर्देश पर संचालन बंद किया गया है। लंबे समय से निगम प्रशासन और बीआरटीएस बसों का संचालन करने वाली फर्म के बीच तनातनी चल रही है। निगम प्रशासन का कहना है कि बसों के संचालन करने का फंड नहीं है, इसलिए इसे बंद कर दिया गया है। वहीं अब तक पूरे एक साल से बिना पैसे लिए बसों का संचालन करने वाली फर्म ने अब हाथ खड़े दिए हैं। फर्म ने सोमवार से शहर के दो रूट पर चलने वाली बीस बसों का संचालन बंद किया है। संचालनकर्ता फर्म ने सोमवार को निगम कार्यालय में बसों व चाबियों को सुपुर्द कर दिया। हालांकि 3 जुलाई को राज्य सरकार ने बसों के संचालन से संबंधित बकाया पैसा आवंटित कर दिया था, लेकिन इसके बाद भी इन बसों को बंद किया गया है।

शहर में यह बसें सिर्फ दो रूटों पर चल रही थी। एम्स से आरटीओ ऑफिस तक 10 और चौपासनी से बनाड़ तक 10 बसें चलाई जा रही थी जबकि 19 बसें यूं ही खड़ी थी। बता दे कि कुछ साल पहले जोधपुर बस सर्विस लिमिटेड की ओर से शहर में 39 बसों का संचालन शुरू किया थी।

चिकित्सक शिक्षकों ने रोष जताकर नारेबाजी की

बाड़मेर में जिला कलैक्टर निशांत जैन को चिकित्सक शिक्षकों ने ज्ञापन सौंपा। फोटो-राष्ट्रदूत

बाड़मेर, (निसं)। राजमेस से जुडे चिकित्सक शिक्षकों की आठवें दिन सोमवार को भी मांगे नहीं माने जाने पर भारी रोष व्याप्त है। सोमवार की रोज चिकित्सक शिक्षकों ने जमकर नारेबाजी करते हुए मांगों के समर्थन में जिला कलेक्टर निशांत जैन को ज्ञापन सौंपा।

एसोशिएशन के सचिव डॉ अनिल सेङ्गिया व डा पंकज अग्रवाल ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा बजट के दौरान चिकित्सक शिक्षकों के साथ भेदभाव की नीति अपनाई है। पुराने चिकित्सक शिक्षकों को राज्य का दर्जा से दूर रखा है। वहीं आरएसआर रूल्स से वंचित किया गया है। जो अनुचित है। सरकार से अनुरोध है कि उनकी उचित मांगों पर गंभीरता पूर्वक विचार कर इसे खत्म करें, ताकि राज्य सेवा नियम सभी चिकित्सक शिक्षकों पर लागू कर सभी को डॉक्टर्स को समान अधिकार मिले। डॉ दीपक तंवर ने कहा कि यदि समय रहते सरकार द्वारा उनकी मांगे नहीं मानी जाती है तो आंदोलन को प्रदेश स्तर के निर्देशों के अनुरूप तेज व उग्र कर सरकार पर दबाव बनाया जाएगा।

राजमेश से जुडे चिकित्सक शिक्षकों ने मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार व संभागीय आयुक्त के नाम डॉक्टर्स की उचित मांगों के समर्थन में ज्ञापन पत्र भी भेजा। डॉ. दीपक तंवर, डॉ. कमला वर्मा, डॉ. गिरीश बानिया, डॉ. खेताराम सोनी, डॉ. गिरीश कुमार, डॉ. अग्नेश सिंह शेखावत,डा सुरेंद्र सिंह चौधरी, डॉ. मनीष बैरवा, डॉ. सवाई खत्री, डॉ. अलका लूनिया, डॉ. ज्योति पांडे, डॉ. मोतीलाल खत्री, डॉ. भीमराज सिंघवी, डॉ. रमेश कटारिया, डॉ. मदनलाल सोलंकी, डॉ. दिलीप चौधरी सहित कई चिकित्सक शिक्षक मौजूद रहे।

तूरा में छात्राओं को साइकिलें बांटी

तूरा के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में छात्राओं को साइकिलों का वितरण किया। फोटो-राष्ट्रदूत

सायला, (निसं)। सायला के निकटवर्ती तूरा के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में सत्र 2024-25 में 9वीं कक्षा में अध्यनरत छात्राओं को राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध करवाई गई साइकिलों का वितरण किया गया।

इस अवसर पर सायला भाजपा युवा मंडल अध्यक्ष बलवंतसिंह तुरा ने बताया कि शिक्षा के लिए समर्पित राज्य सरकार ने सत्र के प्रारंभ में ही साइकिलों का वितरण करके बालिकाओं के आवागमन को सुगम बनाने का प्रयास किया है। इसी तरह आगे भी सरकारी विद्यालय में बालिकाओं के लिए योजनाओं का लाभ सरकार द्वारा प्रदान किया जाता रहेगा। प्रधानाचार्य महेश बिश्नोई ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा सरकारी विद्यालयों में पढने वाली बालिकाओं को निशुल्क साइकिल के साथ ही सुदूर क्षेत्रों से आने वाले बालक बालिकाओं को ट्रांसपोर्ट वाउचर और पात्र छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति का लाभ भी प्रदान किया जाता है इसी वजह से विद्यालय के नामांकन में भी बढोतरी हुई है एवं ग्रामीण बालक बालिकाओं का रुझान सरकार की विभिन्न लाभकारी योजनाओं के कारण सरकारी विद्यालयों के प्रति बढा है। विगत वर्षों में विद्यालय के मेहनती शिक्षकों की टीम द्वारा लगातार प्रयास करने के कारण बोर्ड परीक्षाओं का परिणाम भी शत प्रतिशत रहा है। नरेंद्र कुमार बडोला, कैलाश प्रसाद महावर, संजय बेरवा, हिमताराम चौधरी, गोवर्धन मीणा, नरपत सिंह, मशीलाल, मेघवाल एवं कैलाश दवे सहित कई जने मौजूद रहे।

आहोर तहसील में पौधारोपण की औपचारिकता

जालोर, (कासं)। जालोर के आहोर तहसील परिसर में राज्य सरकार की ओर से एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत पौधारोपण किया गया। लेकिन तहसील कार्यालय में पहले से लगे पौधे के पास पास ही पौधारोपण कर औपचारिकता पूर्ण कर ली।

आहोर तहसीलदार द्वारा राज्य सरकार के आदेशानुसार तहसील कार्यालय में पौधारोपण किया गया। लेकिन तहसील कार्यालय में काफी संख्या में पेड़ लगे हुए है। उन पेड़ो के पास ही पौधो का रोपण किया गया। तहसील कार्यालय में नीम का बड़ा पेड़ के महज एक फीट की दूरी पर ही पौधे का रोपण कर दिया। वही भी एक अधिवक्ता के चैम्बर में पौधे का रोपण कर दिया। ऐसे में पौधारोपण कार्यक्रम की आड़ में तहसील कार्यालय में महज औपचारिकता की गई।

रात्रि चौपाल आज

जालोर, (कासं)। जिला कलक्टर पूजा पार्थ 30 जुलाई को भीनमाल के कोरा ग्राम में सायं 7 बजे से रात्रि चौपाल करेंगी। अतिरिक्त जिला कलैक्टर शिवचरण मीना ने बताया कि रात्रि चौपाल के निर्धारित कार्यक्रम के तहत मंगलवार को कोरा ग्राम में रात्रि चौपाल के दौरान जिला कलक्टर पूजा पार्थ ग्रामीणों की समस्याओं को सुनकर उनका समाधान करेंगी।

भेटाला गांव की विद्युत संबंधित समस्या बताई

भेटाला की विद्युत समस्या को लेकर शिव सेना ने ए.डी.एम. शिवचरण मीणा ने ज्ञापन दिया। फोटो-राष्ट्रदूत

जालोर, (कासं)। जालोर शिवसेना ने नरसेवा नारायण सेवा अभियान के तहत सोमवार को भेटाला गांव की विद्युत संबंधित समस्या को लेकर अतिरिक्त जिला कलेक्टर शिवचरण मीणा को ज्ञापन दिया।

जालोर जिले के आहोर तहसील के भेटाला गांव में ट्रांसफर जलने के कारण घरों में विद्युत सम्बंधित वोल्टेज कम होने के कारण गांव के लोगों के विधुत उपकरण जैसे-कुलर, पंखा, मोटर, फिज आदि नहीं चल पा रहे हो वही बार बार विधुत उपकरण झल रहे है, जिससे लोगों को प्रतिदिन परेशान होना पड़ रहा है। वही खासकर इस गर्मीयों के मौसम में लोगों को भारी किल्लत का सामना करना पड़ रहा है। वही सही वोल्टेज नहीं आने पर बुजुर्ग लोगों को काफी परेशान होना पड रहा है। जिससे उनकी हालत खराब होती है।

शिवेसना जिला प्रमुख रूपराज पुरोहित, शिवेसना जिला सूचना एवं जनसम्पर्क प्रमुख अमित कुमार ओरण, व अन्य करणसिंह व बाबुलाल, कसनाराम, रामसिंह, दलपतसिंह, प्रवीणसिंह, भरतकुमार, श्रवणसिंह, भंवरलाल आदि मौके पर उपस्थित रहे।

शोध प्रस्तावों के परीक्षण पर कार्यक्रम शुरू

जोधपुर, (कासं)। डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय जोधपुर के कुलपति प्रो.(वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति की अध्यक्षता में तीन दिवसीय इंस्टिट्यूशनल रिसर्च कमेटी की बैठक का शुभारंभ हुआ।

बैठक में उपस्थित सदस्यों एवं छात्र-छात्रों को सम्बोधित करते हुआ कहा कि इस बैठक का उद्देश्य हमारे संस्थान में जारी सभी शोध परियोजनाओं की स्थिति का आंकलन करना और उन्हें और बेहतर बनाने के लिए आवश्यक कदम उठाना है। उन्होंन कहा कि नई शोध परियोजनाओं के लिए अनुदान और संसाधनों का वितरण भी हमारी प्राथमिकता में रहेगा। बैठक के दौरान विभिन्न विभागों से आए शोधकर्ताओं ने अपनी परियोजनाओं के अपडेट प्रस्तुत किए और अपने अनुभव साझा किए। इस अवसर पर विवि के कुलसचिव प्रो.गोविंद सहाय शुक्ल ने कहा कि विवि स्तर पर छात्र-छात्रों को शोध कार्यों के लिए उचित अनुदान राशि दी जाएगी। कमेटी चेयरमैन एवं प्राचार्य प्रो.महेंद्र कुमार शर्मा ने कहा कि हमारे स्नातकोत्तर छात्रों द्वारा किए जा रहे ये शोध कार्य न केवल उनकी अकादमिक यात्रा में महत्वपूर्ण हैं, बल्कि समाज के समग्र विकास में अहम हैं।

महादेव के जयकारे गूंजे

सायला, (निसं)। उपखण्ड मुख्यालय सहित क्षेत्रभर में श्रावण महिने के दूसरे सोमवार को शिवालयों में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। इस मौके विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया गया।

वालेरा स्थित दुदेश्वर महादेव मंदिर मठ में महंत पारस भारती महाराज के सान्निध्य में दुग्ध एवं जलाभिषेक किया। प्रसादी का आयोजन किया। महिलाओं ने शिव-पार्वती के मंगल गीत गाए तथा उपवास किया।

निम्बोरानाथ महादेव मंदिर, लहर भारती कुटिया, बांटेश्वर महादेव, दुदेश्वर महादेवी बगीची, रेवतडा के जलंधरनाथ महादेव मंदिर, आपेश्वर महादेव मंदिर, ओटवाला के नागाजी मंदिर, सुराणा के ओगडनाथ महादेव आदि मंदिरों में श्रद्धालु उमड़े।

मूक बधिर विद्यालय में सेवा-संस्कार कार्यक्रम हुआ

जालोर, (कासं)। भारत विकास परिषद् शाखा जालोर की ओर से रविवार शाम को शहर के सामतीपुरा रोड स्थित महावीर आवासीय मूक बधिर विद्यालय में एक सेवा व संस्कार कार्यक्रम का आयोजन परिषद् के प्रान्तीय उपाध्यक्ष (सेवा) पदमाराम चौधरी, शाखाध्यक्ष राजेन्द्र भूतडा व जिला महिला संयोजक मधु शेखावत की उपस्थिति में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में परिषद् के सदस्य विजय जोशी - सीमा जोशी के पिता ओम जोशी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में विद्यालय के सभी 32 बच्चों को जोशी परिवार के सौजन्य से मिष्ठान के साथ पौष्टिक भोजन कराया गया। परिषद् की महिला सदस्यों सहित उपस्थित पदाधिकारियों ने अपने हाथों से बच्चों को भोजन परोसा व उनके साथ हंसी खुशी के पल बिताकर उनको आल्हादित किया। इस दौरान परिषद् की ओर से सभी बालकों के स्वस्थ व खुशहाल जीवन की मंगल कामना की गयी। प्रान्तीय उपाध्यक्ष पदमाराम चौधरी ने बताया कि बेजुबान व दुनिया के कोलाहल से बेखबर इन बच्चों तक सेवा व संस्कार के भाव पहुंचाना एवं इन बच्चों का भविष्य संवारना ही परिषद् का मूल उद्देश्य है। शाखाध्यक्ष व योग प्रशिक्षक राजेंद्र भूतडा ने बच्चों के समक्ष सरल योगासनों का प्रदर्शन कर उन्हें अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने के लिए प्रेरित किया। इस बीच बालकों ने इशारों- इशारों की भाषा में गीत के साथ सुंदर नृत्य पेश कर सभी को आत्म विभोर कर दिया।

सचिव संतोष कुमार दवे,शाखा महिला संयोजक सीमा जोशी, महेंद्र आनंद वैष्णव, नंदकिशोर जेथलिया शांतिलाल सोनी, भेरूलाल, अशोक सोनी ,जगदीश अग्रवाल, श्यामा भूतडा, चंद्रकला जोशी, प्रीति हाडा, राजूदेवी खाबाणी, कृष्ण , रितिक सहित विद्यालय के शिक्षक दौलत राम, हितेश आदि उपस्थित थे।

केन्द्रीय कारागृह एवं बाल गृहों का निरीक्षण किया

जोधपुर, (कासं)।राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष एवं जिला एवं सेशन न्यायाधीश, जोधपुर महानगर चन्द्र शेखर शर्मा, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव पुखराज गहलोत एवं मुख्य महानगर मजिस्ट्रेट, जोधपुर महानगर श्रीमती नेहा शर्मा द्वारा सोमवार को केन्द्रीय कारागृह, जोधपुर का निरीक्षण किया गया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार निरीक्षण के दौरान केंद्रीय कारागृह के उपाधीक्षक सौरभ स्वामी, जेलर एवं अन्य कारागृह के कर्मचारीगण आदि उपस्थित रहे।

निरीक्षण के दौरान केंद्रीय कारागृह में स्वच्छता, साफ-सफाई की व्यवस्थाओं के साथ-साथ जेल में निरुद्ध बंदियों को उपलब्ध करवाए जाने वाले भोजन की गुणवत्ता, उनके स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधा व उनके लिए उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए गए।

इसी के साथ राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जयपुर के एक्शन प्लान में प्रदत्त निर्देशों की पालना में व चन्द्र शेखर शर्मा के निर्देशानुसार सोमवार को पुखराज गहलोत द्वारा राजकीय सम्प्रेक्षण एवं किशोर गृह, राजकीय बालिका एवं शिशु गृह, बाल बसेरा चाईल्ड केयर होम, बचपन चिल्ड्रन केयर होम, मदर टेरेसा मानसिक विमंदित गृह एवं सिद्धार्थ बाल निकेतन मानसिक विमंदित गृह का मासिक निरीक्षण किया गया।

गृह में निवासरत बच्चों, विमंदित बालक बालिकाओं से वार्तालाप की गई और उनके भोजन, चिकित्सा सुविधा, रहन-सहन व अन्य मूलभूत सुविधाओं की जांच पड़ताल की गई। साफ-सफाई व्यवस्था के लिए आवश्यक निर्देश दिये।

मुकेश व गणपत ने वाको किक बॉक्सिंग में कांस्य जीता

जालोर, (कासं)। जालोर के मुकेश कुमार व गणपत गहलोत ने राष्ट्रीय वाको किक बॉक्सिंग प्रतियोगिता में कांस्य पदक जीत जालौर को गौरवान्वित किया

जिला वाको किक बॉक्सिंग संघ के कोषाध्यक्ष सुरेश शर्मा ने बताया कि मपुसा गोवा में 24 से 28 जुलाई तक राष्ट्रीय सीनियर वाको किक बॉक्सिंग प्रतियोगिता को गोवा एमेच्योर स्पोर्ट्स किक बॉक्सिंग एसोसिएशन व वाको किक बॉक्सिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया के तत्वावधान में आयोजन किया गया है। इस प्रतियोगिता में 51 किलो भार वर्ग में लौ किक इवेंट में मुकेश कुमार व 75 किलो भार वर्ग में फूल कांटेक्ट इवेंट में गणपत गहलोत ने शानदार प्रदर्शन करते हुए दोनों ने कांस्य पदक अर्जित किया। यह दोनों खिलाडी मुक्केबाजी प्रशिक्षक पुष्पेंद्र परमार के सानिध्य में शाह पूजाजी गेनाजी जिला क्रीडा केंद्र स्टेडियम ग्राउंड व स्वर्णागिरी स्पोर्ट्स फाउंडेशन के केंद्र पर प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। राजस्थान किक बॉक्सिंग आर्गेनाइजेशन के महासचिव पुष्पेंद्र गुर्जर ने उज्जवल भविष्य की कामना की। मुकेश व गणपत के कांस्य पदक जीतने पर जिला खेल अधिकारी ओम प्रकाश बारिया, समाजसेवी मुकेश सुंदेशा, क्रीडा भारती के महासचिव भागीरथ गर्ग, राष्ट्रीय शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष शैतान सिंह राजपुरोहित, जिला ओलंपिक संघ के महासचिव लाल सिंह सांखला, जिला योगासन संघ के अध्यक्ष दशरथ चौधरी, टेबल टेनिस संघ के सचिव नाथु सोलंकी, बॉक्सिंग कोच पुष्पेंद्र परमार, अर्जुन सिंह सिंदल, ओमप्रकाश गर्ग, मुनिराज सिंह, भंवर लाल प्रजापत, नारायण सिंह राजपुरोहित, पुखराज माली, गजेंद्र सिंह राजपुरोहित, कैलाश नाथ,रणजीत सिंह, जगदीश सोलंकी, दिनेश पालीवाल शुभकामनाएं दी।

जालोर के मुकेश कुमार व गणपत गहलोत ने राष्ट्रीय वाको किक बॉक्सिंग प्रतियोगिता में कांस्य पदक जीता। फोटो-राष्ट्रदूत

बधाई दी

बालोतरा, (निसं)। ओमप्रकाश माथुर के सिक्किम के राज्यपाल नियुक्त होने पर उनके निवास दिल्ली पहुंचकर भाजपा कार्यकर्ताओं ने शुभकामनाएं प्रेषित की। भाजपा जिला मंत्री खेताराम प्रजापत ने बताया कि भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता पूर्व सांसद पूर्व प्रदेश अध्यक्ष ओम माथुर के राज्यपाल पद पर मनोनयन होने पर आज माथुर के दिल्ली निवास पर भाजपा जिला प्रभारी राजेंद्र बोराणा के नेतृत्व में पहुंचकर गुलदस्ता भेंटकर शुभकामनाएं दी।

अन्नपूर्णा रसोई का निरीक्षण

बालोतरा, (निसं)। अतिरिक्त जिला कलैक्टर बालोतरा नानूराम सैनी ने जसोल फांटा स्थित श्री अन्नपूर्णा रसोई का जायजा लिया।

सैनी ने भोजन की गुणवत्ता, सफाई व्यवस्था, बैठने की व्यवस्था एवं पेयजल सहित अन्य इंतजामों का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने लाभार्थियों से संवाद कर भोजन सहित अन्य व्यवस्थाओं का फीडबैक भी लिया। अतिरिक्त जिला कलक्टर ने श्री अन्नपूर्णा रसोई केंद्र में कार्यरत कार्मिकों को आमजन के लिए परोसे जाने वाले भोजन की थाली की गुणवत्ता बनाए रखने एवं साफ सफाई का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए। उन्होंने साप्ताहिक मेनू, भोजन टोकन व्यवस्था, पेयजल व्यवस्था का भी अवलोकन कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने भोजन कर रहे लाभार्थियों से भोजन की गुणवत्ता के बारे में पूछा एवं स्वयं भी भोजन खाकर पौष्टिकता को जाना।

विभागीय योजनाओं व बजट घोषणाओं के क्रियान्वन पर चर्चा की

जालोर, (कासं)। जिला कलैक्टर जालोर पूजा पार्थ की अध्यक्षता में सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार में साप्ताहिक समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई जिसमें उन्होंने विभागीय योजनाओं व बजट घोषणाओं के संबंध में विभागवार समीक्षा करते हुए अधिकारियों का आवश्यक निर्देश दिए।

जिला कलक्टर पूजा पार्थ ने कहा कि सम्पर्क पोर्टल पर 6 माह से अधिक प्रकरणों का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित कर आमजन को राहत प्रदान करें। उन्होंने कहा कि वृक्षारोपण महाभियान के तहत 1 से 8 अगस्त तक निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आमजन को जागरूक करते हुए वृक्षारोपण कार्य किये जाने के साथ ही 7 अगस्त "हरियाली तीज" को अधिकतम महिलाओं की सहभागिता सुनिश्चित करते हुए अधिक से अधिक पौधारोपण किया जावें। जिला कलैक्टर ने बजट घोषणाओं के संबंध में भूमि आवंटन के लिए विभागीय अधिकारियों को आवश्यकतानुसार भूमि का प्रस्ताव बनाकर भिजवाने के निर्देश दिए। उन्होंने राज्य सरकार के निर्देशानुसार पटवारियों को पटवार मण्डल मुख्यालय में निवास करने तथा ग्राम पंचायत स्तर के कार्मिकों की ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज करवाने की व्यवस्था के निर्देश दिए। उन्होंने अन्तरविभागीय प्रकरणों के संबंध में विभागीय अधिकारियों से चर्चा करते हुए उनका निस्तारण किया। जिला कलैक्टर ने जल जीवन मिशन योजना के तहत पाईपलाईन डालने के लिए तोड़ी गई सीसी व डामर सड़कों की तत्काल मरम्मत करवाने के लिए संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया। उन्होंने जिले के समस्त ब्लॉक शिक्षाधिकारियों को सभी विद्यालयों में सोलर लाईट लगाने के प्रस्ताव संकलित कर भिजवाने की बात कही।

बैठक में अतिरिक्त जिला कलक्टर शिवचरण मीना, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी जवाहर चौधरी, सीएमएचओ डॉ. रमाशंकर भारती, डिस्कॉम के एसई पी.एस.राठौड़, पीडब्ल्यूडी एसई चतुर्भुज खुडीवाल, पीएचईडी के अधीक्षण अभियंता आर.सी.मीना, जिला रसद अधिकारी आलोक झरवाल, महिला एवं बाल विकास विभाग के उप निदेशक दुर्गासिंह उदावत सहित विभिन्न विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

इतना नजदीक आके में पदक से चूक गया, इससे में निराश जरूर हुआ लेकिन यह मेरे लिए प्रेरणादायक है। चौथे स्थान पर रहने से बुरा कुछ नहीं होता परन्तु मैं किस्मत को दोष नहीं दूंगा। पता नहीं मुझसे वो आखिरी शॉट कैसे मिस हो गया। **-अर्जुन बबूता**

ओलिंपिक खिलाड़ी, पदक मिस करने पर दुःख बया किया।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

यशस्वी जायसवाल

श्रीलंका के खिलाफ यशस्वी जायसवाल ने अपने 30 रन की पारी के दौरान खास कारनामा कर दिखाया और साल 2024 के कैलेंडर में इंटरनेशनल क्रिकेट में एक हज़ार रन पूरा करने वाले पहले बल्लेबाज़ बन गए हैं। जायसवाल के बल्ले से साल 2024 में 13 मुकाबले खेले हैं और इस दौरान उनका 63.93 का शानदार औसत रहा है और अपने काबिलियत का बखूबी प्रदर्शन करते हुए उन्होंने 94.54 के स्ट्राइक रेट से 5 अर्धशतक और 2 शतक की बदौलत 1023 रन बनाये हैं। रनों के हिसाब से बात करें तो 1023 में से 740 रन टेस्ट और 283 रन टी 20 में बनाये गए हैं।

क्या आप जानते हैं ?... बेसबॉल में औसतन 108 टांके होते हैं क्रिकेट बाल में 65 से 70 के बीच तथा फुटबॉल में 642 से अधिक टांके लगाये जाते हैं।

आज पांच खेलों में भारतीय खिलाड़ी भाग लेंगे

निशानेबाजी

ट्रैप पुरुष क्वालीफिकेशन: पृथ्वीराज तोंडइमन - दोपहर 12:30 बजे

ट्रैप महिला क्वालीफिकेशन: श्रेयसी सिंह और राजेश्वरी कुमारी - दोपहर 12:30 बजे

10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम कांस्य पदक मैच: भारत (मनु भाकर और सरबजोत सिंह) बनाम कोरिया - एक बजे

हॉकी

पुरुष पूल बी मैच: भारत बनाम आयरलैंड - शाम 4:45 बजे

तीरंदाजी

महिला व्यक्तिगत 1/32 एलिमिनेशन राउंड: अंकिता भकत (शाम 5:15 बजे) और भजन कौर (शाम 5:30 बजे)

पुरुष व्यक्तिगत 1/32 एलिमिनेशन राउंड: धीरज बोम्मादेवरा (रात 10:45 बजे)

बैडमिंटन

पुरुष युगल (ग्रुप चरण): सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी बनाम अल्फियन फजर और मुहम्मद रियान अर्दियांतो (इंडोनेशिया) -शाम 5:30 बजे

महिला युगल (ग्रुप चरण): अश्विनी पोनप्पा और तनीषा क्रास्टो बनाम सेतयाना मपासा और एंजेला यू (ऑस्ट्रेलिया) - शाम 6:20 बजे।

मुक्केबाजी

पुरुषों का 51 किग्रा राउंड ऑफ 16: अमित पंघाल बनाम पैट्रिक चिन्येम्बा (जाम्बिया) - शाम 7:15 बजे।

महिलाओं का 57 किग्रा राउंड ऑफ 32: लेम्बोरिया बनाम नेस्टी पेटेसियो (फिलिपींस) - रात 9:25 बजे

महिलाओं का 54 किग्रा राउंड ऑफ 16: प्रीति पवार बनाम येनी मार्सेला एरियास (कोलंबिया) - देर रात 1:20 बजे (31 जुलाई)

आखिरी क्षणों में पदक से चूके अर्जुन, चौथे स्थान पर रहे

पेरिस, 29 जुलाई। भारत के स्टार निशानेबाज अर्जुन बबूता सोमवार पेरिस ओलिंपिक 2024 खेलों में पुरुषों के 10 मीटर के एयर रायफल के फाइनल मुकाबले में पदक से चूक गए। अर्जुन बबूता 208.4 का स्कोर के साथ चौथे स्थान पर रहे। प्रतियोगिता में चीन के लिहाओ शेंग ने (252.2) के स्कोर के साथ ओलिंपिक रिकॉर्ड बनाते हुए स्वर्ण पदक और मौजूदा विश्व चैंपियन स्वीडन के विक्टर लिंडग्रेन ने (251.4) स्कोर करते हुए रजत और क्रोएशिया के मिरान मैरिसिक ने (230.0) तीसरे स्थान पर रहे हुए कांस्य पदक जीता। अर्जुन ने 10.7 के साथ शुरुआत करते हुए फाइनल में जल्द ही बढ़त बना ली। उन्होंने अपने पहले 10 शॉट्स में 105.0 का स्कोर किया और लिहाओ शेंग (105.8) और क्रोएशिया के मिरान मैरिसिक (105.1) के बाद तीसरे स्थान पर रहे। लेकिन उनके 13वें शॉट पर 9.9 और उनके 20वें और अंतिम शॉट पर 9.5 के स्कोर ने उन्हें पदक की दौड़ से बाहर कर दिया।

ओलिंपिक दिन-3 हॉकी में दूसरी जीत, मनु-सरबजोत, चिराग-सात्विक, लक्ष्य अपने-अपने इवेंट्स में आगे बढ़े

अंतिम लम्हों पर गोल दाग कर हरमनप्रीत ने दी संजीवनी

भारत अर्जेंटीना के बीच मुकाबला ड्रॉ | आज ऑयरलैंड से भिड़ेगा भारत

पेरिस, 29 जुलाई। आखिरी लम्हों में संयम का परिचय देते हुये भारतीय कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने गोल दाग कर न सिर्फ अर्जेंटीना के साथ मैच को बराबरी पर खत्म किया बल्कि अपनी टीम को क्वार्टर फाइनल की रेस में बनाये रखा।

यवेस-डु-मनोइर स्टेडियम में सोमवार को पूल बी मैच में हरमनप्रीत 59वें मिनट में गोल करके अर्जेंटीना के खिलाफ मैच को 1-1 से बराबरी पर लाकर खड़ा कर दिया। अर्जेंटीना के लुकास मार्टिनेज ने मैच के 22वें मिनट में गोल कर अपनी टीम को 1-0 की बढ़त दिला दी थी।

न्यूजीलैंड के खिलाफ अपना पहला गेम 3-2 से जीतने के बाद भारतीयों ने आत्मविश्वास के साथ मैच की शुरुआत की और पहले क्वार्टर में भारतीय फॉरवर्डों ने जोरदार आक्रमण किया हालांकि अर्जेंटीना की रक्षा पंक्ति को चकमा देने में वे विफल रहे। अर्जेंटीना अपना पिछला मैच ऑस्ट्रेलिया से 0-1 से हार गया था।

भारत को पहला पेनाल्टी कार्नर मैच के दसवें मिनट में मिल गया था लेकिन गोल में तब्दील नहीं कर सका। अगले मिनट में अभिषेक ने गोल पर एक शॉट लगाया, लेकिन गेंद क्रॉसबार से टकरा गई। पहला क्वार्टर गोलरहित रहने के बाद, भारत को 19वें मिनट में एक और पेनाल्टी कार्नर मिला, लेकिन अर्जेंटीना के गोलकीपर सैंटियागो ने अच्छा प्रदर्शन करते हुए भारतीय कप्तान को गोल करने से रोक दिया। इस बीच 22वें मिनट में लुकास मार्टिनेज ने गोल करने का प्रयास किया।

डिफेंडर हरमनप्रीत को पछाड़ते हुए सर्कल में जगह बनाते हुए मार्टिनेज ने श्रीजेश के दायीं ओर से गेंद को नेट में डाल दिया। इसके बाद भारत ने कई हमले किये मगर वे अगले 37 मिनट के खेल में गोल करने में नाकाम रहा। अब जबकि भारत एक निश्चित हार की ओर मुड़ चुका था, ऐसे नाजुक मोड़ पर हरमनप्रीत ने शानदार प्रदर्शन और शक्तिशाली ड्रैग के साथ गेंद को सैंटियागो के पार पहुंचाया। देर से किए गए गोल ने स्टैंड में मौजूद भारतीय प्रशंसकों को जश्न मनाने का मौका दे दिया।

भारत को फिर से मनु पर आस

मनु और सरबजोत ने कांस्य के लिए किया क्वालीफाई, रमिता पदक से चूकी

पेरिस, 29 जुलाई। मनु भाकर और सरबजोत सिंह की भारतीय जोड़ी ने पेरिस ओलिंपिक में सोमवार को 10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम स्पर्धा में शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक मुकाबले के लिए क्वालीफाई कर लिया। वहीं 10 मीटर एयर राइफल महिला फाइनल में रमिता जिंदल पदक जीतने से चूक गई।

क्वालीफाईंग राउंड के पहले सेट में मनु और सरबजोत ने 193 अंक, दूसरे सेट में 195 अंक और तीसरे सेट में 192 अंक अर्जित किये। दोनों ने कुल 580 अंक के साथ तीसरे नंबर पर रहे। अब भारतीय मिश्रित टीम मंगलवार को कांस्य पदक के लिए मुकाबला करेगी। इस स्पर्धा में भारत की रमिता जिंदाल आठ महिलाओं के साथ हुई स्पर्धा में एक समय चौथे स्थान पर थीं। लेकिन लय बरकरार रखने में विफल रही और 145.3 अंक सातवें स्थान पर रही। दक्षिण कोरिया की बान ह्योजिन ने महिलाओं की 10 मीटर राइफल निशानेबाजी स्पर्धा में 251.8 अंकों के साथ स्वर्ण पदक जीता।

यह वर्ष 1992 के बाद से दक्षिण कोरिया की किसी एथलीट के लिए इस स्पर्धा में पहला स्वर्ण और ओलिंपिक ग्रीष्मकालीन खेलों के इतिहास में दक्षिण कोरिया की टीम द्वारा जीता गया 100वां स्वर्ण पदक है। स्पर्धा में चीन की 17 वर्षीय हुआंग युटिंग को मिला तथा कांस्य पदक स्विट्जरलैंड की ऑड्रे गोगनियाट ने जीता।

चिराग-सात्विक क्वार्टरफाइनल में, लक्ष्य ने भी जीत दर्ज की

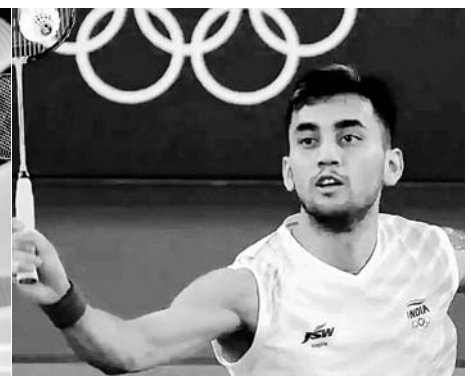

पेरिस, 29 जुलाई। भारत के चिराग शेट्टी और सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी की जोड़ी ने सोमवार को पेरिस ओलंपिक 2024 बैडमिंटन स्पर्धा में पुरुष युगल क्वार्टर फाइनल के लिए क्वालीफाई कर लिया है। एकल मुकाबले में लक्ष्य सेन ने बेल्जियम के शटलर जूलियन कैरागी को हराया।

चिराग-सात्विकसाईराज की जोड़ी का मुकाबला जर्मनी के मार्क लैम्सफस और मार्विन सीडेल से होना था। लैम्सफस चोट के कारण इस जोड़ी को ओलंपिक से हटना पड़ा, जिसके कारण मैच रद्द हो गया।

दुनिया की तीसरे नंबर की चिराग-सात्विक की जोड़ी ने अपने पेरिस 2024 अभियान की शुरुआत 40वीं रैंकिंग वाले फ्रांस के लुकास कोरवी और रोनन लाबर को 21-17, 21-14 से हराकर की थी। वहीं, कोरवी और लाबर को दुनिया के सातवें नंबर के खिलाड़ी इंडोनेशिया के मुहम्मद रियान अर्दियांतो और फजर अल्फियान से हार मिली। फ्रांसीसी जोड़ी के दो मैच हारने के कारण भारतीय जोड़ी ने क्वार्टरफाइनल में आराम से जगह बना ली। सात्विक-चिराग का अगला ग्रुप सी मुकाबला मंगलवार को इंडोनेशियाई जोड़ी से होगा।

इसके अलावा भारत के लक्ष्य सेन ने सोमवार को पेरिस ओलंपिक में ग्रुप एल पुरुष एकल मुकाबले में जीत दर्ज की। सेन ने ला चैपल एरिना में 43 मिनट तक चले मुकाबले में 21-19, 21-14 से जीत हासिल की। भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी इस मुकाबले में 52वीं रैंक के प्रतिद्वंद्वी पर पूरी तरह से हावी रहे और बेल्जियम के शटलर जूलियन कैरागी को शिकस्त दी।

सेन बुधवार को अपने एल ग्रुप मुकाबले में तीसरी वरीयता प्राप्त 26 वर्षीय जोनाटन क्रिस्टी से भिड़ेंगे। अगर सेन अपने इंडोनेशियाई प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ जीत हासिल करते हैं तो वह ग्रुप विजेता के रूप में प्री-क्वार्टर फाइनल में पहुंच जायेंगे। वहीं बैडमिंटन महिला युगल ग्रुप सी मुकाबले में भारत की तनीषा क्रास्टो और अश्विनी पोनप्पा को जापान की नामी मत्सुयामा और चिहारू ने 21-11, 21-12 से हराया। चौथी वरीयता प्राप्त जापानी जोड़ी ने क्रास्टो-पोनप्पा को 48 मिनट में हरा दिया। भारतीय जोड़ी को शनिवार को दक्षिण कोरिया की किम सो येओंग और कोंग ही योंग से सामना करना पड़ा था। क्रास्टो-पोनप्पा मंगलवार को अपने अंतिम ग्रुप -स्टेज मैच में ऑस्ट्रेलिया के सेत्याना मापसा और एंजेला यू से मुकाबला करेगी।

भारतीय पुरुष तीरंदाजी टीम क्वार्टरफाइनल में तुर्कीय से हारी

पेरिस, 29 जुलाई। धीरज बोम्मदेवरा, तरुणदीप राय और प्रवीण जाधव की भारतीय पुरुष तीरंदाजी टीम सोमवार को पेरिस ओलिंपिक 2024 में तुर्कीय के साथ हुये क्वार्टरफाइनल में मुकाबले में 6-2 से हार बाहर हो गई। लेस इनवैलिड्स में पहले दो सेटों में भारतीय तिकड़ी 57-53 और 55-52 से हार गई थी। जबकि तीसरा सेट भी तुर्कीय के पक्ष में जाता दिख रहा था, लेकिन बर्किम टुमर ने आखिर में सात का शॉट लगाते हुए यह सेट अपने नाम कर लिया। भारतीय तीरंदाजों को तुर्क की तिकड़ी मेटे गाजोज, बर्किम टुमर और अब्दुल्ला यिलदिरमिस ने हराया। अंतिम सेट में जाधव ने दो 10 का स्कोर किया लेकिन दो बार के विश्व कप कांस्य पदक विजेता बोम्मदेवरा ने टीम के अंतिम प्रयास में केवल सात का स्कोर कर सके। तुर्कीय ने चौथा सेट 58-54 से जीत लिया।

ओलिंपिक में भारत का टेनिस अभियान समाप्त

पेरिस, 29 जुलाई। एकल वर्ग में सुमित नागल और युगल वर्ग में रोहन बोपन्ना और एन.श्रीराम बालाजी के अपने शुरुआती मैचों में हारने के साथ भारत का पेरिस ओलिंपिक में टेनिस अभियान समाप्त हो गया। पुरुष युगल स्पर्धा में बोपन्ना और बालाजी की गैरवरीय जोड़ी को फ्रांसीसी खिलाड़ियों गेल मोनफिल्स और एडौर्ड रोजर-वेसलिन के खिलाफ चुनौतीपूर्ण मुकाबले का सामना करना पड़ा। भारतीय टीम को 76 मिनट तक चले मुकाबले में 7-5, 6-2 से हार का सामना करना पड़ा। पहले सेट में पांचवें गेम में मोनफिल्स और रोजर-वेसलिन ने सर्विस तोड़ी लेकिन बोपन्ना और बालाजी ने जल्दी ही स्कोर बराबर कर दिया। इससे पहले दिन में दुनिया के 80वें नंबर के खिलाड़ी सुमित नागल का सामना फ्रांस के कोरेंटिन मौटेट आ। ढाई घंटे तक चले मुकाबले में नागल को मैटेट से 6-2, 2-6, 7-5 से हार का सामना करना पड़ा था।

नोवाक जोकोविच ने नडाल को एकतरफा अंदाज में हराया

पेरिस, 29 जुलाई। सर्बिया के नोवाक जोकोविच ने पेरिस ओलिंपिक में अपना पहला स्वर्ण पदक जीतने के अभियान को गति दी और स्पेन के राफेल नडाल के खिलाफ एकतरफा अंदाज में जीत दर्ज करते हुए तीसरे दौर में प्रवेश कर लिया। जोकोविच ने अपने सबसे कड़े प्रतिद्वंद्वी नडाल को लगातार सेटों में 6-1, 6-4 से हराया। दोनों खिलाड़ियों के बीच 2022 में फ्रेंच ओपन के क्वार्टर फाइनल के बाद यह पहला मुकाबला था जिसमें जोकोविच अपने प्रतिद्वंद्वी पर भारी पड़े।

नडाल और जोकोविच पुरुष एकल वर्ग में मौजूदा समय के दिग्गज खिलाड़ी हैं। इन दोनों के नाम ओपन एरा में सर्वाधिक ग्रैंडस्लैम जीतने के रिकॉर्ड दर्ज हैं। नडाल और जोकोविच के बीच पिछली बार 2022 में रोलां गैरों के क्वार्टर फाइनल का मुकाबला खेला गया था जिसमें नडाल ने चार सेटों में जीत दर्ज की थी। जोकोविच और नडाल के बीच इस मैच से पहले जीत हार का रिकॉर्ड 30-29 का था और जोकोविच स्पेनिश खिलाड़ी के खिलाफ अपना रिकॉर्ड मजबूत करने में सफल रहे। जोकोविच ने पहले एक घंटे में ही नडाल पर बढ़त बना ली थी। पहले सेट में जोकोविच ने एकतरफा अंदाज में नडाल को पछाड़ा, जबकि नडाल ने दूसरे सेट में कुछ चुनौती पेश करने की कोशिश, लेकिन इसमें सफल नहीं हो सके। नडाल ने जोकोविच को 2008 के बीजिंग ओलिंपिक में हराया था और अब इस सर्बियाई खिलाड़ी ने नडाल से पुराना हिसाब चुकता कर लिया। 2008 में आखिरी बार ओलिंपिक पदक जीतने वाले जोकोविच का सामना अब तीसरे दौर में जर्मनी के डॉमिनिक कोएफर और इटली के मातेओ एर्नाल्डी के बीच होने वाले मैच के विजेता खिलाड़ी से होगा।

मोर्ने मोर्कल बन सकते हैं टीम इंडिया के गेंदबाजी कोच

नई दिल्ली, 29 जुलाई। गौतम गंभीर ने टीम इंडिया के हेड कोच का पद श्रीलंका दौरे से पहले ही ग्रहण कर लिया था। लेकिन टीम के गेंदबाजी कोच कौन होंगे इस पर अभी भी फैसला आना है। हालांकि, क्रिकबज की रिपोर्ट के अनुसार साउथ अफ्रीका के पूर्व तेज गेदंबाज मोर्ने मोर्कल को भारतीय टीम का गेंदबाजी कोच बनाया जा सकता है। मोर्कल बांग्लादेश के खिलाफ आगामी टेस्ट सीरीज के साथ भारतीय क्रिकेट टीम के गेंदबाजी कोच के रूप में जुड़ सकते हैं।

मौजूदा समय में भारतीय टीम के साथ साईराज बहुतुले श्रीलंका दौरे पर हैं और अंतरिम गेंदबाजी कोच के रूप में काम कर रहे हैं। वहीं रिपोर्ट के मुताबिक उनका मुख्य गेंदबाजी कोच बनना निश्चित नहीं लग रहा है। बहुतुले स्पिन गेंदबाज रहे हैं और उन्हें लेकर कुछ भी साफ नहीं है तो वहीं मोर्कल तेज गेंदबाज रहे हैं और अगर वो भारतीय टीम के बॉलिंग कोच बनते हैं तो फिर टीम इंडिया को एक स्पिन कोच की भी जरूरत पड़ सकती है। वैसे श्रीलंका में चल रही क्रिकेट सीरीज के दौरान भारतीय टीम मैनेजमेंट और चयनकर्ता टीम के मौजूदा कोचिंग टीम का मूल्यांकन करेंगे और फिर उन्हें लेकर फैसला किया जाएगा ऐसे में बहुतुले की भूमिका को लेकर बी निश्चितता दिख रही है। वैसे साईराज बहुतुले अगर अपने पद पर बने रहते हैं तो गौतम गंभीर की अगुवाई वाले भारतीय कोचिंग स्टाफ में 6 सदस्य होंगे।

क्लीन स्वीप के इरादे से उतरेगा भारत

पल्लेकेले, 29 जुलाई। भारतीय टीम मंगलवार को श्रीलंका के साथ होने वाले तीसरे टी-20 मुकाबला जीतकर सीरीज क्लीन स्वीप के इरादे से उतरेगी। वहीं श्रीलंका की नजर जीत के साथ श्रृंखला समाप्त करने पर होगी। सूर्यकुमार यादव की अगुवाई वाली भारतीय टीम अपने नये कोच गौतम गंभीर के साथ पहली बार श्रीलंका के दौरे तीन टी-20 मैचों की श्रृंखला के दो मुकाबलों में जीत दर्ज कर 2-0 की बढ़त बना चुकी है। अगर देखा जाये तो दोनों देशों के बीच खेले गए पिछले पांच टी-20 मैचों में श्रीलंका को केवल मैच में ही जीत मिली। श्रीलंका ने भारत को जनवरी 2023 में हराया था। इस श्रृंखला में भी भारत ने जीत दर्ज की थी। इस श्रृंखला में भारत ने गेंदबाजी और बल्लेबाजी दोनों में ही बेहतरीन प्रदर्शन किया है। पहले मैच में श्रीलंका जीत की तरफ बढ़ रहा था तभी भारतीय गेंदबाजों ने विकेटों की झड़ी लग गई। वही दूसरे मैच में पहले बल्लेबाजी करने उतरी श्रीलंका 200 के स्कोर तक पहुंचती दिखाई दे रही थी अंतिम पांच ओवर में उसने अपने सात विकेट गंवा दिए। मेजबान टीम अपने बल्लेबाजो पर भरोसा कर सकती है। पतुम निसंका और कुसल मेंडिस इस समय अच्छी फार्म में चल रहे हैं। निसंका ने पिछले दस टी-20 मैचों में 35 की औसत और 142.85 के स्ट्राइक रेट से 350 रन बनाए हैं जबकि मेंडिस ने पिछले 41 की औसत और 162.91 के स्ट्राइक रेट से 246 रन बनाए हैं।

वाणी एवं अनंत बने शतरंज चैम्पियन

जयपुर, 29 जुलाई। कावेरी पथ मानसरोवर स्थित महात्मा गांधी सरकारी स्कूल में आज पेरेंट्स एसोसिएशन राजस्थान द्वारा ओपन चेस टूर्नामेंट का आयोजन हुआ, इंटरनेशनल ऑर्बिटर भगवती प्रसाद शर्मा ने बताया कि इसमें 56 बच्चों ने भाग लिया, जिसमें महिला वर्ग में वाणी जैन प्रथम, जिया कंवर द्वितीय व पुरुष वर्ग में अनंत जैन प्रथम, आशुतोष सोनी द्वितीय, प्रिंस चौधरी तृतीय स्थान प्राप्त किया।

टूर्नामेंट डायरेक्टर जिनेश कुमार जैन ने बताया कि इस टूर्नामेंट के मुख्य अतिथि सुनील जैन गंगवाल व स्कूल प्रिंसिपल अनू चौधरी ने दीप प्रज्वलन कर, शतरंज की बिछात पर पहला कदम चलकर टूर्नामेंट का शुभारंभ किया ।

इस कार्यक्रम में समाजसेवी के के गुप्ता, श्री दिगंबर जैन समाज समिति वरुण पथ के अध्यक्ष एम. पी. जैन, भागचंद जैन, संजीव गोठवाल, हनुमान प्रसाद, विमल कुमार, गजेंद्र प्रसाद, अरविंद चांवला, पी ई टी डाक्टर मोहनलाल चौधरी व अन्य अध्यापक गण के साथ बहुत सी संख्या में अभिभावक गण भी उपस्थित रहे।

प्रिंसिपल अनू चौधरी ने बताया कि इस तरह का टूर्नामेंट स्कूल में पहली बार हुआ है, यह टूर्नामेंट खिलाड़ियों के अलावा अन्य बच्चों वह अभिभावकों के लिए भी काफी प्रेरणादायक रहेगा। इस सफल कार्यक्रम के लिए चेस पेरेंट्स एसोसिएशन, मुख्य अतिथि सुनील जैन गंगवाल एवं टूर्नामेंट डायरेक्टर जिनेश कुमार जैन का आभार प्रकट किया। मुख्य अतिथि सुनील जैन गंगवाल व प्रिंसिपल अनू चौधरी ने प्रतिभावान सफल खिलाड़ियों को स्मृति चिन्ह बैठकर व अन्य सभी खिलाड़ियों को मेडल पहनाकर प्रोत्साहित किया । चेस पेरेंट्स एसोसिएशन के सचिव ललित बरडिया ने बताया सितंबर 7 व 8 को एसएमएस इनडोर स्टेडियम में ओपन अंतरराष्ट्रीय रेटिंग शतरंज टूर्नामेंट का आयोजन होगा, जिसमें 300000 कैश एवं बहुत सी ट्रॉफीज प्राइज मनी के रूप में रखी जाएगी।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को विधानसभा में बजट पर बहस एवं चर्चा का जवाब पेश किया।

'देश में चार जातियां, युवा, महिला, किसान, और गरीब, हमारा बजट इन चारों के लिए है'

मुख्यमंत्री भजनलाल ने विधानसभा में बजट पर हुई बहस का जवाब देते हुए कहा

- मुख्यमंत्री ने पूर्व मुख्यमंत्री पर कटाक्ष किया और बोले, वो कहते थे मांगते-मांगते थक जाओगे पर मैं देते-देते नहीं थकूंगा, पर सिर्फ थोथी घोषणाएं कीं, एक भी घोषणा फलीभूत नहीं हुई।
- पेपर लीक पर मुख्यमंत्री ने व्यंग्यात्मक अंदाज में कांग्रेस व डोटासरा को घेरा और बोले, पेपरलीक इतने हुए, कितने करुं बयान, पास हुए ''परिवारजन क्या-क्या करू बयान।''
- उन्होंने ई.आर.सी.पी. पर कांग्रेस की आलोचना की व कहा, ई.आर.सी.पी. हमारी सरकार लाई है। एम.ओ.यू. हमने किया, आपने क्या किया बता दीजिए।

जयपुर, 29 जुलाई (का.सं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने विधानसभा में जवाब देते हुए कहा कि बजट को लेकर सदन में काफी कुछ कहा गया। यह बजट चहुंमुखी विकास करने वाला है। इन लोगों को तकलीफ इस बात से है कि विपक्ष के कुछ विधायकों ने भी खुले मन से तारीफ की। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था कि देश में चार जातियां हैं, युवा, महिला, किसान और गरीब। यह बजट इन चारों को आगे ले जाने वाला है।

मुख्यमंत्री शर्मा कहा कि राजस्थान की नहर परियोजना का नाम पहले राजस्थान नहर था, लेकिन 1984 में इस नहर का नाम बदलकर इंदिरा गांधी के नाम पर कर दिया। कांग्रेस के लोग योजनाओं के नाम बदलने की चर्चा कर रहे थे। अन्नपूर्णा रसोई का नाम इंदिरा गांधी के नाम पर कर दिया। अरे भाई, एक परिवार के नाम कितनी योजनाओं के नाम करोगे? मां अन्नपूर्णा के नाम से क्या दिक्कत थी। कांग्रेस में एक ही परिवार की भक्ति की परंपरा है। मुख्यमंत्री ने रॉबर्ट वाड्रा पर भी नाम लिए बिना हमला बोला। उन्होंने कहा, नेता प्रतिपक्ष ने अभी नेहरूजी का जिक्र किया, उन्होंने आगे भी सबके नाम लिए। वो नाम नहीं लिए होते तो दामादजी का नाम कैसे आता। दामादजी का राजस्थान से क्या रिश्ता है, सब जानते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा- इंदिरा गांधी का बचपन का नाम प्रियदर्शिनी था, महिलाओं की योजना का नाम कहां से ढूंढकर लाए। एक परिवार के प्रति ऐसा समर्पण कहीं देखने को नहीं मिलेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस के लोग संविधान की बात ज्यादा करते हैं, लेकिन आपातकाल के काले दिनों को भी याद कर लीजिए। इसीलिए 25 जून को संविधान हत्या दिवस घोषित किया गया है, ताकि आने वाली पीढ़ी को पता लगे कि किस तरह संविधान की हत्या की गई थी।

संविधान हत्या दिवस का जिक्र करने पर कांग्रेस विधायकों ने आपत्ति की और कुछ देर के लिए सदन में शोर-शराबा हुआ। मुख्यमंत्री ने कहा, पिछली सरकार ने केवल थोथी घोषणाएं कीं। कहते थे कि आप मांगते-मांगते थक जाओगे, मैं देते-देते नहीं थकूंगा। पशुधन स्वास्थ्य बीमा की घोषणा की, लेकिन एक भी पशु का बीमा नहीं किया। राजसमंद-जालोर जिले में मेडिकल कॉलेज बनाने की घोषणा की थी, वहां बने क्या? डे केयर सेंटर खोलने की घोषणा की थी, कितने बने?

मुख्यमंत्री ने कविता कहकर कांग्रेस और डोटासरा पर तंज कसा। उन्होंने कहा, ''पेपर लीक इतने हुए, कितने करूं बखान, पास हुए परिवारजन, क्या-क्या करूं बयान। खूब करी मेहमान नवाज़ी अपनी सरकार बचाने को, जनता का पैसा लुटवाया अपना राज बचाने को।अपने स्वार्थ की खातिर अपनों को ही दी गाली, केवल अपना ध्यान रखा, सिर्फ भरी रहे मेरी थाली।

पेपर लीक पर सीएम ने कहा, नेता प्रतिपक्ष ने भी कहा है कि अभी छोटी-छोटी मछलियां पकड़ी हैं, बड़े मगरमच्छ तो अभी बाहर हैं। वे बिल्कुल चिंता न करें, छोटी मछलियों के लिए इनका जाल छोटा पड़ गया था, लेकिन मैं बृज भूमि से आता हूं, मेरी सुदर्शन चक्रधारी बंसीवाले में अटूट आस्था है। आपको पता है, इनका जाल जरूर छोटा पड़ गया होगा, परंतु उसके सुदर्शन चक्र से कोई नहीं बच पाएगा। सुदर्शन चक्र वाला जब आएगा तो बड़े-बड़े मगरमच्छों का भी इलाज होगा। सीएम ने तंज कसते हुए कहा- श्रवण कुमार 44 साल से सदन में आ रहे हैं। वे सीनियर हैं, दर्द ज़ाहिर कर रहे थे। मैं उनके दर्द को समझता हूं। चवालिस सालों में एक भी कांग्रेस नेता ने पानी के लिए लेटर लिखा हो तो बता दीजिए। ई.आर.सी.पी. लाई तो हमारी सरकार लाई। हमारी वसुंधरा राजे सरकार के समय बनी। आपने ई.आर.सी.पी. के लिए क्या किया, यह बता दीजिए। ई.आर.सी.पी. पर एम.ओ.यू. हमने किया। कांग्रेस ने एम.ओ.यू. किया हो तो सदन में रख दीजिए। कांग्रेस वाले हमेशा भ्रम फैलाते हैं।

देवयानी से जल लेकर जा रहे कांवड़ियों की सांभर थाना पुलिस ने पिटाई की

कांवड़ियों के साथ पुलिस मारपीट के विरोध में सोमवार को हिन्दू संगठनों ने सांभर थाने के आगे जमा होकर विरोध प्रदर्शन किया।

- डीजे की धुन पर नाचते गाते लौट रहे कांवड़ियों को पुलिस ने रोका।
- विभिन्न हिंदू संगठनों ने सांभर थाना पुलिस के खिलाफ प्रदर्शन किया।
- मामले में एस.पी. ग्रामीण ने एक कांस्टेबल को सस्पेंड कर दिया।

सांभरझील, 29 जुलाई (निसं)। ग्राम सांवरदा से देवयानी तीर्थ स्थल का पवित्र जल लेकर डीजे की धुन पर नाचते-गाते लौट रहे कांवड़ियों को थाना अधिकारी के निर्देश पर सांभर थाने के पुलिसकर्मियों ने पहले उनका डीजे बंद करवाया व डीजे संचालक के साथ मारपीट की और म्यूज़िक सिस्टम जब्त कर कांवड़ियों को थाने ले गई। बताया जा रहा है कि सिविल ड्रेस में कांस्टेबल खेमचंद इतना अधिक गुस्से में भर गया कि थाना परिसर में ही उसने एक कांवड़िया को पकड़कर चांटे मारना शुरू कर दिया। बचाव में जब अन्य कांवड़ियों ने विरोध किया तो मौके पर मौजूद पुलिसकर्मी कांस्टेबल खेमचंद को थाना परिसर में अंदर ले गए।

इस घटना का वीडियो जैसे ही सोशल मीडिया पर वायरल हुआ तो सनातन प्रेमियों में जबरदस्त आक्रोश पैदा हो गया। घटना रविवार रात करीब 11:30 बजे की बताई जा रही है। पुलिस की इस बर्बरता को लेकर सांभर थाना परिसर में विश्व हिंदू परिषद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, भारतीय जनता पार्टी, देवयानी विकास समिति सहित जनप्रतिनिधियों के अलावा, बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ सोमवार सुबह करीब 9:15 बजे थाने पहुंच गई और दोषी पुलिस कर्मियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग को लेकर जोरदार प्रदर्शन किया। धरना प्रदर्शन कर रहे लोगों की मांग थी कि तत्काल प्रभाव से मारपीट करने वाले पुलिसकर्मी और थानाधिकारी को सस्पेंड किया जाए। सुबह से दोपहर तक कई बार वार्ताओं का दौर चला। मामला शांत होते नहीं देख पुलिस ने नजाकत को समझते हुए एस.पी. को भी सूचना दी और पूरे घटनाक्रम की जानकारी से भी अवगत कराया। पिटाई का विडियो एडिशनल एस.पी. और जयपुर ग्रामीण एस.पी. तक भी पहुंचा तो उन्होंने भी मामले को गंभीरता से लेते हुए दोषी पुलिसकर्मी के खिलाफ कार्रवाई किए जाने का संदेश भिजवाया।

धरना स्थल पर मौजूद सभी का कहना था कि जब तक कांस्टेबल को सस्पेंड करने का ऑर्डर उन्हें नहीं दिखाया जाएगा, वे यहां से हिलने वाले नहीं है। दोपहर में ही पुलिस अधीक्षक ग्रामीण शांतनु कुमार ने कांस्टेबल खेमचंद को सस्पेंड करने के आदेश जारी कर दिए और सस्पेंशन की कॉपी धरना स्थल पर मौजूद जनप्रतिनिधियों को भी वॉट्सएप पर उपलब्ध करवाई गई। इसके बाद लोगों ने थानाधिकारी को भी सस्पेंड करने का मुद्दा उठा लिया और यह मामला करीब शाम 5:00 बजे तक चलता रहा।

इसके बाद एडिशनल एस.पी. मौके पर पहुंचे और बात की तथा थानाधिकारी के खिलाफ एक्शन लेने और उचित कार्रवाई का भरोसा दिलाया, तब कहीं जाकर मामला शांत हुआ। इस मामले में पिटाई का शिकार हुए कांवड़िया ने लिखित में पुलिस को शिकायत दर्ज कराई है।

इस मामले में विधायक विद्याधर चौधरी ने कहा, मेरे विधानसभा क्षेत्र में कल रात सांभर में कांवड़ियों के साथ पुलिस प्रशासन के द्वारा मारपीट की घटना हुई है। उसकी मैं कठोर निंदा करता हूं।

पूर्व विधायक निर्मल कुमावत का कहना है कि घटना बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। हमारी सरकार ने मामले को संज्ञान में लिया है तथा पुलिसकर्मी को निलंबित करने के आदेश जारी किए गए हैं।

एडिशनल एस.पी. ब्रजमोहन मीणा का कहना है कि शिकायत पर चार सदस्यों की कमेटी गठित कर दी गई है तथा अनुसंधान के बाद दोषी पुलिस कर्मियों के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। पुलिस उपाधीक्षक सारिका खंडेलवाल का कहना है कि मामले की जांच कर सभी दोषी पुलिस कर्मियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

'हालांकि, भाजपा की...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उन्हें ए-1 तथा ए-2 कहा करेंगे।

राहुल ने कहा कि इस चक्रव्यूह के खिलाफ शिवजी की बारात है, जिसमें सबका स्वागत है तथा शिवजी की यह बारात (अर्थात इंडिया गठबंधन) इस चक्रव्यूह को तोड़ देगी।

इन दिनों, जब राहुल बोलते हैं तो वे रुकते तो है ही नहीं, जब वे विभिन्न मुद्दों पर मोदी सरकार को टक्कर देते हैं, उस समय वे काफी मजेदार बातें भी बोल देते हैं। उन्होंने कहा कि इस बजट ने मध्यम वर्ग के सीने तथा पीठ में छुरा भौंका है। उन्होंने कहा कि यही मध्यम वर्ग मोदी सरकार की प्रशंसा के गीत गाते थकता नहीं है।

राहुल ने संसद की कार्यवाही की कवरेज करने वाले मीडिया का भी पक्ष लिया, यद्यपि, उनके अनुसार, इनमें से अधिकांश राहुल गांधी को ज्यादा जगह कभी नहीं देते, बल्कि ज्यादातर तो उनकी उपेक्षा ही करते हैं।

उन्होंने लोकसभा अध्यक्ष से कहा कि वे उन्हें इस ''कांच पिंजरे'' से मुक्त कर दें। संसद की सिक्योरिटी द्वारा मीडिया से कहा गया है कि वे लोग मीडिया के लिये बनाये गये ग्लास कन्टेनर में ही रहें तथा नये भवन के प्रवेश द्वार पर सांसदों और मन्त्रियों की बाइट्स भी न लें, जिससे सांसद परेशान न हों।

जब राहुल ने लोकसभा के पटल पर यह मुद्दा उठाया, तो मीडिया ने सांसदों आदि का बहिष्कार कर दिया तथा इस मुद्दे ने एक बड़ा रूप ले लिया।

4 जून से पहले वाले समय को बड़े पैमाने पर अलविदा कहते हुये, अब मुख्य धारा वाले चैनलों ने राहुल को दिखाना शुरू कर दिया है तथा उनके भाषण सोशल मीडिया पर हर समय दिखाई और सुनाई दे रहे हैं।

आगामी दिन और भी ज्यादा दिलचस्प होंगे।

बारामूला में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सोपोर कस्बे के शेर कॉलोनी में एक कबाड़ विक्रेता की दुकान के अंदर हुआ। घटना के वक्त कुछ लोग ट्रक से कबाड़ उतार रहे थे। अधिकारियों का कहना है कि धमाके इतना जोरदार था कि दो लोगों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया, जबकि दो अन्य की इलाज के दौरान मौत हो गई।

अधिकारियों के अनुसार, मृतकों की शिनाख्त नजीर अहमद नादरू (40), आजिम अशरफ मीर (20), आदिल राशिद भट (23) और मोहम्मद अजहर (25) के रूप में हुई है। इस घटना में एक अन्य घायल भी हुआ है। वहीं, विस्फोट के कारण का अभी पता नहीं चल पाया है। फोरेंसिक विशेषज्ञों की एक टीम घटनास्थल पर पहुंच गई है। सेना और पुलिस की टीम भी मौके पर पहुंचकर छानबीन कर रही है। वहीं, इलाके में विस्फोट के बाद दहशत का माहौल है।

'ऑफ ड्यूटी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

है और वह किसी क्षतिपूर्ति राशि को प्राप्त करने का अधिकारी नहीं है। लोक अदालत के पीठासीन अधिकारी अनूप कुमार सक्सैना व दीपक चाचान ने यह आदेश श्याम सुन्दर रूण्डला के प्रार्थना पत्र को खारिज करते हुए दिया।

प्रार्थना पत्र में जे.वी.वी.एन.एल. व के-3 कंस्ट्रक्शन कंपनी सहित अन्य को पक्षकार बनाते हुए कहा कि वह कंस्ट्रक्शन कंपनी के अधीन काम करता है। इस दौरान वह बिजली लाइन का काम कर रहा था तो ड्यूटी कर्मचारी मुकेश ने लापरवाही से बिजली लाइन को चालू कर दिया, जिससे वह करंट से झुलस गया और उसका बांया हाथ कंधे से काटना पड़ा। इस कारण आई निशक्तता से वह बेरोजगार हो गया है। इसलिए उसे जे.वी.वी.एन.एल. सहित अन्य पक्षकारों से क्षतिपूर्ति दिलवाई जाए। जवाब में जे.वी.वी.एन.एल. ने कहा कि जिस समय यह हादसा हुआ, तब परिवादी की ड्यूटी नहीं थी और उसने कार्यक्षेत्र से बाहर जाकर काम किया है। ऐसे में विभाग किसी तरह की क्षतिपूर्ति करने के लिए जिम्मेदार नहीं है। उसने बिना शट डाउन लिए काम किया है, जो गलत है। अदालत ने विभाग व अन्य पक्षकारों की दलीलों से सहमत होकर प्रार्थना पत्र खारिज कर दिया।

गुरुद्वारों पर अब भगवा झण्डा नहीं लहराया जायेगा

सिखों की सर्वोच्च संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंध समिति ने यह फैसला जारी किया

- अब पवित्र निशान साहिब पर फहराया जाने वाला झण्डा बसंती रंग का होगा।

नई दिल्ली, 29 जुलाई। खालसा पंथ की शान और सम्मान का प्रतीक निशान साहिब का रंग अब केसरिया नहीं होगा। सिखों की सर्वोच्च संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने आदेश जारी किए हैं कि अब से इसका रंग बसंती होगा। यह फैसला शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अकाल तख्त साहिब में हुई पांच सिंह साहिबान की बैठक के बाद लिया है। एसजीपीसी की ओर से एक पत्र जारी कर इस बात की जानकारी दी गई है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कहा है कि केसरी निशान साहिब को लेकर संगत के बीच दुविधा थी। कुछ मामले अकाल तख्त साहिब के ध्यान में आए जिसके बाद इस पर चर्चा हुई। पांच सिंह साहिबानों की बैठक में इस मुद्दे पर चर्चा हुई कि निशान साहिब का रंग बेशक भगवा है, लेकिन गलती से यह हिंदू धर्म के प्रतीक भगवा रंग से मिलता-जुलता है। इस कारण कई बार संगत के लोग या अजनबी लोग इसमें अंतर नहीं कर पाते हैं और दोनों को एक ही समझ लेते हैं। इसी दुविधा को दूर करने के लिए यह फैसला लिया गया है। उन्होंने कहा कि क्योंकि सिख धर्म हिंदू धर्म से अलग है, इस कारण कभी-कभी कुछ लोग यह प्रचार करते हैं कि हिंदू और सिख एक ही धर्म हैं। इस तरह के भ्रम से बचने के लिए यह फैसला लिया गया है।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव गुरचरण सिंह ग्रेवाल ने कहा कि उनका फैसला किसी धर्म या भगवा रंग के खिलाफ नहीं है। उन्होंने कहा कि सर्कुलर को किसी धर्म से जोड़कर विवाद पैदा नहीं किया जाना चाहिए। यह फैसला कोई नया नहीं है। अनुपालन परिपत्र बिना किसी तय मानक के जारी किया गया है।

निशान साहिब सिखों के लिए पवित्र ध्वज होता है। यह हर गुरुद्वारे के बाहर फहराता रहता है। इसे वो अपनी धार्मिक रैलियों या धार्मिक-राजनीतिक रैलियों में भी इस्तेमाल करते हैं। अपने वाहनों में सबसे ऊपर लगाकर भी चलते हैं। ये पवित्र त्रिकोणीय ध्वज कॉटन या रेशम के कपड़े का बना होता। इसके सिरे पर एक रेशम की लटकन होती है। इसे हर गुरुद्वारे के बाहर एक ऊंचे ध्वजदंड पर फहराया जाता है। सिख परंपरा के अनुसार निशान साहिब को फहरा रहे डंड में ध्वजकलश (ध्वजदंड का शिखर) के रूप में एक दोधारी खंडा (तलवार) होता है और डंडे को पूरी तरह कपड़े से लपेटा जाता है। झंडे के बीच में एक खंडा चिह्न होता है।

'निर्देशों का ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

परीक्षा की प्रक्रिया में शिथिलता नहीं दिला सकता। ऐसे में याचिकाकर्ताओं को किसी भी तरह की राहत नहीं दी जा सकती। चीफ जस्टिस एम.एम. श्रीवास्तव व जस्टिस आशुतोष कुमार की खंडपीठ ने यह आदेश पायल व अन्य की याचिकाओं को खारिज करते हुए दिए।

याचिकाओं में कहा गया था कि उन्होंने आर.जे.एस. भर्ती परीक्षा में भाग लिया था। इस दौरान उन्होंने ओ.एम.आर. शीट में उत्तर देते समय गोलों को सही तरीके से नहीं भरा है।

कर चोरी के...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बताया कि आरोपी गौतम गर्ग ने करीब 7.48 करोड रुपए की कर चोरी की थी। जीएसटी एक्ट की धारा 70 के तहत दर्ज बयानों में आरोपी ने माना कि उसने अपने अंकल से मिलकर फर्जी फर्मों को सप्लाई दिखाकर कर चोरी की है। इसके अलावा, विभाग को उसके घर से चार लाख रुपए की नकदी भी मिली थी। इसके अलावा, उसके मोबाइल में सोशल मीडिया के बने ग्रुप में भी कर चोरी की बातें सामने आई हैं। इसके बावजूद भी निचली अदालत ने माना कि आरोपी ने सामान्य परिस्थितियों में बयान दर्ज नहीं कराए थे। वहीं, इस बात का भी कोई साक्ष्य नहीं है कि वह संबंधित कंपनियों का मैनेजर है तथा अन्य साक्ष्य भी ऐसे नहीं है कि उसे जेल में रखा जाए। इसके साथ ही, निचली अदालत ने गत 3 नवंबर को उसकी जमानत अर्जी को मंजूर कर उसे जेल से रिहा करने के आदेश दिए। केन्द्र सरकार की याचिका में मांग की गई थी कि उसे मिली जमानत को रद्द कर आरोपी को पुन: जेल भेजा जाए, जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने आरोपी को मिली जमानत रद्द कर उसे निचली अदालत में सरेंडर करने के आदेश दिए हैं।

कर्नाटक सरकार...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कर रही हैं। ''इसके बाद मुख्यमंत्री पार्टी आलाकमान से मुलाकात के लिए दिल्ली चले गये।

वित्त मंत्री की आलोचना करते हुये, उन्होंने कहा कि केन्द्र की नीतियाँ उद्योगों को राज्य से बाहर खदेड़ रही हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि केन्द्र सरकार की नीतियों के कारण, देश में एफ.डी.आई. 31 प्रतिशत कम हो गई है। मुख्यमंत्री ने सवाल किया कि कर्नाटक और महाराष्ट्र जैसे टैक्स की ज्यादा आय देने वले राज्यों को आखिर बजट में क्या मिला। उन्होंने कहा कि अभी हाल ही में हुई नीति आयोग की बैठक, जिसकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री ने की थी, का कई विपक्ष-शासित राज्यों ने जो बहिष्कार किया था, उसके लिए केन्द्र सरकार का रूख और तौर-तरीका ही पूरी तरह जिम्मेदार था।

कर्नाटक के मुख्यमंत्री ने कहा कि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को बोलने के लिये यथेष्ट समय नहीं दिया गया। उन्होंने अपने बिन्दु को मजबूत देते हुए कहा कि विपक्ष शासित राज्य केन्द्र सरकार के सौतेले जैसे व्यवहार से बहुत क्षुब्ध एवं निराश हैं।

कर्नाटक के मुख्यमंत्री द्वारा लगाये गये आरोपों को खारिज करते हुये, वित्त मंत्री ने कहा कि यू.पी.ए. सरकार के 10 वर्षों के दौरान, टैक्स के हस्तान्तरण के रूप में कर्नाटक को प्रतिवर्ष 8,179 करोड़ रूपए मिला करते थे, जबकि प्रधानमंत्री मोदी ने अकेले इस वर्ष में ही राज्य के 45,485 करोड़ रूपए दिये हैं।

उन्होंने राज्य सरकार द्वारा लगाये गये आरोपों के जवाब में कहा कि यू.पी.ए. शासन के 10 वर्षों में कर्नाटक को सहायता-अनुदान (ग्रान्ट-इन-एड) के रूप में 60,779 करोड़ रूपए अर्थात् 6,077.9 करोड़ प्रतिवर्ष मिले थे। लेकिन एन.डी.ए. शासन में गत वर्ष यह राशि 2,36,955 करोड़ रूपए थी।

झारखंड के मुख्यमंत्री...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

एस.टी. पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज कराए जाने का भी उल्लेख किया।

किन्तु उच्च न्यायालय ने कहा था, ''यद्यपि प्रवर्तन निदेशालय ने याचिकाकर्ता के आचरण को बहुत उभारने की कोशिश की है, और इसका कारण रहा याचिकाकर्ता द्वारा ई.डी. के अफसरों के खिलाफ दर्ज की गई एफ.आई.आर.। लेकिन इस केस का पूरा अवलोकन करने पर, ऐसी कोई सम्भावना प्रतीत नहीं होती कि याचिकाकर्ता द्वारा उसी किस्म का अपराध कर रहा है।''

उच्च न्यायालय ने कहा कि अदालत द्वारा रिकॉर्ड किये गये निष्कर्षों का परिणाम ''प्रिवेन्शन ऑफ मनीलॉन्डरिंग एक्ट, 2002 के धारा की शर्त को सन्तुष्ट करता है तथा यह कहता प्रतीत होता है कि ऐसा मानने का पर्याप्त कारण है कि याचिकाकर्ता उस अपराध का दोषी नहीं है, जिसका आरोप उस पर लगाया गया है।''

ई.डी. ने आरोप लगाया था कि उन्होंने अपने मुख्यमंत्री पद का दुरूपयोग करके, राज्य की राजधानी के बारगेन क्षेत्र 8.86 एकड़ जमीन ''गैर कानूनी रूप से'' ले ली।

एजेंसी ने दावा किया था कि जाँच के दौरान, सोरेन ने मीडिया सलाहकार अभिषेक प्रसाद ने यह स्वीकार किया था कि जे.एम.एम. नेता ने उन्हें निर्देश दिये थे कि सम्बन्धित भूखंड के स्वामित्व-विवरण को बदलने के लिये सरकारी रिकॉर्ड्स में हेर-फेर कर दिया जाये।

ई.डी. ने यह भी कहा कि जब जमीन के मूल स्वामी, राजकुमार पाहन ने उस समय शिकायत दर्ज करने की कोशिश की थी, जब उसकी जमीन पर अनाधिकृत कब्जा कर लिया गया था लेकिन शिकायत दर्ज नहीं हुई।

'देश में भय का माहौल है, पर, हम भाजपा के इस...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जाता है। इक्कीसवी सदी में एक नये ''चक्रव्यूह'' की रचना की गई है और वह भी कमल जैसा ही निर्मित किया गया है। प्रधानमंत्री उसके प्रतीक चिन्ह को अपने सीने पर टांगते हैं। उस समय जो व्यवहार अभिमन्यु के साथ किया गया था, वही व्यवहार भारत की जनता -युवाओं, किसानों, महिलाओं, छोटे व मध्यम व्यापारियों के साथ किया जा रहा है।''

उन्होंने आगे कहा कि ''आज भी ''चक्रव्यूह'' के केन्द्र में छ: लोग मौजूद हैं--- ये हैं नरेन्द्र मोदी, अमित शाह, मोहन भागवत, अजित डोवल, अंबानी व अडाणी।''

उन्होंने इसको विस्तार से बताते हुए कहा कि वो यह मानते हैं कि आधुनिक ''चक्रव्यूह'' के पीछे तीन ताकते हैं।

भारत जिस चक्रव्यूह में फंस चुका है ''उसके पीछे तीन ताकतें ये हैं।

1- पूंजी के एकाधिकार का विचार- सिर्फ दो लोगों को भारत की सम्पूर्ण सम्पदा का स्वामित्व मिलना चाहिए। इसलिए, चक्रव्यूह का एक तत्व वित्तीय शक्तियों के केन्द्रीकरण से निकलकर आ रहा है। दूसरा तत्व देश की संस्थाएं, एजेन्सियां, सी.बी.आई., ई.डी. आयकर हैं।

तीसरा तत्व है सरकार। गांधी ने कहा, ये तीनों तत्व ''चक्रव्यूह'' के केन्द्र में हैं और इन्होंने इस देश को बर्बाद कर दिया है।''

एम.एस.पी. के मुद्दे पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि यह लम्बे समय से चली आ रही किसानों की मांग है। इस पर लोकसभा में विपक्ष के नेता वादा किया कि एक ऐसा विधेयक लाया जाएगा जो किसानों को उनकी फसल का गारंटीड न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रदान करेगा।

''मैं देश के किसानों से एक बात कहना चाहता हूं कि जो (एन.डी.ए.) ने नहीं किया, वो हम किसानों के लिए करेंगे। हम इस सदन में वैधानिक गारंटी वाला एम.एस.पी. (बिल) उनके लिए पारित करेंगे।''

गांधी ने आगे बोलते हुए ''इंडिया गठबंधन'' के दलों सहित वादा किया कि वे इस सदन में पारित करने के लिए विधिक गारंटीवाला न्यूनतम समर्थन मूल्य (एम.एस.पी.) का (बिल) विधेयक लाएंगे। उन्होंने यह भी कहा कि जातिगत जनगणना कराने के लिए भी एक विधेयक इस सदन में पारित किया जाएगा, और इस कार्य को इंडिया गठबंधन पूरा करेगा।''

उन्होंने सरकार की इस बात को लेकर आलोचना की कि वह युवाओं को प्रभावित करने वाली महत्वपूर्ण चिन्ता की उपेक्षा कर रही है, विशेष रुप से बजट में पेपर लीक के मुद्दे पर।

उन्होंने उल्लेख किया कि ''पेपर लीक'' युवाओं को प्रभावित करने वाला सबसे बड़ा मुद्दा है परंतु वित्त मंत्री ने अपने बजट में इसका उल्लेख नहीं किया।''

गांधी ने केन्द्रीय बजट 2024 को ''मध्यम वर्ग के लोगों की पीठ में छुरा भोंकने वाला बताया'' और जोर देकर कहा कि इस बजट का एकमात्र उद्देश्य ''बड़े व्यवसायियों को मजबूत करना है।''

आगे यह भी कहा कि ''इस बजट में टैक्स आतंक के मुद्दे पर कुछ नहीं कहा गया है, जिसकी मार छोटे कारोबारियों पर बहुत पड़ी है। इसका एकमात्र उद्देश्य बड़े कारोबारियों के एकाधिकार को मजबूती प्रदान करना है। सरकार ने इस बजट के माध्यम से मध्य वर्ग की पीठ में छुरा भोंका है।''

अध्यक्ष ओम बिड़ला ने चर्चा के दौरान उन लोगों के नामों का उल्लेख किए जाने पर आपत्ति प्रकट की, जो उस समय सदन में उपस्थित नहीं थे इस पर गांधी ने जवाब दिया, ठीक है, वे उन लोगों का नाम नहीं बोलेंगे जो सदन में उपस्थित नहीं है और उन्होंने अन्य दो लोगों को 'ए-1' व 'ए-2' के रुप में सम्बोधित किया।

राहुल ने कहा कि यह लड़ाई चक्रव्यूह की रचना करने वालों और जो लोग ''शिव की बारात'' में भरोसा करते हैं उनके बीच है और आगे कहा कि इस ''बारात'' का हिस्सा हर वह व्यक्ति है जो बहु-आस्था एवं विविध पृष्ठभूमि में विश्वास करता है।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा राष्ट्रदूत प्रेस, जी1/63 इंडस्ट्रीयल एरिया फेस प्रथम, जालौर, (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2006/17286 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908